संत नामदेव मुखवाणी
श्री नामदेव जी चालीसा
श्री नामदेव जी की आरती

लेखक : हेमंत वर्मा, नवी मुंबई.

प्रकाशक: प्रवीन वर्मा,
संत नामदेव जागृति मिशन, गुरुग्राम, हरियाणा

प्रकाशक: प्रवीन वर्मा,
संत नामदेव जागृति मिशन,
465/4, अर्बन स्टेट, गुरुग्राम, हरियाणा

मुद्रक :

प्रथम संस्करण: 2024.

सर्वाधिकार लेखकाधीन

मूल्य : रुपये 100/-

प्रस्तावना

'संत नामदेव मुखवाणी' हेमंत वर्मा ने सिक्खों के पवित्र श्री गुरुग्रंथ साहिब धर्मग्रंथ में संकलित संत नामदेव जी महाराज के हिंदी अभंग पदों का भावार्थ कथन करने हेतु अपने ग्रंथ का निर्माण किया है. यह इनका एक सफल प्रयत्न है, मैं इसका हार्दिक स्वागत करता हूँ. 'मुखवाणी' का सार्थ संपादन अनेक लेखकों ने किया हैं. उन ग्रंथों में नामदेव जी की मराठी-हिंदी संमिश्र भाषा पर बल देते हुए प्रत्येक पंक्ति का अर्थ बताया गया है. लेकिन यहाँ हेमंत वर्मा की अपनी अलग शैली है, इन्होंने शब्दों की चर्चा न करते हुए मात्र भावार्थ प्रकट किया है. श्री गुरुग्रंथ साहिब में अनेक संत एवं भक्त जनों की वाणी है, इनमें सबसे प्राचीन वाणी नामदेव जी महाराज की है, जिसे 'मुखवाणी' का विशेष नाम दिया गया है. यह वाणी श्री गुरुग्रंथ साहिब में अठारह जगहों पर बिखरी हुई मिलती है. ऐसे और भी अनेक तथ्य विचारणीय हैं.

एक अभंग में संत नामदेव जी महाराज कहते हैं-

जपहीन, तपहीन, कुलहीन, कुरमहीन, नाम के सुआमी नेऊ तरे ।।

इसका लेखक ने भाव स्पष्ट करते हुए लिखा है- मेरे स्वामी ने कितने ही ऐसे लोगों को भवसागर से पार किया है जिनकी न जाति बड़ी थी, न ही उनके कुल का कुछ पता था, न ही उन्होंने कोई जप किया था, ना ही कोई तप किया था और ना ही उनके कर्म बहुत अच्छे थे. इन लोगों ने तो बस कुछ समय के लिए ही ईश्वर का स्मरण किया था. तब भला मेरे स्वामी उस जीव को कैसे भवसागर के पार नहीं लगायेंगे, जो हर समय उसका ध्यान करता है.

ग्यारहवाँ पद सहज समझना जरा कठिन है. इसमें गुरुकृपानुभूति का वर्णन करते हुए संत नामदेव जी ने अजीब शब्द प्रयोग किए हैं-

अण मडिआ मंदलु बाजै, बिनु सावण धनहरू गाजै,
बादल बिनु बरखा होई, जउ ततु बिचारै कोई,
मोकउ मिलिओ रामु सनेही, जिह मिलिए देह सुदेही,
जल भीतरि कुंभ समानिआ, सभ रामु एकु करि जानिआ...

इसका भावार्थ करते हुए वर्मा जी लिखते हैं- इस अभंग में नामदेवजी गुरुकुपासे होनेवाली प्रभु अनुभूति का वर्णन करते हुए कहते हैं कि, जब कभी भी प्रभुकी चर्चा होती है या उसके बारे में बात होती है तो सच्चे भक्त का मन प्रफुल्लित हो उठता है. बिन मंढा ढोल भी जोर जोर से बजने लगता है, सावन का मौसम ना होने के बावजूद आसमान में बादल गरजने लगते हैं और बिन बादलों के ही बरसात होने लगती है यानि कि प्रभु के नाम स्मरण करते ही आसपास का वातावरण आनंदमयी हो उठता है. और इस तरह की अलौकिक अनुभूति होती है कि एक सच्चे गुरु के सान्निध्य से, नामदेव जी कहते हैं कि यह उनका सौभाग्य था कि उन्हें उस परमपिता का स्नेह मिला और उनका अस्तित्व और उनका व्यक्तित्व भी शुद्ध हो गया. निर्मल हो गया. परमात्मा की कृपा से ही उन्हें पारस जैसे गुरु का संग मिला, जिसने उनकी काया को अपने ज्ञान से छूकर सोना बना दिया.

बीसवाँ अभंग है-

मैं अंधुले की टेक तेरा नामु खंदकारा,
मैं गरीब मैं मसकीन तेरा नामु है अधारा,

तूं दाना तूं बीनां मैं बीचारू किआ करी,
नामे चे सुआमी बखसंद तू हरि,

यहाँ खंदकारा, मसकीन, बखसंद जैसे शब्दों का अर्थ ठीक रीति से समझाते हुए वर्मा जी पद का भाव स्पष्ट करते हैं- जिस प्रकार एक अंधे को चलने के लिए लाठी का सहारा होता है, उसी तरह मुझ अज्ञानी को इस भवसागर से पार उतरने के लिए एक तेरे ही नाम

का सहारा है. मेरे मालिक, तू समुद्र से भी विशाल है और तेरे भंडार रहमतों और नेमतोंसे भरे पड़े हैं.

तू सब पर करम करता है, सबको देता है. जीव को कभी भी उस परमात्मा को भूलना नहीं चाहिए. वह सबका है और सब पर अपनी दया बरसाने वाला है.

इस 'मुखवाणी' ग्रन्थ में एक साक्षात्कार संपन्न ज्ञानी भक्त पुरुष के दर्शन हम करते हैं. उसमें आए काव्यमय दृष्टान्त श्री गुरुग्रंथ साहिब के काव्य वैभव को अधिक समर्थ और समृद्ध करते हैं. संत नामदेव जी की उपलब्ध हिंदी पदावली का सार सर्वस्व भी हम इस मुखवाणी में अनुभव कर सकते हैं. राजस्थान, पंजाब एवम् वायव्य भारतीय जनसमाज को पाँच शतकों से इस वाणी के द्वारा भक्ति पंथ की महती का एहसास होता रहा है. मुझे यकीन है कि मुखवाणी को सही तरीके से सुस्पष्ट करने वाली इस कृति का संत श्री नामदेव जी के भक्तों के मध्य स्वागत होगा. हेमंत वर्मा इस कृति के लिए बधाई के पात्र हैं.

वर्मा जी संत नामदेव जी महाराज के जीवन पर एक डाक्यूमेंट्री फिल्म भी बना रहे हैं. मुझे पूरा विश्वास है कि अपने उस कार्य में भी इन्हें पूरी सफलता प्राप्त होगी.

डॉ. अशोक कामत
गुरुकुल प्रतिष्ठान, पुणे.

भूमिका

मध्यकालीन भारत में संत नामदेव जी महाराज ही एक ऐसे संत हुए हैं, जिन्होंने दक्षिण भारतीय दार्शनिक संत शंकराचार्य एवं रामानुज जैसे सुधारवादी संतों द्वारा आरम्भ किये गए भक्ति आन्दोलन को आगे बढ़ाया और समाज के उत्थान के लिए अनेक कार्य किये. इन्होंने एक ओर जहाँ निर्गुण ईश्वर के प्रति असीम भक्ति, आपसी भाई चारा और सभी धर्मों की समानता पर जोर दिया, वहीँ दूसरी तरफ जातिय भेदभाव व धार्मिक अनुष्ठानों और कर्मकांडों की भर्त्सना भी की. कुछ विद्वान तो श्री नामदेव जी महाराज को ही भक्ति साहित्य का जनक मानते हैं.

संत नामदेव जी महाराज के जीवन से जुड़ी इस तरह की बातों का पता मुझे उस समय लगा जब मैंने संत नामदेव जी महाराज के जीवन पर वृत चित्र यानि कि डाक्यूमेंट्री फिल्म बनाने का इरादा किया. फिल्म की स्क्रिप्ट लिखने के लिए मुझे संत नामदेव जी पर विभिन्न लेखकों द्वारा लिखे साहित्य को पढ़ने का अवसर मिला, पूना के डॉक्टर अशोक कामत, डॉक्टर सदानंद मोरे एवं पंढरपुर के प्रोफेसर पी.डी. निकते जैसे विद्वानों से मेरा संपर्क भी हुआ, जिन्होंने हमारे संत शिरोमणि नामदेव जी पर काफी शोध किया है और इनके जीवन और इनकी रचनाओं पर ग्रन्थ भी लिखे हैं. अब क्यूंकि वृत चित्र अपने आप में रसविहीन विषय है, लिहाज़ा इसमें रोचकता लाने के लिए मैंने संत नामदेव जी के अभंगों को संगीतमय प्रस्तुति के साथ इस फिल्म में शामिल करने का निश्चय किया. आप लोगों की जानकारी के लिए बता दूं कि वैसे तो नामदेव जी, इनके परिजनों और इनके साथियों द्वारा सौ करोड़ अभंग लिखे जाने का वर्णन ग्रंथों में मिलता है. लेकिन वर्तमान समय में इनके रचे हुए करीब अढ़ाई हजार मराठी अभंग और करीब साढ़े तीन सौ हिंदी के अभंग ही श्रोताओं और पाठको के लिए उपलब्ध हैं. इनके रचित अभंगों की अध्यात्मिक महत्वता का अंदाज़ा आप इसी बात से लगा

सकते हैं कि इनके रचे 61 अभंगों को सिक्खों के धर्म ग्रन्थ 'श्री गुरुग्रंथ साहिब' में शामिल किया गया है.

साहित्यकारों का मानना है कि इन 61अभंगों में इनके रचे सभी अभंगों का सार समाया हुआ है. शायद यही वजह थी कि मैंने उन 61 अभंगों में से अपनी स्क्रिप्ट के अनुसार कुछ अभंगों का चुनाव करके उन्हें उसी राग में रिकॉर्ड करने का मन बनाया जिसमें संत शिरोमणि जी ने उन अभंगों कि रचना की थी. यह ख्याल मन में आते ही मैंने 'श्री गुरुग्रंथ साहिब' में समाहित उन 61 अभंगों का अध्यन आरम्भ किया. मैं इन अभंगों को लेकर अलग अलग लेखकों द्वारा लिखी हुई कई पुस्तकों पढ़ी. मैंने 'श्री गुरुग्रंथ साहिब' के अनुसार इन सभी अभंगों की बारीक़ बारीक़ त्रुटियों को दूर किया और उसे एक शुद्ध रूप देने का प्रयास किया. इतना सब करते करते मुझे अहसास हुआ कि पाठकों और श्रोताओं के लिए इन अभंगों को समझना मुश्किल होगा, लिहाजा मैंने इस 61 अभंगों का भावार्थ लिखने का मन बनाया. संत श्री नामदेव जी की कृपा और अपने पूर्वजों के आशीर्वाद से मैं इस कार्य को करने में सफल हो पाया. अब ये 'मुखवाणी' आपके हाथ में है.

अब मेरा इरादा ये है कि आजकल के ऑडियो विजुअल्स के ज़माने में इन सभी अभंगों को संत नामदेव जी द्वारा सुझाये रागों में रिकॉर्ड करके उनका भावार्थ बताते हुए दर्शकों के सामने प्रस्तुत किया जाये ताकि दर्शकों को अभंगों का मर्म पूरी तरह से समझ आ सके.

जब अपनी इस मंशा के बारे में मैंने कुछ विद्वानों से चर्चा की तो उन्होंने इन अभंगों के आडियो - विजुअल्स के साथ साथ इन्हें एक पुस्तक के रूप में भी संत नामदेव जी महाराज के भक्तों के समक्ष लाने का सुझाव दिया. वैसे भी आजकल हमारे समाज में जातिय भेदभाव और धार्मिक अन्धता के कारण जो अशांति फ़ैली हुई है उसे संत नामदेव जी जैसे संतों की वाणी द्वारा जनमानस को जागृत करके उसे दूर करने की कोशिश की जा सकती है.

क्यूंकि हमारे किसी भी संत ने अपनी वाणी द्वारा हिंसा, अनाचार और धर्मान्धता का प्रचार नहीं किया है. मुझे पूरा विश्वास है कि इस पुस्तक को पढ़ने के बाद कुछ लोगों कि मानसिकता में तो अवश्य ही बदलाव आएगा.

हेमंत वर्मा

नई मुंबई

1. राग - गौड़ी

देवा पाहन तारीअले, राम कहत जन कस न तरे,
तारीले गनिका बिनु रूप कुबिजा, बिआधि अजामलु तारिअले,
चरण बधिक जन तेऊ मुकति भए, हउ बलि बलि जिन राम कहे,
दासी सुत जनु बिदरु सुदामा, उग्रसेन कउ राज दीए,
जपहीन तपहीन कुलहीन करमहीन, नामे के सुआमी तेऊ तरे.....

अपने इस अभंग में नामदेव जी पौराणिक कथाओं का उदाहरण देकर ये समझाना चाहते हैं कि जीव की दशा भले ही कितनी भी खराब क्यूँ ना हो, राम के नाम का सुमिरण करने से उसकी परिस्थिति में सुधार हो सकता है, उसकी नैया पार लग सकती है.

नामदेव जी परमपिता परमात्मा से कहते हैं कि जब लंका जाने के लिए समुद्र पर बांध बांधते समय आपने राम का नाम लिखे पत्थरों तक को तार दिया था (उन्हें समुद्र के जल में डूबने नहीं दिया था), तब भला राम के नाम का जाप करने वाला मनुष्य, आपका भक्त कैसे इस भव सागर से पार नहीं होगा. आपका नाम जपने वाले का उद्धार तो आपको करना ही होगा. आपने अपने शरीर का सौदा करने वाली एक वैश्या का भी तो उद्धार किया था, क्योंकि वह अपने तोते को राम का नाम बोलना सिखाती थी. कंस की कुबड़ी दासी कुब्जा का कूबड़ दूर करके आपने उसे रूपवान स्त्री बना दिया था, क्यूंकि उसने आपके माथे पर चन्दन लगाया था. जीवन भर पाप की गठरी ढोने वाले अजामल को भी आपने इस भव सागर से पार उतारा था. यही नहीं आपने तो उस शिकारी को भी माफ़ करके जीवन मरण के झंझट से मुक्त कर दिया था, जिसने आपके (कृष्ण) पाँव में तीर मारा था. आपने तो अपने पर घात करने वाले पर भी दया कर दी थी. आपने हर उस जीव का भला किया है जो आपके संपर्क में आया. हे प्रभु दासी पुत्र विदुर आपकी कृपा से ही इतना लोकप्रिय हुआ था. अपने गरीब सखा सुदामा का दारिद्रय दूर करने में भी आपका ही हाथ था.

आपकी वजह से राजा अग्रसेन को अपना राजपाट वापस मिला था. नामदेव जी कहते हैं कि मेरे स्वामी ने कितने ही ऐसे लोगों को भवसागर से पार किया है जिनकी न जाति बड़ी थी और न ही उनके कुल का कुछ पता था, न ही उन्होंने कोई जप किया था, ना ही कोई तप किया था और ना ही उनके कर्म बहुत अच्छे थे. इन लोगों ने तो बस कुछ समय के लिए ही ईश्वर का स्मरण किया था. तब भला मेरा स्वामी उस जीव को कैसे भवसागर के पार नहीं लगायेंगे, जो हर समय उसका ध्यान करता है.

2. राग - आसावरी

एक अनेक बिआपक पूरक, जत देखउ तत सोई,
माइआ चित्र-बचित्र बिमोहित, बिरला बूझै कोई,
सभु गोबिन्दु है सभु गोबिन्दु है, गोबिन्द बिनु नही कोई,
सूतु एकु मणि सत सहंस, जैसे ओति पोति प्रभु सोई,
जलतरंग अरु फेन बुदबुदा, जल ते भिन्न न कोई,
इहू परपंचु पारब्रह्म की लीला, बिचरत आन न होई,
मिथिआ भरमु अरु सुपन, मनोरथ सति पदारथ जानिआ,
सुक्रित मनसा गुरु उपदेसी, जागत ही मनु मानिआ,
कहत नामदेउ हरि की रचना, देखहु रिदै बीचारी,
घट घट अंतरि सरब निरंतरी, केवल एक मुरारी.....

हम सब जानते हीं कि परमात्मा एक ही है, लेकिन एक होने के बावजूद ये सृष्टि के हर अंश में मौजूद है. हर प्राणी में, हर वनस्पति में, थल में, नभ में हर जगह वह सर्वव्यापी है. जिस तरफ भी आप अपनी नज़र घुमाएंगे आपको किसी न किसी रूप में परमात्मा अवश्य नज़र आएगा. सारे ब्रह्माण्ड को हैरान कर देने वाली प्रभु की माया को समझ पाना आसान नहीं है. समुद्र की तलहटी में रहने वाली सीपि के अन्दर बेशकीमती मोती कहां से आया, पेड़ पर लगे नारियल में पानी कहां से आया. इस तरह की अनेक बातें आज तक कोई नहीं समझ पाया. जगत में इस तरह के कारनामे करने वाला गोविन्द ही है, केवल गोविन्द. इस गोविन्द की मर्ज़ी के बिना संसार में कुछ नहीं हो सकता. जिस तरह से एक धागे में हजारों मणि या मोती पिरोकर खूबसूरत माला बनाई जाती है उसी तरह ईश्वर ने इस समस्त संसार के जीवों को एक सूत्र में पिरो रखा है और अपनी इस सुंदर माला का वह स्वयम ही ध्यान रखता है. जिस प्रकार पानी की तरंगें, पानी के बुलबुले और पानी से उत्पन्न होने वाले झाग को पानी से अलग नहीं किया जा सकता उसी तरह इस सृष्टि को परमात्मा से अलग नहीं किया जा सकता.

जिस तरह जल के कारण ही तरंगें, बुलबुले और झाग का अस्तित्व पानी से जुदा हुआ है, उसी तरह सृष्टि के प्रत्येक तत्व का अस्तित्व परमात्मा के कारण ही है. अगर हम परमात्मा की लीला को समझ जाएंगे तो हमें संसार की बाकी वस्तुएं मिथ्या और भ्रम नज़र आने लग जाएँगी. सब कुछ हमें सपने जैसा सुखद लगने लगेगा. नामदेव जी महाराज कहते हैं कि हे भक्तगण अपने मन में ये बात अच्छी तरह से बिठा लो कि ये संसार प्रभु की ही रचना है. इस संसार में जो भी होता है, प्रभु की मंशा से होता है. उनकी मर्जी के बिना तो एक पत्ता भी नहीं हिल सकता. हर प्रानी के ह्रदय में परमात्मा का वास है. प्राणी की एक एक सांस में परमात्मा की मर्जी है. इसलिए हमें हमेशा उस परमपिता का ध्यान करते रहना चाहिए, उसे भूलना नहीं चाहिए.

3. राग - आसावरी

आनीले कुंभ भराइले ऊदक, ठाकुर कउ इसनानु करउ,
बइआलीस लख जी जलमहि होते, बीठलु भैला काइ करउ,
जत जाउ तत बीठलु भैला, महा आनंद करे सद केला,
आनीले फूल परोईले माला, ठाकुर की हउ पूज करउ,
पहिले बासु लई है भवरह, बीठलु भैला काइ करउ,
आनीले दूधु रीधाईले खीरं, ठाकुर कउ नैवदु करउ,
पहले दूधु बिटारिओ बछरै, बीठलु भैला काइ करउ,
ईभै बीठलु ऊभै बीठलु, बीठल बिनु संसारु नहीं,
थान थनंतरि नामा प्रणवै, पूरि रहिओ तूं सरब मही.....

नामदेव जी के इस अभंग का शाब्दिक अर्थ तो बड़ा ही साधारण है, लेकिन आध्यत्मिक तौर पर देखें तो इसमें बड़ा गूढ़ अर्थ छुपा हुआ है, सब जीवों में परमात्मा का वास है. नामदेव जी कहते हैं कि मेरे मन में अपने ठाकुर जी को स्नान करवाने का ख्याल आया तो मैंने एक शुद्ध घड़ा लिया और नदी पर जाकर उसे शुद्ध जल से भर लिया. लेकिन मैं अपने भगवान को इस जल से स्नान करवाऊं कैसे, इस जल में मौजूद 42 लाख सूक्ष्म और अति सूक्ष्म जीव पहले ही इस जल से स्नान कर चुके हैं, तब भला ये जल मेरे प्रभु के स्नान के लायक कहां रहा. लेकिन सब जीवों में तो परमात्मा का वास है, सो उन जीवों के रूप में मेरा विठ्ठल तो स्नान कर ही चुका, अब भला उसे स्नान की क्या आवश्यकता है. हर तरफ विठ्ठल ही विठ्ठल है, अपने हर रूप में वह अलग अलग लीलाएं करता रहता है और अपनी लीलाओं से सबको आनंदित करता रहता है.

नामदेव जी कहते हैं कि एक बार मेरे मन में आया कि मैं अपने इष्टदेव की पूजा के लिए सुंदर और सुगन्धित फूलों की एक माला बनाऊं, लेकिन फिर ख्याल आया कि जिन फूलों की मैं माला बनाऊंगा, उन सभी का रस और सुगंध तो पहले ही भंवरा पी चूका होगा, सो भला मैं अपने परमात्मा को किसी के झूठे फूलों की माला कैसे अर्पण कर सकता हूँ. और वैसे भी भंवरा भी तो ईश्वर का ही रूप है, सो फूल तो अपने आप ही मेरे इश्वर को अर्पण हो ही गए. नामदेव जी कहते हैं कि एक बार उनकी इच्छा हुई कि वो गाय के दूध की खीर बनाकर विठ्ठल को अर्पण करें. लेकिन फिर उन्होंने सोचा कि उनके गाय का दूध निकालने से पहले तो गाय का बछड़ा उसका दूध पी रहा था, सो गाय का दूध तो झूठा हो गया, अब बछड़े के झूठे दूध की खीर भला कैसे भगवान को खिलाई जा सकती है. लेकिन बछड़ा भी तो उस परमात्मा का ही रूप है, दूध का प्रसाद तो उसने अपने आप ही ग्रहण कर लिया, लिहाजा अब विठ्ठल को खीर की क्या ज़रूरत है. विठ्ठल तो किसी न किसी रूप में हर जगह उपस्थित है. लिहाजा इंसान को मंदिर में जाकर पूजा करने या प्रसाद चढ़ाने की कोई आवश्यकता नहीं है. अगर इंसान अपने आस-पास के लोगों को, जीव जंतुओं और पेड़ पोधों को प्रसन्न रखे उनका ख्याल रखे तो वह भी ईश्वर की पूजा ही मानी जाएगी.

4. राग - आसा

मनु मेरो गजु जिहबा मेरी काती, मपि मपि काटउ जम की फांसी,
कहा करउ जाती कहा करउ पाती, राम को नामु जपउ दिन राती,
रांगनि रांगउ सीवनि सीवउ, राम नाम बिनु धरीअ न जीवउ,
भगति करउ हरि के गुन गावउ, आठ पहर अपना खसमु धिआवउ,
सूइने की सुई रूपे का धागा, नामे का चितु हरि सउ लागा...

लोगों का ऐसा मानना है कि अपने काम-काज और घर गृहस्थी के चक्कर में उन्हें भगवान को याद करने का समय ही नहीं मिलता. इसी बात का जवाब देते नामदेव जी ने इस अभंग के माध्यम से जनमानस को समझाने की कोशिश की है कि ईश्वर को याद करने के लिए विशेष अवसर या विशेष समय की आवश्यकता नहीं होती. नामदेव जी कहते हैं कि मेरे कपड़ा मापने के गज से कपड़ा मापते हुए मैं अपने मन के गज से अपने कर्मों को भी साथ साथ मापता रहता हूँ और अपनी कैंची से कपड़ा काटते समय अपनी जीभ को राम सुमिरण करते हुए कैंची की तरह चला कर अपने कर्मों की फांसी को काटता रहता हूँ. इस तरह हर समय ईश्वर को स्मरण करते रहने से जाति-पाती के झंझटों से मैं दूर रहता हूँ. क्यूंकि हर समय राम भजन करने से इंसान का मन किसी अन्य बुराई की तरफ जाता ही नहीं है. मैं अपना कपड़ा रंगने का काम करते हुए भी ईश्वर को याद करके उसके रंग में रंग जाता हूँ. कपड़ों का रंग तो वक़्त के साथ साथ फीका पड़ जाता है, लेकिन एक बार प्रभु का रंग आप पर चढ़ जाता है तो समय के साथ फीका पड़ने की बजाय वह और गहरा होता जाता है. सिलाई का काम करने के साथ साथ मैं राम के नाम को भी साथ साथ सीलता रहता हूँ. राम के नाम के बिना तो मेरा एक पल भी काटना मुश्किल हो जाता है. हर समय मैं अपने ईश्वर के ध्यान में रहता हूँ. नामदेव जी कहते हैं कि प्रभु की कृपा से उन्हें अपनी लोहे की सुई सोने की लगती है और सूती धागा चांदी का, जिनसे वह हरि नाम की अपनी चादर को सीलते रहते हैं. उनका तो चित्त ही राम में लग गया है. उसके सिवा उन्हें कभी कुछ सूझता ही नहीं है.

अपने काम में भी उन्हें हरि का नाम ही याद आता है. लिहाजा जीव का ये कहना कि अपनी रोजी रोटी के चक्कर में वह ईश्वर का नाम लेना ही भूल गया, मात्र उसका एक बहाना है. अगर वह चाहे तो अपने प्रभु को कभी भी याद कर सकता है.

5. राग - आसा

सापु कुंच छोडै बिखु नही छाडै, उदक माहि जैसे बगु धिआनु मांडै,
काहे कउ कीजै धिआनु जपना, जब ते सुधु नाही मनु अपना,
सिंघच भोजनु जो नरु जानै, ऐसे ही ठगदेउ बखानै,
नामे के सुआमी लाहि ले झगरा, राम रसाइन पीउ रे दगरा.....

इस अभंग के द्वारा नामदेव जी ऐसे लोगों को प्रभु का नाम सुमिरण करके सही मार्ग पर चलने को कहते हैं जो ढोंगी होते हैं. करते कुछ हैं और दिखाते कुछ और है. जैसे एक सांप त्याग करने के नाम पर अपनी केंचुली का तो शरीर से अलग कर देता है, लेकिन अपने अन्दर के विष का वमन नहीं करता. जैसे एक बगुला पानी में एक पाँव पर खड़ा होकर ध्यान करने का नाटक करता है और जैसे ही उसकी नज़र मछली पर पड़ता है, वह उसे झपटकर उसका शिकार कर लेता है. यानि अपने शिकार को फांसने के लिए वह ध्यान करने का ढोंग करता है. उसी प्रकार कुछ लोग देखने के लिए तो ईश्वर के ध्यान में बैठे नज़र आते हैं, लेकिन उनका मन कहीं और ही विचरण करता है. ऐसे लोगों को अपना मन पूर्णतः शुद्ध करके मन को एकाग्र करके परमात्मा का ध्यान करना चाहिए, तभी ईश्वर तक उनकी बात पहुंचेगी. जो लोग गलत काम करके अपनी आजीविका चलाते हैं और लोक दिखावे के लिए राम का नाम जपते हैं, उन्हें ये सब त्याग कर सुकर्म करते हुए सच्चे मन से ईश्वर का ध्यान करना चाहिए. नामदेव जी कहते हैं कि ठग और बेईमान आदमी अगर अपना बुरे का रास्ता छोड़कर भलाई के रास्ते पर चलना चाहता है तो सच्चे मन से प्रभु के नाम का सुमिरण ही उसे बुराईयों से मुक्त कर सकता है. मात्र राम का नाम ही उसे सभी झगड़ें झंझटों से बाहर निकाल सकता है.

6. राग - आसा

पारब्रह्ममु जि चीनसी आसा ते न भावसी,
रामा भगतह चेतीअले अचिंत मनु राखसी,
कैसे मन तरहिगा रे संसारु-सागरु बिखै को बना,
झूठी माइआ देखि कै भूला रे मना,
छीपे के घरि जनमु दैला गुर उपदेसु भैला,
संतह कै परसादि नामा हरि भेटुला.....

अपने इस अभंग के माध्यम से नामदेव जी राम नाम की महिमा का गुणगान करते हुए बताना चाहते हैं कि राम का नाम लेने वाला जीव सभी सांसारिक वासनाओं और मोह माया से मुक्त हो जाता है. इस अभंग में नामदेव जी कहते हैं कि जिस इंसान ने, जिस जीव ने परम पिता परमात्मा का साक्षात्कार कर लिया है, उसे जान लिया है तो वह अपने आप ही सांसारिक मोह माया और वासनाओं से मुक्त हो जाता है. उसे किसी भी चीज की इच्छा नहीं रहती और वह किसी से भी किसी भी तरह की कोई आशा नहीं रखता. वह हमेशा अपने मन में राम के नाम का चिंतन करता रहता है और उसके इस चिंतन के कारण ही ईश्वर उसे हर चिंता से मुक्त कर देता है. उसके हर दुःख सुख का हिसाब अब ईश्वर स्वयं रखता है. नामदेव जी कहते हैं कि यह संसार मोह-माया, छल-कपट, द्वेष, काम-क्रोध, लोभ आदि विकारों से भरा पड़ा है. विकारों से दूषित इस सागर को भला एक इंसान कैसे पार करेगा. बल्कि इन बुराइयों के चक्कर में पड़कर वह खुद भी कुमार्गी हो चला है. इन बुराइयों से बचने और भवसागर के इन विकारों को नष्ट करने के लिए इंसान के पास एक मात्र साधन राम का नाम है.

राम का सुमिरन करके ही वह विकारों से दूषित इस भवसागर अपने आप को बचाते हुए इसे पार कर सकता है. नामदेव जी कहते हैं कि ईश्वर की इच्छा से ही इनका जन्म छीपा जाति में हुआ और इन्हें विशोबा खेचर जैसे गुरु की छत्र-छाया में ज्ञान प्राप्त करने का सौभाग्य मिला. अपने गुरु की दिखाई राह पर चलते हुए ही इन्हें अपने परमात्मा से साक्षात्कार का अवसर मिला और ये ईश्वर का नाम जपते जपते इस संसार की माया से मुक्त हो गए

7. राग - गुजरी

जौ राजु देहि त कवन बडाई, जै भीख मंगावहि त किआ घटि जाई,
तू हरि भज मन मेरे पदु निरबानु, बहुरि न होई तेरा आवन-जानु,
सभ ते उपाई भरम भुलाई, जिस तूं देवहि तिसहि बुझाई,
सतिगुरु मिलै त सहसा जाई, किसु हउ पूजउ दूजा नदरि न आई,
एकै पाथर कीजै भाउ, दूजै पाथर धरीऐ पाउ,
जे ओहु देउ त ओहु भी देवा, कहि नामदेउ हम हरि की सेवा.....

नामदेव जी महाराज अपने इस अभंग में मूर्ती पूजा का विरोध करते नज़र आते हैं. इनका मानना है कि ईश्वर का कोई रूप नहीं है, वह तो हर जगह और हर चीज में विद्यमान है. इस संसार में जो कुछ भी घटता है तो वह ईश्वर की मर्जी से ही घटता है. उसकी मर्जी से ही इंसान सुख-दुःख का भागी होता है, लेकिन सच्चे मन से ईश्वर को याद करने वाले इंसान पर ईश्वर की इच्छा का कोई असर नहीं होता. नामदेव जी कहते हैं कि अगर ईश्वर इन्हें किसी राज्य का मालिक बना देता है तो इसमें ईश्वर का भला क्या बडप्पन है, क्यूंकि इस बात से नामदेव जी के स्वभाव में कोई बदलाव नहीं आने वाला. और अगर परमात्मा इनसे भीख मंगवाता है तो इससे भी इन्हें कोई क्षोभ नहीं होने वाला, क्यूंकि इनके लिये न ही तो राज्य बड़ा है और ना ही भीख माँगना छोटा. ये तो हर समय राम की भक्ति में लीन रहते हैं, लिहाजा हर सुख और दुःख से मुक्त हो चुके हैं. इस लिए नामदेव जी कहते हैं कि इंसान को अगर इस जीवन-मरण के चक्र से मुक्त होना है तो उसे ईश्वर की भक्ति करनी चाहिए. मोक्ष पाने के लिए मात्र एक ही रास्ता है, ईश्वर भजन. नामदेव जी यहाँ ईश्वर से शिकायत भी करते हैं, ये कहते हैं कि इस सृष्टि को बनाने वाले पार-ब्रहम ने ही लोगों के मन में भ्रम और माया का जाल भी फैलाया हुआ है.

जिस किसी आत्मा को ईश्वर सद्बुद्धि दे देता है तो वह अपनी मुक्ति के लिए एक सक्षम गुरु की तलाश कर लेता है जो उसके मन की दुविधा को दूर करके ईश्वर से उसका साक्षात्कार करवाता है और वह जीव ईश्वर को पाकर अपने आपको सांसारिक मोहमाया से दूर कर लेता है. इंसान के मन में दुविधा इस बात की रहती है कि इस संसार में वह लोगों को पत्थर की मूर्ती की पूजा करते देखते है तो उसके मन में ये दुविधा उत्पन्न होती है कि अगर मूर्ती वाले पत्थर में भगवान है तो सीढ़ियों पर लगे पत्थर, जिस पर पाँव रख कर लोग मंदिर में आते हैं, उसमें भगवान क्यूँ नहीं है. उसकी पूजा क्यूँ नहीं की जाती...? उसकी इस दुविधा को एक सुलझा हुआ गुरु ही दूर कर सकता है. नामदेव जी कहते हैं कि अपने गुरु की शरण में जाने के बाद ही इन्हें ज्ञान हुआ कि मूर्ती पूजा व्यर्थ है, ईश्वर पत्थर में नहीं बसता वह तो निराकार है, उसका कोई रूप नहीं है, हर जीव में उसका वास है. इसलिए अब वह निराकार परमेश्वर की ही आराधना करते हैं.

8. राग - गुजरी

मलै न लाछै पार मलो परमलीओ बैठो री आई,
आवत किनै न पेखिओ कवनै जानै री बाई,
कउणु कहै किणि बूझीऐ रमईआ आकुलु री बाई,
जिउ आकासै पंखीअलौ खोज निरखिओ न जाई,
जिउ जल माझै माछली मारगु पेखणो न जाई,
जिउ आकासै घडुअलो मृग त्रिसना भरिआ,
नामे चे सुआमी बीठलो जिन तीनै जरिआ.....

इस अभंग में नामदेव जी निर्गुण परमपिता परमात्मा की संसार में व्यापकता के बारे में बताते हैं. नामदेव जी कहते हैं कि जिस निर्गुण भगवान की मैं उपासना करता हूँ वह निर्मल है, शुद्ध है. सांसारिक माया के मैल से वह मुक्त है. एक ना दिखाई देने वाली सुगंध की तरह ईश्वर हमारे मन में बसा हुआ है और मन में उसकी मौजूदगी हमारे चित्त को प्रसन्न कर रही है. ईश्वर को देखा नहीं जा सकता, हमारी आत्मा उसे महसूस कर सकती है, अगर हमारा चित्त भी शुद्ध हो तो. ईश्वर को आज तक किसी ने न आते हुए देखा है और ना ही जाते हुए, लिहाज़ा कोई भी सांसारिक आत्मा ये नहीं जानती कि उस निराकार का रूप कैसा है, उसका रंग कैसा है. जिस प्रकार आकाश में उड़ते हुए पंछी और जल में तैर रही मछली को उनका मार्ग नज़र नहीं, उसी तरह परमात्मा भी हमें दिखाई नहीं देता लेकिन हम उसे अपनी आत्मा को जागृत करके जान सकते हैं, संसार में उसकी उपस्थिति को महसूस कर सकते हैं. जिस तरह नीले आकाश को देखकर मृग तृष्णा के वशीभूत होकर जल का आभास होता है, लेकिन हम उसे पा नहीं सकते, उसे ढूंढ पाना असम्भव है.

उसी प्रकार अपनी इन्द्रियों में के वश में रहते हुए हम ईश्वर का ना ही तो उसका अनुभव कर सकते हैं और न ही उसे जान सकते हैं. ईश्वर को जानने के लिए हमें अपनी इन्द्रियों को वश में करना होगा, अपने चित्त पर लगाम लगानी होगी. नामदेव जी कहते हैं कि उनका स्वामी तीनों लोक में वास करता है, लेकिन उस तक पहुँचने के लिए अपनी आत्मा को शुद्ध करना होगा.

9. राग - सोरठ

जब देखा तब गावा, तउ जन धीरजु पावा,
नादि समाइलो रे सतिगुरु भेटिले देवा,
जह झिलि-मिलि कारु दिसंता, तह अनहद सबद बजंता,
जोती जोती समानी, मैं गुरु परसादी जानी,
रतन कमल कोठरी, चमकार बीजुल तही,
नेरै नाही दूरि, निज आतमै रहिआ भरपूरि,
जह अनहत सूर उजारा, तह दीपक जलै छंछारा,
गुर परसादी जानिआ, जनु नामा सहज समानिआ....

इस अभंग में नामदेव जी अपने आन्तरिक अनुभव के बारे में बताते हैं. नामदेव जी कहते हैं कि जब कभी भी इन्होंने सच्चे मन से प्रभु का नाम लिया, उन्हें याद किया तो इन्हें परमात्मा के दर्शन अवश्य हुए हैं और जब भी इन्हें परमात्मा के दर्शन होते हैं इनका मन प्रसन्नता से नाच उठता है, ये उनकी स्तुति गाने लगते हैं. इस तरह के कार्य-कलापों से ये बेहद शांति का अनुभव करते हैं. प्रभु कृपा से इन्हें सद्गुरु मिला और ये उनके शब्द नाद में एकरूप हो गए. अपने गुरु के सानिध्य में इन्हें ऐसे लोक की अनुभूति हुई जहाँ हर तरफ आँखों को सुख देने वाली रोशनी थी और मन भावन संगीत था. गुरु की कृपा से इन्हें ये सब मिला था और इन्हें वहां पर अपनी आत्मा उस अलौकिक रोशनी में समाती नज़र आई थी. यानि कि इन्हें अपनी आत्मा परमात्मा में विलीन होती दिखाई दे रही थी. इन्हें अपने हृदय की कोठरी में अपने सद् विचार रूपी चमकते हुए रत्न दिखाई देने लगे थे. इनका हृदय सूरज की सी रोशनी से प्रकाशमान हो चला था. इनकी समझ में आ रहा था कि अब परमात्मा इनसे दूर नहीं है, कहीं पास में ही है. प्रभु इन्हें अपनी आत्मा में निवास करता महसूस हो रहा था.

नामदेव जी कहते हैं कि इस अवस्था तक ये अपने गुरु के मार्गदर्शन से ही पहुँच पाए थे और इनकी आत्मा प्रभु में विलीन हो गई थी.

10. राग - सोरठ

पाड़ पड़ोसणि पूछिले नामा, का पहि छानि छवाई हो,
तो पहि दुगणी मजूरी दैहउ, मोकउ बेढी देहू बताई हो,
री बाई बेढी देनु न जाई, देखू बेढी रहिओ समाई,
हमारै बेड़ी प्राण अधारा हो...
बेढी प्रीति मजूरी मांगै, जउ कोऊ छानि छवावै हो,
लोग कुटंब सभहु ते तोरै, तउ आपन बेढी आवै हो,
ऐसो बेढी बरनि न साकउ, सभ अंतर सभ ठाई हो,
गूंगै महा अम्रित रसु चाखिआ, पूछे कहनु न जाई हो,
बेढी के गुण सुनि री बाई, जलधि बांधि ध्रू थापिओ हो,
नामे के सुआमी सीअ बहोरी, लंक भभीखण आपिओ हो.....

इस अभंग के भावार्थ से पहले इससे जुड़ी नामदेव जी के जीवन की एक घटना से आपको अवगत करना आवश्यक है. हुआ ये था कि एक बार आग में उनका घर क्षतिग्रस्त हो गया था और उनके घर की मरम्मत स्वयं भगवान एक राजगीर के रूप में आकर कर गए थे. इनके घर की इतनी अच्छी मरम्मत हुई देखकर इनकी पड़ोसन ने इनसे पूछा था कि इनके घर की इतनी बढ़िया मरम्मत इन्होंने किस राजगीर से करवाई थी. वह औरत इनसे उस कारीगर का पता पूछती है और कहती है कि उसे भी अपने घर की मरम्मत करवानी है, अगर वह कारीगर उसका काम करने को राजी हो जाये तो वह उसे दोगुनी मजूरी देने को भी तैयार है. उसकी बात सुनकर नामदेव जी कहते हैं कि हे बाई उस अन्तर्यामी कारीगर का पता बताना बड़ा ही मुश्किल है, वह हमसे दूर नहीं है, वह तो हमारी अंतरात्मा में ही बसता है, लेकिन उसको पाना, उसको ढूंढना इतना आसान नहीं है.

अगर किसी को उस कारीगर से काम करवाना है तो पहले उसे अपनी प्रीति अर्पित करनी होगी, अपने सभी सगे सम्बन्धियों से नाता तोड़कर उसे याद करना होगा, तभी वह तुम्हारे घर की मरम्मत करने के लिए राजी होगा और अपने आप तुम्हारे पास चला आएगा. नामदेव जी कहते हैं कि वह उस कारीगर की महिमा का गुणगान करने में असमर्थ हैं, क्यूंकि वह तो हर प्राणी के घट में वास करता है. जिस प्रकार एक गूंगा इंसान अमृत चखने के बाद भी उसका स्वाद नहीं बता सकता उसी प्रकार कोई सांसारिक जीव उस परमपिता की महिमा का गुणगान नहीं कर सकता. नामदेव जी कहते हैं कि हे बाई उस परमपिता की महिमा जानना चाहती है तो सुन, उस प्रभु ने लंका के रास्ते समुद्र पर पुल बांध दिया था, ध्रुव को आकाश में उचित स्थान पर स्थापित कर दिया था, जिसने राम के अवतार में रावण के चंगुल से माता सीता को छुड़वा कर, रावण का संहार करके लंका का राज्य विभीषण को सौंप दिया था. इस अभंग का सार ये है कि जो अपना सब कुछ त्याग कर प्रभु की शरण में चला जाता है तो प्रभु भी पूर्ण रूप से उसके हो जाते हैं और उसके सुख-दुःख में हमेशा उसकी मदद के लिए हाज़िर रहते हैं.

11. राग - सोरठ

अण मड़िआ मंदलु बाजै, बिनु सावण घनहरु गाजै,
बादल बिनु बरखा होई, जउ ततु बिचारै कोई,
मोकउ मिलिओ रामु सनेही, जिह मिलिऐ देह सुदेही,
मिलि पारस कंचनु होइआ, मुख मनसा रतनु परोइआ,
निज भाउ भइआ भ्रमु भागा, गुरु पूछे मनु पतीआगा,
जल भीतरि कुंभ समानिआ, सभ रामु एकु करि जानिआ,
गुरु चेले है मनु मानिआ, जन नामा ततु पछानिआ....

इस अभंग में नामदेव जी गुरु कृपा से होने वाली प्रभु अनुभूति का वर्णन करते हुए कहते हैं कि जब कभी भी प्रभु की चर्चा होती है या उसके बारे में बात होती है तो सच्चे भक्त का मन प्रफुल्लित हो उठता है. बिना मंढा ढोल भी जोर जोर से बजने लगता है. सावन का मौसम ना होने के बावजूद आसमान में बादल गरजने लगते हैं और बिना बादलों के ही बरसात होने लगती है. यानि कि प्रभु के नाम का स्मरण करते ही आस-पास का वातावरण आनंदमयी हो उठता है. और इस तरह की अलौकिक अनुभूति होती है एक सच्चे गुरु के सानिध्य से. नामदेव जी कहते हैं कि ये उनका सौभाग्य था कि इन्हें उस परमपिता का स्नेह मिला और इनका अस्तित्व, इनका व्यक्तित्व शुद्ध हो गया, निर्मल हो गया. परमात्मा की कृपा से ही इन्हें पारस जैसे गुरु का संग मिला, जिसने इनकी काया को अपने ज्ञान से छूकर सोना बना दिया. उनकी ही कृपा से इनके मन और मुख ने राम-नाम रूपी रतन धारण किया, जिससे इनका चित्त निर्मल हो गया. अपने गुरु से मिलने के बाद ही ये अपने आपको जान पाये और इनके सारे भ्रम दूर हो गए. जिस प्रकार घड़े में जल समा कर एक रूप हो जाता है उसी तरह इनकी आत्मा भी परमात्मा में लीन होकर ब्रहम रूप हो गई.

इन्हें अब हर तरफ प्रभु का ही आभास होता है, उसके ही दर्शन होते हैं. नामदेव जी कहते हैं कि जब से इन्होंने अपने गुरु को अंतर्मन से अपनाया है, इन्होंने परमात्मा के परम तत्व को जान लिया है. इस अभंग का सार ये है कि अगर हमें परमात्मा को जानना है, उसे पहचानना है तो ये काम किसी समर्थ गुरु के मार्ग दर्शन में ही संभव है.

12. राग - धनासरी

गहरी करि कै नीव खुदाई, ऊपरि मंडप छाए,
मारकंडे ते को अधिकाई, जिनि त्रिण धरि मूंड बलाए,
हमरो करता रामु सनेही,
कहि रे नर गरबु करत हहु बिनसि जाइ झूठी देही,
मेरी मेरी कौरउ करते, दुरजोधन से भाई,
बारह जोजन छत्रु चलै था, देही गिरधन खाई,
सरब सोइन की लंका होती, रावन से अधिकाई,
कहा भइओ दरि बांधै हाथी, खिन महि भई पराई,
दुरवासा सिउ करत ठगउरी, जादव ए फल पाए,
क्रिपा करी जन अपुने ऊपर नामदेउ हरि गुण गाए.....

इस अभंग के द्वारा नामदेव जी ये समझाना चाहते हैं कि ये संसार और अपना शरीर दोनों ही नश्वर हैं. हमारे जीवन के कल का हमें पता नहीं है कि हम रहेंगे या इस संसार से विदा हो जायेंगे, इसके बावजूद हम अज्ञानी जीव गहरी नींव खोदकर उस पर महल और अटारी बना रहे हैं, इस उम्मीद में कि हमें ना जाने कितने वर्ष इस संसार में गुजारने हैं. जबकि मार्कण्डेय ऋषि, जिनकी आयु पुराणों में हजारों वर्ष बताई गई है, उन्होंने कभी अपने रहने के लिए एक कुटिया तक नहीं बनाई . जब कभी बारिश होती थी तो एक तिनका अपने सर पर रख कर ही अपने आपको सुरक्षित समझने लगते थे. अगर कभी कोई उनसे कुटिया बनाने को कहता तो वह जवाब देते कि रहने के लिए कुटिया तो तब बनाई जाये जब उन्हें हमेशा ही यहाँ रहना हो. एक न एक दिन तो इस शरीर को इस मिटटी में मिल ही जाना है, तब भला कुटिया बनाने से क्या लाभ.

नामदेव जी कहते हैं कि कौरव, जिनका दुर्योधन जैसा बलशाली भाई था और जिनका 12 योजन तक साम्राज्य फैला हुआ था, अंत तो उनका भी हुआ और ऐसा कि उनकी लाशों को कोई सँभालने वाला भी नहीं मिला और उन्हें गिद्धों ने खाया. सोने की लंका का स्वामी रावण, जिसके दरवाजे पर हाथी बंधे रहते थे, अंत उसका भी हुआ. जिसे वह अपना अपना कह कर घमंड करता था, वो सब किसी और का हो गया. नामदेव जी कहते हैं कि एक बार यादवों के कुछ अहंकारी युवकों ने दुर्वासा ऋषि के साथ अभद्र व्यवहार किया था, उनका मजाक उड़ाया था. उनका हश्र क्या हुआ ये सारा संसार जानता है. वो लोग आपस में ही लड़ लड़ कर मर गए और यादव वंश का सर्वनाश हो गया. इसलिए इस सांसारिक जीव को अपनी सत्ता, अपने पैसे या अपने बल पर कभी घमंड नहीं करना चाहिए. जीव को राम नाम का सुमिरण करना चाहिए ताकि उसका अगम सुगम हो सके. नामदेव जी कहते हैं कि उन पर प्रभु कि असीम कृपा है जो वह सांसारिक मोह माया से दूर हैं और अपने प्रभु का सुमिरण कर रहे हैं.

13. राग - धनासरी

दस बैरागनि मोहि बसि कीन्ही पंचहु का मिट नावउ,
सतरि-दोइ भरे अंम्रित सरि विखु कउ मारि कढ़ावउ,
पाछै बहुरि न आवनु पावउ....
अंम्रित बाणी घट ते उचरऊ आतम कउ समझावउ,
बजर कुठारू मोहि है छीनां करि मिंनति लगि पावउ,
संतन के हम उलटे सेवक भगतन ते डरपाउ,
इह संसार ते तब ही छूटउ जउ माइआ नह लपटावउ,
माइआ नामु गरभ जोनि का तिह तजि दरसनु पावउ,
इतु करि भगति करहि जो जन भउ सगल चुकाइऐ,
कहत नामदेउ बाहरि किआ भरमहु इह संजम हरि पाइऐ.....

अपने इस अभंग के माध्यम से नामदेव जी जनमानस को ये समझाना चाहते हैं कि अपनी इन्द्रियों को अपने काबू में अपने विकारों को नष्ट किये बिना भक्ति मार्ग पर अग्रसर होना असंभव है. नामदेव जी कहते हैं कि इन्होंने अपने ध्यान और गुरु के मार्ग दर्शन में अपनी दसों इन्द्रियों - पांच कर्मेन्द्रियों और पांच ज्ञानेन्द्रियों को अपने काबू में कर लिया है. उनकी ये इन्द्रियां अब वही काम करती हैं जैसा, ये उनको आदेश देते हैं. इसके साथ साथ इन्होंने अपने पाँचों विकारों- काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार पर भी विजय पा ली है, लिहाजा इनके शरीर की 72 हज़ार नाड़ियाँ विषमुक्त हो गई हैं और और इनका सम्पूर्ण शरीर प्रभु नाम के अमृत से लबालब हो गया है. ऐसा करके इन्होंने इस संसार में जन्म-मृत्यु के अपने सारे बंधनों को नष्ट कर लिया है. नामदेव जी कहते हैं कि अब इनका मन परमात्मा के भजन के अलावा किसी और बात में नहीं लगता. प्रभु भजन से इन्होंने अपनी आत्मा और अपने शरीर को निर्मल बना लिया है.

गुरु कृपा से इन्होने राम-नाम की कुल्हाड़ी से अपने मन के विकारों और सांसारिक बन्धनों को काट दिया है. सांसारिक बंधनों से मुक्त होकर अब ये संतों की संगत करने लगे हैं, अब इनका मन इनके शरीर की इन्द्रियों के स्थान पर संत महात्माओं का दास बन गया है. नामदेव जी कहते हैं कि जीव को इस संसार के आवा-गमन से मुक्ति तभी मिल सकती है जब वह अपने आपको सांसारिक मोह-माया से मुक्त कर लेगा. इस मोह के कारण ही हमें किसी के गर्भ में जाना पड़ता है और जन्म लेकर इस संसार में आना पड़ता है. जिस दिन माया से हमारी मुक्ति हो जाएगी, ईश्वर तक पहुँचने का मार्ग अपने आप खुल जायेगा. जो जीव सब कुछ त्याग कर ईश्वर भक्ति में लग जाता है, वह हमेशा के लिए भयमुक्त हो जाता है. नामदेव जी कहते हैं कि ईश्वर की चाह में जीव तो व्यर्थ ही इधर उधर भटकता है, जबकी ईश्वर तो हमारे अपने हृदय में बसा हुआ है. अपने मन में बसे इस परमात्मा को मात्र अपने मन को साध करके ही पाया जा सकता है. और मन की साधना का मार्ग एक सच्चा गुरु ही हमें दिखा सकता है.

14. राग - धनासरी

मारवाड़ी जैसे नीरू बालहा, बेलि बालहा करहला,
जउ कुरंक निसि नादु बालहा, तिउ मेरे मनि रामईआ,
तेरा नामु रुड़ो रूपु रुड़ो, अति रंग रुड़ो मेरो रामईआ,
जिउ धरणी कउ इंद्रु बालहा, कुसम बासु जैसे भवरला,
जिउ कोकिल कउ अंबु बालहा, तिउ मेरे मनि रामईआ,
चकवी कउ जैसे सुरु बालहा, मान सरोवर हंसुला,
जिउ तरुणी कउ कंतु बालहा, तिउ मेरे मनि रामईआ,
बारिक कउ जैसे खीरू बालहा, चात्रिक मुख जैसे जलधरा,
मछुली कउ जैसे नीरू बालहा, तिउ मेरे मनि रामईआ,
साधिक सिध सगल मुनि चाहहि, बिरलो काहू डीठुला,
सगल भवण तेरो नामु बालहा, तिउ नामे मनि बीठुला.....

अपने इस अभंग में नामदेव जी ने प्रभु के प्रति अपने प्रेम को अलग अलग भावों में दर्शाया है. नामदेव जी कहते हैं कि जिस प्रकार मारवाड़ यानि कि मरुस्थल में रहने वाले जीवों को जल सबसे प्यारा होता है, जल के लिए वो कुछ भी करने को तैयार रहते हैं, रेगिस्तान में बहुतायत में पाए जाने वाले ऊँट को खाने के लिए बेल अच्छी लगती है और जंगल में विचरते हिरण को रात्रि समय घंट-नाद प्यारा लगता है उसी प्रकार का लगाव- मोह इनका अपने परमात्मा से है. अपने प्रभु के हर रंग-रूप के ये दीवाने हैं, हर रूप में इश्वर इन्हें बेहद प्रिय है. जिस तरह शुष्क धरती को बरसात, भंवरे को फूल की सुगंध और कोयल को अपने निवास के लिए आम का वृक्ष प्रिय होता है उसी प्रकार परमात्मा नामदेव जी को प्यारे लगते हैं. जैसे चकवी पंछी सूरज का दीवाना होता है और उसे पाने के लिए अपने प्राण तक न्योछावर कर देता है, हंस को मानसरोवर और युवती को अपना पति प्यारा होता है.

नामदेव जी भी अपने दीनदयाल को उतना ही प्यार करते हैं, उसे पाने के लिए अपना सब कुछ न्योछावर करने को ये तैयार हैं. एक बालक को जैसे दूध की, एक तांत्रिक को स्वाति नक्षत्र में पड़ने वाली बूँद की और मछली को जल की चाह होती है, उसी तरह की चाह नामदेव जी के मन में अपने राम को लेकर बनी हुई है. हर साधक और ऋषि मुनि के मन में प्रभु के दर्शनों की अभिलाषा होती है, लेकिन उनमें से बहुत कम लोग ऐसे होते हैं जिन्हें प्रभु दर्शन का सौभाग्य मिल पाता है. समस्त ब्रह्माण्ड को जैसे ईश्वर का नाम प्यारा लगता है, वैसे ही नामदेव जी को अपना विठ्ठल प्यारा लगता है, ईश्वर के नाम बिन नामदेव जी को एक पल भी चैन नहीं पड़ता.

15. राग - धनासरी

पहिल पुरिए पुंडरक बना, ता चे हंसा सगले जनां,
कृसना ते जानऊ हरि हरि नाचती नाचना, पहिल पुरसाबिरा,
अथोन पुरसादमरा, असगा अस उसगा,
हरि का बागरा नाचै, पिंधी माहि सागरा,
नाचती गोपी जना, नईआ ते बैरे कंना, तरकु न चा, भ्रमीआ चा,
केसवा बचउनी अईए, मईए एक आन जीउ,
पिंधी उभकले संसारा, भ्रमि भ्रमि आए तुमचे दुआरा,
तूं कुनु रे, मैं जी, नामा,
हो जी आला, ते निवारणा जम कारणा....

अपने इस अभंग में नामदेव जी सृष्टि के निर्माण की प्रक्रिया के बारे में बताते हुए कहते हैं कि इस सृष्टि के बनने से पहले विष्णु जी की नाभि से कमल का पुष्प प्रगट हुआ और फिर उस कमल में से उत्पत्ति हुई ब्रह्मा जी की. फिर ब्रह्मा जी ने संरचना की इस सृष्टि और सब जीव जन्तुओं की. इस संसार में जो कुछ भी घटता है वह सब ईश्वर की मर्जी से ही होता है. सब जीव उस परमेश्वर के हाथ की कठपुतली मात्र हैं, वो जैसा जीव को नचाना चाहता है, जीव को नाचना पड़ता है. सृष्टि के प्रारम्भ में ही ईश्वर की कृपा से प्रकृति बनी और उसके बाद सब कुछ, जो कुछ भी इस संसार में नज़र आ रहा है, सबकी उत्पत्ति प्रभु की मर्जी से हुई. सृष्टि की संरचना के आरंभ में सब कुछ बहुत सुंदर था, जीव ईश्वर के बनाये इस उपवन में आनंदित होकर नृत्य करते दिखाई देते थे. ईश्वर ने तो हमेशा ये ही समझाया था कि वह और प्रकृति अलग अलग नहीं हैं. ईश्वर ही प्रकृति है और प्रकृति ही ईश्वर है, लेकिन इस बात को लेकर जीव तर्क करने लगा और इस बात पर बहस होने लगी.

अब जहाँ तर्क होता है, वहां भ्रम उत्पन्न होता है, क्यूंकि इंसान सही गलत का फैसला ही नहीं कर पाता. इस भ्रम के चलते ही जीव की मुक्ति का मार्ग अवरुद्ध हो गया और उसके बाद रहट के बर्तन की तरह जीव का इस मायावी संसार में आना जाना आरंभ हुआ, जीवन मरण का चक्र शुरू हो गया और जीव संसार की माया में फंसता चला गया. नामदेव जी कहते हैं कि वह भी कई योनियों से होते हुए मनुष्य रूप में आये हैं. इस जीवन-मरण के जंजाल से मुक्त होने के लिए जब ये अपने गुरु के पास पहुंचे तो इनके गुरु ने इनसे इनका परिचय पूछा. तो नामदेव जी ने कहा,'मेरा नाम नामदेव है और मैं इस संसार के माया जाल से मुक्त होने के लिए आपकी शरण में आया हूँ. मैं नहीं चाहता कि यमराज का भय मुझे और परेशान करे.'

इस अभंग का सार ये है कि ईश्वर ने तो अपनी तरफ से बड़ी ही खूबसूरत सृष्टि की संरचना की थी, लेकिन हम जीवों ने अपने कर्मों से इसे दूषित करके अपने अगम के मार्ग को अवरुद्ध कर लिया है, सो अगम के उस मार्ग का अवरोध दूर करने के लिए हमें निर्मल और शुद्ध मन से ईश्वर को याद करना होगा, अपने आपको उसके चरणों में समर्पित करना होगा.

16. राग - धनासरी

पतित पावन माधव बिरदु तेरा,
धंनि ते वै मुनि जन, जिन धिआइओ हरि प्रभु मेरा,
मेरै माथै लागी ले धूरि गोबिंद चरनन की,
सुर नर मुनि जन तिनहु ते दूरि,
दीन की दइआलु माधौ गरब परिहारी,
चरण सरन नामा बलि तिहारी.....

अपने इस अभंग में नामदेव जी बता रहे हैं कि ईश्वर की नज़रों में सब बराबर हैं, वह जीवों पर कृपा करते समय उनमें भेदभाव नहीं करते. जैसे सूरज अपनी उर्जा और रोशनी देते समय ये नहीं देखता कि जिस पर उसकी रोशनी पड़ रही है वह राजा है या रंक. बादल भी गुण-अवगुण देखकर नहीं बरसते. ये सब परमात्मा का ही तो रूप हैं. नामदेव जी अपने परमात्मा को संबोधित करते हुए कहते हैं - हे मेरे परमात्मा इस संसार में दुष्कर्म करने वाले दुष्टों और पापियों को सुधार कर उन्हें सत्कर्म के लिए प्रेरित करना और उन्हें पवित्र करना तुम्हारा स्वभाव है. जब आप दुष्टों का उद्धार कर सकते हो तो हर समय आपका ध्यान करने वाले, आपकी पूजा और आराधना करने वाले जीवों का जीवन तो धन्य है, क्यूंकि उन्हें तो आपको पार लगाना ही है. ये मेरा सौभाग्य है प्रभु कि मुझे आपके चरणों की सेवा करने का अवसर मिला और आपके चरणों की धूल को मैं अपने माथे पर लगा सका. आपकी इस सेवा के लिए तो बड़े बड़े ऋषि मुनि और संत तरसते रहते हैं, आपको पाने के लिए रात-दिन तप करते हैं, आपका ध्यान करते हैं.

लेकिन इतना सब करके भी उन्हें आपकी सेवा करने का सौभाग्य नहीं मिलता, जो आपने मुझ गरीब पर दया करके मुझे बख्शा है. हे मेरे राम आप दीन-दुखियों की मदद करने वाले और अहंकारियों के अहंकार को नष्ट करने वाले हैं. नामदेव जी कहते हैं कि ये सब जानकर वह ईश्वर की शरण में चले आये हैं और उन पर बलिहारी जाते हैं.

इस अभंग में समझने वाली बात ये है कि जब परमात्मा किसी जीव पर दया करते समय उसके गुण - अवगुण नहीं देखता तो उसी ईश्वर की रचना होने के कारण हमें क्या अधिकार है कि हम लोगों में भेदभाव करें.

17. राग - तोड़ी

कोई बोलै नीरवा कोई बोलै दूरि, जल की माछुली चरै खजूरि,
कांई रे बकबादु लाइओ, जिनि हरि पाइओ तिनही छपाइओ,
पंडित होइ कै बेदु बखानै, मूरखु नामदेउ रामहि जानै.....

नामदेव जी अपने इस अभंग में इंसान की प्रभु को देखने की उसकी दृष्टि और उसकी भावना के बारे में बताना चाह रहे हैं. नामदेव जी कहते हैं कि कोई प्रभु को अपने करीब समझता है तो कोई उसे दूर मानता है. करीब वो समझता है, जिसने प्रभु को पाने की चाह में ध्यान और तप किया है. जिसने प्रभु को बाहर नहीं अपने अंदर अपने मन में खोजा है. और प्रभु को अपने से दूर वो समझता है जिसने प्रभु को जानने की कभी कोशिश ही नहीं की, और अगर की भी है तो बाहर दुनियावी वस्तुओं में, मंदिरों और मस्जिदों में उसने प्रभु को तलाशा है, उसे पाने के लिए अपने मन के अन्दर कभी झांक कर नहीं देखा. ईश्वर को अन्दर तलाश करने की बजाय उसे बाहर ढूंढना ठीक वैसा ही है जैसे एक मछली अपने जीवन दाता पानी को छोड़कर खजूर के पेड़ पर जाने का लालच करे. ईश्वर बाहर है या अन्दर इस व्यर्थ की चर्चा में ना पड़ कर हमें उसका ध्यान करना चाहिए, वह भी चुपचाप बिना किसी को बताये. क्यूंकि जो जीव परमात्मा को पा लेता है उसे जान लेता है वह इस बात का ढिंढोरा नहीं पीटता, उसे प्रकट नहीं करता, उसे अपने अंतर्मन में छुपा कर रखता है.

नामदेव जी कहते हैं - विद्वान लोग वेद शास्त्रों के ज्ञाता होकर केवल मंत्रो का पाठ करते हैं, ईश्वर को पहचनाने की कोशिश नहीं करते. लेकिन मैं मूर्ख हमेशा इनका स्मरण करता हूँ, मुझे राम के सिवा कुछ और याद ही नहीं रहता. शायद यही वजह है कि मैं परमात्मा की व्यापकता को पहचान गया हूँ.

18. राग - तोड़ी

कउन को कलंकु रहिओ राम नामु लेत ही,
पतित पवित भए रामु कहत ही,
राम संगि नामदेउ, जन कऊ प्रतिगिआ आई,
एकादसी ब्रतु रहै काहे कउ तीरथ जाई,
भनति नामदेउ सुक्रित सुमति भए,
गुरमति रामु कहि को को न बैकुंठी गए....

इस अभंग में नामदेव जी राम-नाम की महिमा का उल्लेख करते हुए कहते हैं कि जिस किसी ने भी सच्चे मन से राम नाम का सुमिरन किया है, उसके सब संताप, सब कष्ट दूर हो गए हैं. राम का नाम जपने से इंसान के सभी कलंक धुल जाते हैं, वह निष्कलंक हो जाता है. राम का नाम ऐसा है जिसके सहारे पापी जीव भी पवित्र हो कर भव सागर से तर जाता है. नामदेव जी कहते हैं कि राम नाम के प्रति उनकी आस्था दृढ़ हो गई है, इसके साथ इनकी गहरी भावना जुड़ी हुई है. वो कहते हैं कि ईश्वर के नाम से एकादशी का उपवास करने वाले इन्सान को भला तीर्थ करने की क्या आवश्यकता है. हजारों तीरथ का काम तो सच्चे मन से लिया गया राम का नाम ही कर देगा. नामदेव जी कहते हैं कि निर्मल हृदय से राम नाम का जाप करने से इनके मन के सभी विकार दूर हो गए हैं और इन्हें सद्बुद्धि प्राप्त हो गई है. वो कहते हैं कि गुरु के सानिध्य में उनके मार्ग दर्शन में राम का नाम लेने वाले भला किस जीव की गति नहीं हुई है. सच्चे मन से राम नाम का सुमिरन करने वाला जीव इस संसार से मुक्त होकर बैकुंठ लोक ही पहुंचा है.

नामदेव जी के इस अभंग का सारांश ये है कि इसलिए हर जीव को अपने जीवन को निष्पाप करने हेतु राम नाम का सुमिरन करना चाहिए.

19. राग - तोड़ी

तीनि छंदे खेलु आछै, तीनि छंदे खेलु आछै,
कुंभार के घर हांडी आछै, राजा के घर सांडी गो,
बामन के घर रांडी आछै, रांडी सांडी हांडी गो,
बाणीए के घर हींगु आछै, भैसर माथै सींगु गो,
देवल मधे लीगु आछै, लीगु सींगु हींगु गो,
तेली के घर तेलु आछै, जंगल मधे बेल गो,
माली के घर केलु आछै, केल बेल तेल गो,
संतां मधे गोबिंदु आछै, गोकल मधे सिआम गो,
नाम मधे रामु आछै, राम सिआम गोबिंद गो.....

नामदेव जी अपने इस अभंग के माध्यम से शब्दों के खेल द्वारा समझाना चाहते हैं कि इस संसार में हर वस्तु का एक उचित स्थान है और वह चीज अपनी जगह पर ही सुंदर लगती है. जिस तरह हांडी या मिटटी के बर्तन कुम्हार के घर पर ही ठीक लगते हैं, हाथी-घोड़े और ऊंट ऊंटनिया राजा के यहीं शोभा देती हैं और वेद पुराण एक ब्राह्मण शास्त्री के घर पर ही अच्छे लगते हैं. हींग आदि परचून का सामान एक बनिए की दुकान में ही फबता है. अगर बनिए के यहाँ वेद शास्त्र रखे हो और ब्राह्मण के यहाँ मिटटी के बर्तन तो उनको कोई पूछेगा भी नहीं. सींग गाय या भैस के सर पर ही शोभा देते हैं, घोड़े या गधे के सर पर नहीं. उसी तरह शिवलिंग का महत्व मंदिर में ही होता है, अगर वो बाज़ार में किसी दुकान पर रखा होगा तो लोगों में उसके प्रति जरा भी श्रद्धा नहीं रहेगी. तेल का एक तेली के घर पर, बेल का जंगल में और केल यानि की केला आदि फलों का उचित स्थान एक माली के यहीं पर होता है.

जिस प्रकार गोविन्द यानि की परमात्मा संतों के हृदय में और गोकुल में श्री कृष्ण का निवास है, उसी तरह नामदेव जी के हृदय में उनके राम का निवास है.

इस अभंग में नामों पर जोर इस लिए दिया गया है क्यूंकि इन नामों का एक दूसरे से प्रगाढ़ सम्बन्ध है. सांडी का राजा से, हांडी का कुम्हार से, रांडी यानि की वेद शास्त्रों का ब्राह्मण से, हींग का बनिए से, सींग का भैंस से, शिवलिंग का देवालय से, श्री कृष्ण का गोकुल और संतों का अपने ईश्वर से. ये सब एक दुसरे के बिना अधूरे हैं. ठीक उसी प्रकार नामदेव जी भी अपने राम के बिना अधूरे हैं.

20. राग - तोड़ी

मैं अंधुले की टेक तेरा नामु खुंदकारा,
मैं गरीब मैं मसकीन तेरा नामु है अधारा,
करीमां रहीमां अलाह तू गनी,
हाजरा हजूरी दरि पेसि तूं मनी,
दरिआउ तू दिहंद तू बिसीआर तू धनी,
देहि लेहि एकु तूं दिगर को नहीं,
तूं दाना तूं बीनां मैं बीचारु किआ करी,
नामे चे सुआमी बखसंद तूं हरि...

अपने इस अभंग के माध्यम से नामदेव जी बताना चाहते हैं कि इस संसार को चलाने वाला हम सबका पालनहार परमात्मा एक ही है, फिर चाहे आप उसे अल्लाह कह कर बुला लो या भगवान. सबका मालिक वही है, सबको देने वाला वही है. नामदेव जी कहते हैं - हे प्रभु जिस प्रकार एक अंधे को चलने के लिए लाठी का सहारा होता है, उसी तरह मुझ अज्ञानी को इस भवसागर से पार उतरने के लिए एक तेरे ही नाम का सहारा है. मुझ गरीब और बेसहारा जीव का मात्र तू ही एक सहारा है. तेरा ही नाम ही है जो मुझे मुक्ति दिलवा सकता है. हे मेरे अल्लाह, मेरे परमात्मा तू बड़ा ही दयालु है, सब पर दया करने वाला है. मेरे अन्दर बाहर, सर्वत्र नज़र आने वाला मेरा परमात्मा देने वाला भी तू ही है और लेने वाला भी तू ही है. तेरे बिना इस संसार में जीव कुछ नहीं कर सकता. मेरे मालिक तू समुद्र से भी विशाल है और तेरे भंडार रहमतों और नेमतों से भरे पड़े हैं. तू सब पर करम करता है, सबको देता है. मेरे परमात्मा तेरा गुणगान करना मेरे जैसे साधारण जीव के बस में नहीं है.

नामदेव जी कहते हैं कि जीव को कभी भी उस परमात्मा को भूलना नहीं चाहिए, वह सबका है और सब पर अपनी दया बरसाने वाला है.

21. राग - तिलंग

हले यारां हले यारां खुसि-खबरी,
बलि बलि जांउ हउ बलि बलि जांउ,
नीकी तेरी बिगारी आले तेरा नाऊ,
कुजा आमद, कुजा रफती, कुजा मे रवी,
द्वारिका नगरी रासि बुगोई,
खूबु तेरी पगरी मीठे तेरे बोल,
द्वारिका नगरी काहे के मगोल,
चंदी हज़ार आलम एक लखानां,
हम चिनी पातिसाह सांवले बरनां,
असपति गजपति नरह नरिंद,
नामे के स्वामी मीर मुकुंद...

नामदेव जी के इस अभंग से ये पता चलता है कि ईश्वर अपने भक्त समक्ष किसी भी रूप में आये, अगर भक्त सच्चा है तो वह अपने प्रभु को हर रूप में पहचान लेता है. एक बार का वाकया है कि द्वारिका नगरी से लौटते समय उनके सामने घोड़े पर एक मुगल आकर खड़ा हो गया और नामदेव जी को अपने साथ चलने को कहने लगा. भक्त नामदेव जी ने उस घुड़सवार को देखते ही पहचान लिया था. नामदेव जी उस मुग़ल की कुशल क्षेम पूछते हुए कहते हैं - हे मेरे दोस्त सब कुशल मंगल तो है...! सब का मंगल करने वाले प्रभु आपने मेरी मदद करने के लिए ये रूप धरा है, मैं जानता हूँ. मैं आपके इस रूप और आपके कृत्य पर बलिहारी जाता हूँ. अपने परमात्मा को पाने के लिए किया गया हर काम मुझे प्रिय है, फिर चाहे वह दूसरों की नज़रों में बेगार [जिसके बदले कुछ प्राप्त ना हो] ही क्यूँ न हो. क्यूंकि मैं जानता हूँ कि मैंने तेरी चाह में कर्म करके क्या हासिल किया है.

आपके नाम की क्या महिमा है, ये सिर्फ मैं जानता हूँ. आपका नाम बहुत बड़ा है, पूरे ब्रह्माण्ड में आपका ही नाम समाया हुआ है. मुझे तो बस इतना जानना है कि इस समय आप कहां से आ रहे हैं और आगे आपको कहां जाना है, क्यूंकि आप तो सर्वव्यापी हैं.

ये सुनकर घोड़े पर सवार मुगल नामदेव जी की परीक्षा लेने के इरादे से कहते हैं कि नामदेव जी को कोई गलत फहमी हुई है, वो मुगल ही है और उसे लेने आया है. इस पर नामदेव जी मुकुराते हुए कहते हैं कि भला वो कैसे अपने घट घट वासी प्रभु को पहचानने में चूक कर सकते हैं. क्यूंकि वो जानते हैं कि इतनी मधुर वाणी और ऐसे शालीन परिधान में कोई मुग़ल नहीं हो सकता. और फिर द्वारिका नगरी में भला कोई मुग़ल कहां से आ सकता है. नामदेव जी कहते हैं यहाँ उपस्थित हजारों लोगों में उन्हें केवल अपने प्रभु ही अलग नज़र आ रहे हैं. इन्होंने उन्हें पहचान लिया है, वो हजारों भवनों के मालिक सांवले वर्ण के उनके स्वामी श्री कृष्ण हैं. वो ब्रहमा भी हैं. वो ही सूर्य देवता हैं और इंद्र देवता भी हैं. हे नामदेव के स्वामी आप सबका ख्याल रखने वाले सच्चे बादशाह हैं.

22. राग - बिलावल

सफल जनमु मोकउ गुर कीना,
दुख बिसारि सुख अंतरी लीना,
गिआन अंजनु मोकउ गुरु दीना,
राम नाम बिनु जीवनु मन हीना,
नामदेउ सिमरनु करि जानां,
जग जीवन सिउ जीउ समानां...

इस अभंग में नामदेव जी प्राणी के जीवन में गुरु का महत्व बताते हुए कहते हैं कि गुरु के बिना इस संसार में कोई भी प्राणी ज्ञान प्राप्त नहीं कर सकता और ना ही गुरु के मार्गदर्शन के बिना जीव को परमात्मा के अस्तित्व का पता चलता है. नामदेव जी कहते हैं कि इनका सौभाग्य था कि इन्हें एक उच्च दर्जे के आध्यात्मिक गुरु मिले, जिन्होंने इनको राम नाम का मन्त्र दिया, जिसके चलते इनका जीवन सफल हुआ. अपने गुरु के सानिध्य में ही इनका अंतर्मन जागृत हो पाया और परमात्मा से इनकी लौ लगी. राम नाम का जो सूरमा इनके गुरु ने इन्हें दिया था, उसे धारण करते ही इनके आंतरिक चक्षु जागृत हो उठे थे और इन्हें परम पिता परमात्मा के दर्शन होने लगे थे, हर समय और हर जगह इन्हें आनंद की अनुभूति होने लगी थी. इनका कहना है कि ज्ञान प्राप्त होने के बाद तो राम के नाम का सुमिरण किये बिना इन्हें अपना जीवन अधूरा सा लगने लगता था. नामदेव जी कहते हैं कि प्रभु के नाम का सुमिरण इनके जीवन का अंग बन चुका था, राम का नाम लिए बिना ये एक पल भी नहीं रह सकते थे. राम के नाम को इनकी आत्मा ने आत्मसात कर लिया था और इनके जिस्म का कतरा कतरा राम का नाम ही जपता नज़र आता था.

23. राग - गौड़

असु-मेघ जगने, तुला पुरख दाने प्राग इसनाने,
तउ न पुजहि हरि कीरति नामा,
अपुने रामहि भजु रे मन आलसीआ,
गइआ पिंडु भरता, बनारसि असि बसता,
मुखि बेद चतुर पड़ता, सगल धरम अछिता,
गुर गिआन इंद्री द्रिड़ता, खटु करम सहित रहता,
सिवा सकति संबादं, मन छोडी छोडी सगल भेदं,
सिमरी सिमरी गोबिंदम, भजु नामा तरसि भवसिंधम.....

इस अभंग में भी नामदेव जी महाराज ने प्रभु के सुमिरन पर ही जोर दिया है. नाम सुमिरन से बड़ा न ही तो कोई जप है और ना ही कोई तप. मात्र नाम सुमिरन के सहारे ही जीव इस संसार के झगड़े झंझट से मुक्त हो सकता है. नामदेव जी कहते हैं कि कोई प्राणी चाहे अनगिनत धनराशी खर्च करके अश्वमेघ यज्ञ कर ले, चाहे कोई अपने शरीर के बराबर तोल कर सोना दान कर दे, या फिर कोई प्रयाग राज के संगम में जाकर डुबकी लगा आये, लाखों तीरथ कर आये, लेकिन ये सभी पुण्य कर्म ईश्वर की अंतर्मन से साधना की बराबरी नहीं कर सकते. सच्चे मन से अपने प्रभु की की गई भक्ति इन सभी पुण्य कर्मों में उत्तम है. इस लिए हे आलसी जीव सब कुछ भूलकर परमपिता परमात्मा को याद कर, वही तेरा बेड़ा पार लगा सकते हैं. गया जाकर अपने पूर्वजों का पिंड, ईश्वर प्राप्ति और अपनी सद्गति की चाह में बनारस में गंगा के तट पर जाकर बस जाने से, चारों वेदों को कंठस्थ कर लेने से, विभिन प्रकार के धार्मिक कर्म-कांड कर लेने से या रात-दिन तप करके अपनी इन्द्रियों को वश में कर लेने से, रात-दिन शिव पार्वती का गुणगान करते रहने से जीव कभी भी परमात्मा को नहीं पा सकता.

अगर हमें परमात्मा को पाना है तो शब्द नाम का सहारा लेना होगा. नामदेव जी कहते हैं कि हे जीव अपने मन को इधर उधर की व्यर्थ के कर्म-कंडों में मत उलझा ये सब छोड़कर प्रभु के नाम का सुमिरन कर. गुरु के दिए शब्द नाम के जाप से ही प्राणी मात्र का उद्धार संभव है.

24. राग - गौड़

नाद भ्रमे जैसे मिरगाए, प्राण तजे वा को धिआनु न जाए,
ऐसे रामा ऐसे हेरउ, रामु छोडी चितु अनत न फेरउ,
जिउ मीना हेरै पसुआरा, सोना गढते हिरै सुनारा,
जिऊ बिखई हेरै पर नारी, कउडा डारत हिरै जुआरी,
जह जह देखउ तह तह रामा, हरि के चरन नित धिआवै नामा...

अपने इस अभंग में नामदेव जी ने प्रभु के प्रति अपने प्रेम को अपने भाव को बड़ी ही सुन्दरता से प्रस्तुत किया है. नामदेव जी कहते हैं - जिस तरह से हिरन वाद्य का मधुर संगीत सुनकर उसमें खो जाता है और उसे इस बात का भी ख्याल नहीं रहता कि शिकारी उसका शिकार करने के लिए घात लगाये बैठा है. उस मधुर संगीत में खोकर वह अपनी जान तक दे देता है. उस हिरन की ही तरह मैं भी अपने प्रभु की भक्ति में खोया हुआ हूँ, उस ईश्वर के अलावा मुझे और कुछ भी नज़र नहीं आता है, मेरा चित्त हमेशा मेरे परमात्मा में ही लगा रहता है. जिस तरह से जल में एक पाँव पर खड़े बगुले का ध्यान अपने भोजन मछली की तरफ ही रहता है, जब तक वह उसका शिकार नहीं कर लेता, अपना ध्यान जल में से नहीं हटाता. जिस प्रकार सोने के गहने बनाने वाले सुनार का ध्यान अपने काम में ही लगा रहता है, वह एक क्षण के लिए भी इधर उधर नहीं देखता, उसी तरह मैं भी एक पल के लिए भी अपना चित्त परमात्मा से परे नहीं होने देता. हर घड़ी उनका ही ख्याल मेरे मन में रहता है. जिस तरह से कामी पुरुष एक टक पराई स्त्री को ताकता रहता है, उसके सिवा उसे कुछ दिखाई नहीं देता और एक जुआरी का ध्यान हमेशा अपने पासों में लगा रहता है, नामदेव जी कहते हैं कि उसी प्रकार इनका मन हमेशा परमात्मा में लीन रहता है और इनकी प्रीति प्रभु चरणों में लगी रहती है.

इस अभंग के माध्यम से नामदेव जी जनमानस को समझाना चाहते हैं कि इंसान चाहे प्रभु की भक्ति करे या अपना अन्य कोई काम, उसे पूरी तन्मयता और लगन से करना चाहिए तभी उस काम में इंसान को सफलता हासिल होती है. आधे-अधूरे मन से किया हुआ कोई काम ना ही तो अपने अंजाम तक पहुँचता है और ना ही परमात्मा उसे पसंद करते हैं.

25. राग - गौड़

मो कउ तारि ले रामा ता रिले,
मैं अजानु जनु तरिबे न जानउ बाप बीठुला बाह दे,
नर ते सुर होइ जात निमख मै सतिगुरु बुधि सिखलाई,
नर ते उपजि सुरग कउ जीतिओ सो अवखध मै पाई,
जहां जहां ध्रुव नारदु टेके नैकु टिकावहु मोहि,
तेरे नाम अविलंबि बहुतु जन उधरे नामे की निज मति एह...

इस अभंग में नामदेव जी बताना चाहते हैं कि इस दुनियादारी और जीवन मरण के चक्र से केवल ईश्वर ही हमें बचा सकता है, केवल राम का नाम ही जीव को इस भवसागर से पार लगा सकता है.

नामदेव जी ईश्वर से प्रार्थना करते हुए कहते हैं - हे प्रभु मेरा बेड़ा भी पार लगा दे, मुझे इस संसार के आवा-गमन से हमेशा के लिए मुक्त कर दे. मैं आपका एक अज्ञानी भक्त हूँ, जिसे इस भव सागर में तैरना नहीं आता. यानि कि दुनियावी बातों और धर्म-कर्म की बातों से मैं अनजान हूँ. मुझे तो बस आपके ही नाम का सहारा है, हे मेरे पिता मेरे परमेश्वर मेरी बांह थाम ले नहीं तो मैं इस दुनिया के माया जाल में फंस कर रह जाऊंगा. मुझे मेरे गुरु ने बताया आप अगर कृपा कर दें तो इंसान एक ही पल में मनुष्य से देव पुरुष बन सकता है. मनुष्य योनी में जन्म लेकर एक साधारण इंसान कैसे स्वर्ग तक पहुँच सकता है नाम-स्मरण का वह मार्ग मेरे गुरु ने मुझे बताया है. उसी मार्ग का अनुसरण करते हुए मैं आपसे विनती करता हूँ कि हे प्रभु जिस प्रकार आपने अपने भक्त ध्रुव और नारद जी को उनके उचित स्थान पर स्थापित किया है, मेरा भी उसी प्रकार उद्धार कर दो. मैं जानता हूँ कि नाम स्मरण के प्रताप से लाखों जीवों का आपने बेड़ा पार लगाया है, उन्हें इस संसार से मुक्ति दिलवाई है.

नामदेव जी अपने भक्तों से कहते हैं कि अगर उन्हें जीवन मरण के इस चक्र से मुक्त होना है, इस भवसागर से पार उतरना है तो ईश्वर का नाम सुमिरण ही एक मात्र रास्ता है. लिहाजा हमें एकाग्र चित्त होकर ईश्वर के नाम का सुमिरण करना चाहिए.

26. राग - गौड़

मोहि लागली तालाबेली, बछरे बिनु गाइ अकेली,
पानीआ बिनु मीनु तलफै ऐसे, राम नामा बिनु बापुरो नामा,
जैसे गाइ का बाछा छूटला, थन चोखता माखन घूटला,
नामदेउ नाराइनु पाइआ, गुरु भेटत अलखु लखाइआ,
जैसे बिखै हेत पर नारी, ऐसे नामे प्रीति मुरारी,
जैसे तापते निरमल घामा, तैसे राम नामा बिनु बापुरो नामा...

अपने इस अभंग में नामदेव जी राम नाम के सुमिरण की आदत और उसके सुमिरे बिना जीव की दशा का वर्णन करते हुए कहते हैं कि प्रभु के नाम की, उनके ध्यान की इन्हें ऐसी तीव्र आदत हो गई है कि इसके बिना इनकी आत्मा वैसे ही तड़पती जैसे अपने बछड़े से बिछड़ने के बाद गाय उससे मिलने के लिए तड़पती है, पानी से अलग कर दिए जाने पर मछली तड़पती है. और जब ये प्रभु का ध्यान करते हैं और उनके नाम का सुमिरण करते हैं तो इन्हें ऐसा आनन्द मिलता है जैसा दिन भर अपनी मां से बिछुड़े उसके भूखे प्यासे बछड़े को अपनी मां का मक्खन जैसा दूध पीने पर मिलता है. नामदेव जी कहते हैं कि अपने गुरु की जलाई लौ के चलते इन्हें ईश्वर के होने का अनुभव कर लिया है और इनकी आत्मा का परमात्मा से मिलन हो गया है. नामदेव जी कहते हैं कि जिस प्रकार एक कामी पुरुष का किसी नारी से प्रेम हो जाने पर एक पल के लिए भी उसका मन उस नारी से दूर नहीं रहता, हर समय उसी के विचारों में खोया रहता है, उसी प्रकार परमात्मा से इनकी लौ लग जाने के बाद एक क्षण के लिए भी इनका मन परमात्मा से दूर नहीं रह पाता. जिस तरह से खुले आसमान के नीचे कड़कती धूप में इंसान का मन गर्मी के मारे बादलों की चाह में व्याकुल हो जाता है,

वैसे ही इनका मन भी ईश्वर की चाह में उनके दर्शनों के लिए, उनसे मिलने के लिए मचलता है.

इस अभंग में भी नामदेव जी ने नाम सुमिरण पर ही जोर दिया है. ईश्वर प्राप्ति का साधन केवल नाम सुमिरण को ही बताया है.

27. राग - गौड़

हरि हरि करत मिटे सभी भरमा, हरि को नामु लै उत्तम धरमा,
हरि हरि करत जाति कुल हरी, सो हरि अंधुले की लाकरी,
हरए नमसते हरए नमह, हरि हरि करत नहीं दुखु जमह,
हरि हरनाकस हरे परान, अजैमल कीऊ बैकुंठहि थान,
सूआ पड़ावत गणिका तरी, सो हरि नैनहु की पूतरी,
हरि हरि करत पूतना तरी, बाल घातनी कपटहि भरी,
सिमरन द्रोपत सुत ऊधरी, गऊतम सती सिला निसतरी,
केसी कंस मथनु जिनि कीआ, जीअ दानु काली कउ दीआ,
प्रणवै नामा ऐसो हरि, जासु जपत भै अपदा टरी...

इस अभंग में भी नामदेव जी ने हरि के नाम की महिमा का ही वर्णन किया है. नामदेव जी कहते हैं कि इस संसार में हरि के नाम का सच्चे हृदय से जाप करना ही सबसे बड़ा कर्म है, एक मात्र हरि का नाम ही है, जिसके लेने से जीव के मन के सब भरम दूर हो जाते हैं. वह कौन है, कहां से आया है, क्या करने आया है, उसकी मंजिल क्या है आदि उसके मन के अन्दर छुपे सभी सवालों का जवाब केवल हरि का नाम लेने से ही उसे मिल जाते हैं. हरि का नाम ही सब कर्मों और धर्मों में सर्वश्रेष्ठ है. हरि नाम का मनन करने से अपनी जाति और कुल का अहंकार नष्ट हो जाता है. इंसान के अन्दर का अंधकार दूर हो जाता है, उसे हर चीज, हर बात साफ साफ नज़र आने लगती है. हरि नाम अज्ञानी जीव के लिए अंधे की लाठी की तरह काम करता है, उसका अज्ञान दूर करके उसे सही मार्ग दिखाता है. इस लिए नामदेव जी हरि चरणों में नमन करते हैं और उन्हें प्रणाम करते हैं. हरि का नाम लेने से इंसान के मन से मौत का भी भय खत्म हो जाता है, उसका जीवन सुखमय हो जाता है.

नामदेव जी बताते हैं कि जब हरि का नाम लेने वाले भक्त प्रहलाद को बचाने के लिए प्रभु नरसिंह अवतार लेकर हिरन्यकश्यप का वध कर सकते हैं, हरि के नाम का जाप करने वाले पापी अजामल को बैकुंठ का रास्ता दिखा सकते हैं, अपने तोते को हरि नाम का पाठ पढ़ाने वाली वैश्या को सद्गति प्रदान कर सकते हैं, हरि को मारने के इरादे से एक बार अपना स्तनपान करवाने वाली बच्चे घातिनी दुष्ट राक्षसी पूतना का उद्धार कर सकते हैं तब भला सच्चे हृदय से हरि का नाम जपने वाले प्राणी का उद्धार कैसे नहीं करेंगे. आगे नामदेव जी कहते हैं कि जिस प्रकार भगवान कृष्ण को अपनी लाज बचाने के लिए मदद की गुहार करने वाली द्रोपदी के चीर को बढ़ाकर उसकी लाज बचाने वाले, अपने पति गौतम ऋषि के श्राप से शिला बन चुकी अहिल्या का अपने चरणों से स्पर्श करके उसे श्राप मुक्त करने और उसका निस्तारण करने वाले, अपने भक्तों को कष्ट देने वाले कंस का संहार करने वाले और काली नाग के मस्तिष्क पर चढ़कर उसका मर्दन करने वाले हरि भला अपना नाम जपने वाले अपने भक्तों का उद्धार कैसे नहीं करेंगे. नामदेव जी कहते हैं कि एक हरि का नाम ही है जो इंसान को सभी संकटों और भय से मुक्त करता है और उसके अगम को सुगम बनाता है.

28. राग - गौड़

भैरउ भूत सीतला धावै, खर बाहनु उहु छारु उडावै,
हउ तउ एकु रमईआ लैहउ, आन देव बदलावनि दैहउ,
सिव सिव करते जो नरु धिआवै, वरद चढै डउरू ढमकावै,
महामाई की पूजा करै, नरसै नारि होइ अउतरै,
तू कहीअत ही आदि भवानी, मुकति की बरीआ कहां छपानी,
गुरमति राम नाम गहु मीता, प्रणवै नामा इउ कहै गीता...

श्री नामदेव जी महाराज अपने इस अभंग में ईश्वर के ध्यान को छोड़ अंधश्रद्धा के वशीभूत होकर व्यर्थ के परपंचों में अपना वक़्त बर्बाद करने वालों की दशा के बारे में बताते हैं. नामदेव जी कहते हैं कि जो प्राणी भगवद भजन छोड़कर भैरव, भूत और शीतला के पीछे दौड़ता है, सांसारिक सुख हासिल करने के लिए उनकी पूजा करता है, उस प्राणी की हालत अंत में गधे पर सवार इंसान जैसी हो जाती है, जो बिना किसी कारण के यूँ ही धूल उड़ाता फिरता है. उस बेचारे को न ही तो माया मिल पाती और न ही राम. नामदेव जी कहते हैं कि वह इस तरह की गलती नहीं करते, इनके मन में तो केवल राम का नाम है, राम नाम से ही इनका चित्त जुड़ गया है और ये हमेशा उसका ही सुमिरण करते हैं. इनकी राम नाम में इतनी श्रद्धा है कि राम नाम के बदले वह सभी देवी देवताओं को कुर्बान करने को तैयार हैं. ये कहते हैं कि जो प्राणी शिव शिव चिल्ला कर, उस परम शक्ति का ध्यान करने का ढोंग करता है, तो ऐसा लगता है जैसे वह शिव के वाहन बैल पर चढ़कर डमरू बजा रहा हो. और जो जीव देवी महामाई की पूजा करता है, वह अगले जन्म में स्त्री बन कर पैदा होता है.

आदिशक्ति जानकर पूजी जाने वाली महामाई अपनी आराधना करने वाले जीव को सांसारिक सुख तो मुहैया करवा सकती है, लेकिन उसे इस भव सागर से पार नहीं कर सकती. भव सागर से पार होने के लिए तो इंसान को राम के नाम का ही सुमिरन करना होगा, तभी उसकी गति हो सकती है. नामदेव जी कहते हैं कि हे जीव अगर तुझे अपना अगम सुधारना है तो अपने गुरु के मार्गदर्शन में राम का नाम ग्रहण कर और निर्मल चित्त से इसका सुमिरन कर. यही उपदेश परमेश्वर ने गीता में भी दिया है और मैं भी उसी मार्ग पर चल रहा हूँ.

29. राग - बिलावल गौड़

आजु नामे बीठुला देखिआ, मूरख को समझाऊ रे,
पांडे तुमरी गाइत्री, लोधे का खेतु खाती थी,
लै करि ठेंगा टंगरी तोरी, लांगत लांगत जाति थी,
पांडे तुमरा महादेउ धउले, बलद चड़िआ आवतु देखिआ था,
मोदी के घर खाणा पाका, वा का लड़का मारिआ था,
पांडे तुरा रामचंदु, सो भी आवतु देखिआ था,
रावन सेती सरबर होई, घर की जोइ गवाइ थी,
हिंदू अंन्हा तुरकू काणा, दुहां ते गिआनी सिआणा,
हिंदू पूजै देहुरा मुसलमाणु मसीति,
नामे सोई सेविआ जह देहुरा न मसीति...

इस अभंग में नामदेव जी महाराज ने केवल प्रभु के नाम सुमिरन पर ही जोर दिया है. किसी भी देवी देवता की मूर्ति पूजा को संसार से मुक्ति के लिए इन्होंने व्यर्थ बताया है. संसार से अपनी सदगति के लिए इन्होंने मात्र राम नाम के सुमिरन को ही उचित बताया है. यहाँ राम से इनका अभिप्राय अयोध्या नरेश राम से नहीं है, बल्कि परमपिता परमात्मा से है. नामदेव जी कहते हैं कि राम नाम के सहारे इन्होंने तो मनुष्य शरीर में ही अपने परमेश्वर के दर्शन कर लिए हैं. ये कहते हैं कि एक तरफ तो पंडित लोग गायत्री मंतर के जाप पर जोर देते हैं, लेकिन साथ ही ये भी बताते हैं कि इनकी गायत्री जब शाप ग्रस्त होकर गाय का रूप धारण करके किसान के खेत में खर-पतवार चरने के लिए गई थी, यानि की लोगों के ब्रह्म हत्या के पाप को चरने, खत्म करने गई थी तो वशिष्ठ जी ने अपने तप रूपी डंडे से मार कर उस गाय रूपी गायत्री की टांग तोड़ दी

थी, यानि कि उसकी मात्राएँ घटा कर 32 से 24 कर दी थी. इस लिए अब इनकी गायत्री लंगड़ा कर चलती है, यानि कि अब वह किसी काम की नहीं रही, उसमें किसी को पाप मुक्त करने की क्षमता नहीं रही. आगे नामदेव जी कहते हैं - हे पंडित गण, एक तरफ तो तुम भगवान शिव की पूजा करते हो, और दूसरी तरफ ये भी कहते हो कि अपने एक भक्त के बुलाने पर भगवान शिव अपने नन्दी बैल पर चढ़ कर उस भक्त के घर भोजन करने पहुंचे थे, लेकिन भोजन पसंद न आने पर क्रोधित होकर अपने उस भक्त के लड़के को ही मार कर आ गए थे. ये तुम्हारी कैसी भक्ति है, अपने इष्ट को तुम लोग हत्यारा कैसे बता सकते हो, तुम लोग परमात्मा की भक्ति के नाम पर अज्ञानी लोगों को भ्रमित करके अपना स्वार्थ साध रहे हो. नामदेव जी कहते हैं कि जिस अयोध्या नरेश राम की लोग पूजा करते हैं, उन्होंने अपनी पत्नी सीता को रावण की कैद से छुड़वाने के लिए रावण का वध तक कर दिया था, लेकिन उसी राम ने किसी दुसरे के कहने पर अपनी उसी पत्नी सीता पर शक किया था और उसे घर छोड़ने पर मजबूर कर दिया था. नामदेव जी कहते हैं कि ईश्वर प्राप्ति की इच्छा के चलते हिंदू अंधा हो गया है और जिस रास्ते पर ये पंडे इनका हाथ पकड़ कर ले जाते हैं ये चले जाते हैं. उसी तरह मुस्लिम अपनी एक आँख बंद करके काने इंसान की तरह काबे की दिशा खोजते हैं. इन सबसे समझदार है ज्ञानी इंसान, जो ईश्वर प्राप्ति के लिए आँख बंद करके किसी पर भरोसा नहीं करता, अपना कर्म करता है. नामदेव जी कहते हैं कि अंधा हिंदू मंदिर में जाकर प्रार्थना करता है और काना मुसलमान मस्जिद में जाकर, लेकिन इन्होंने उस परमेश्वर को पूजा हैं जो न मन्दिर में रहता है और ना ही मस्जिद में. वह सर्वव्यापी ईश्वर तो घट घट में बसता है.

30. राग - रामकली

आनीले कागदु, काटीले गूडी आकास मधे भरमीअले,
पंच जना सिउ बात बतऊआ, चीतु सु डोरी राखीअले,
मनु राम नामा बेधीअले, जैसे कनिक कला चितु मांडीअले,
आनीले कुंभु भराईले ऊदक, राज कुआरि पुरंदरीए,
हसत बिनोद बीचार करती है, चीतु सु गागरि राखीअले,
मंदरु एकु दुआर दस जाके, गऊ चरावन छाडीअले,
पांच कोस पर गऊ चरावत, चीतु सु बछरा राखीअले,
कहत नामदेउ सुनहु तिलोचन, बालकु पालन पउढीअले ,
अंतरी बाहरि काज बिरुधी, चीतु सु बारिक राखीअले...

एक बार एक सत्संग के दौरान भक्त त्रिलोचन ने नामदेव जी से प्रश्न किया कि ये अपने ईश्वर भजन और पुश्तैनी सिलाई छपाई के काम, इन दोनों में सामंजस्य कैसे बना पाते हैं. कैसे नामदेव जी स्वार्थ और परमार्थ के कार्यों में ताल-मेल बैठाते हैं. इस सवाल के जवाब में नामदेव जी ने मुस्कुराते हुए उसे उदाहरण देकर समझाया था, कि एक बालक कागज लाकर उसकी पतंग बनाकर उड़ाता है, साथ ही वह अपने साथियों से बात भी करता रहता है, लेकिन वह अपने ध्यान को अपनी पतंग से भटकने नहीं देता. उसी तरह ये भी ईश्वर को याद करते हुए अपने सांसारिक कर्म करते रहते हैं. अपनी आजीविका के लिए काम करते समय ये एक पल के लिए भी अपने मन को ईश्वर से दूर नहीं होने देते. जैसे सुनार गहने बनाते समय अपने सहयोगियों से बात भी करता रहता है, लेकिन वह अपने मन को गहने से दूर नहीं होने देता, उसी तरह परिवार के प्रति अपना फर्ज़ निभाते हुए भी इनका मन राम नाम का सुमिरन करता रहता

है. जिस तरह गाँव की युवतियां कुँए से पानी लाते समय सर पर गागर रख कर हंसी मजाक करते हुए आती हैं, लेकिन अपनी इस हंसी ठिठोली के चक्कर में वे अपने सर पर रखे मटके को नहीं भूलती, उनका ध्यान सर पर रखे मटके में निरंतर बना रहता है. जंगल में चारा चर रही गाय एक पल के लिए भी अपने बछड़े को नहीं भूलती, भले ही वह अपने उदर-पोषण के लिए चर रही होती है, किन्तु उसका ध्यान हर पल अपने बछड़े में ही रहता है. नामदेव जी भक्त त्रिलोचन को बताते हैं कि जैसे एक मां का ध्यान घर के काम करते हुए भी पालने में सो रहे अपने बच्चे की तरफ लगा रहता है, इन सबकी तरह ही अपनी पंच इन्द्रियों से काम करते हुए इनका चित्त भी अपने प्रभु से दूर नहीं होता, हमेशा उसके नाम की रटन में लगा रहता है. इस लिए हे त्रिलोचन इंसान को भी हर पल अपने काम काज के साथ अपना चित्त परमात्मा में भी लगाना चाहिए, और ये कार्य असम्भव नहीं है, इंसान कर सकता है.

31. राग - रामकली

वेद पुरान सासत्र आनंता गीत कबित न गावउगो,
अखंड मंडल निरंकार महि अनहद बेनु बजावउगो,
बैरागी रामहि गावउगो...
सबदि अतीत अनाहदि राता आकुल कै घरि जावउगो,
इड़ा, पिंगुला अउरु सुखमना पउनै बंधि रहावउगो,
चंदु सूरज दुइ सम करि राखउ ब्रहम जोति मिलि जावउगो,
तीरथ देखि न जल महि पैसउ जीअ जंत न सतावउगो,
अठसठि तीरथ गुरु दिखाए घट ही भीतरि नहावउगो,
पंच सहाई जन की सोभा भलो भलो न कहावउगो,
नामा कहै चितु हरि सिउ राता सुंन समाधि समावउगो...

इस भव सागर से पार उतरने के लिए नामदेव जी अपने इस अभंग में साकार परमेश्वर की भक्ति करने के बजाय निराकार परमात्मा का ध्यान करने की सलाह देते हैं. इस बारे में अपना अनुभव और ज्ञान साझा करते हुए नामदेव जी कहते हैं कि ईश्वर को पाने के लिए इन्हें सांसारिक वाद्यों के संगीत या बाहरी शब्दों की आवश्यकता नहीं है, इस लिए ये वेद-पुराणों के छंद या किसी अन्य शास्त्र में लिखे गीतों का सहारा ना लेकर उस निराकार ईश्वर के अविनाशी मंडल में स्थित अनहद वीणा के सुर में अपना मन लगाते हैं. मतलब ये अपने मन में बसे घट घट वासी परमात्मा का भजन करते हैं. इस दुनिया से अपना मोह भंग करके अब ये बैरागी बन गए हैं और अपने राम के भजन में लीन रहते हैं. नामदेव जी को भरोसा है कि ईश्वर ऐसा करने से अवश्य ब्रहम आत्मा के निकट पहुँच पायेंगे और इस संसार से मुक्त होंगे.

इनका कहना है कि इड़ा, पिंगुला और सुखमना नाड़ियों के संगम पर अपनी साँसों को स्थिर करके अपनी आत्मा को परमात्मा में लीन कर लेंगे और ब्रह्मरूप हो जायेंगे. नामदेव जी कहते हैं कि अपने गुरु से ज्ञान हासिल करने के बाद इन्हें अब अपने मोक्ष के लिए किसी भी तीर्थ पर जाकर जलचरों को परेशान करके स्नान करने की आवश्यकता नहीं है, तीर्थस्थान पर तो जल में मात्र तन का मैल धुल पाता है, जबकि इनके गुरु ने तो इन्हें मन का मैल धोने का रास्ता दिखा दिया है. अपने गुरु के बताये मार्ग पर चलने से अब भवसागर से पार उतरने का इनका मार्ग खुल गया है. नामदेव जी कहते हैं कि अपने अंतर्मन में देख लेने के बाद अब इनकी अपनी स्तुति, अपनी प्रशंसा की चाह भी खत्म हो गई है, क्यूंकि अपनी प्रशंसा सुनकर इंसान में घमंड उत्पन्न होता है और जो उसके मोक्ष के रास्ते में अवरोध खड़ा करता है. लिहाजा हर तरह के विषय-वियोग से मुक्त होकर इन्होंने अपने चित्त को पूरी तरह से ईश्वर सुमिरन में लगा लिया है.

32. राग - रामकली

माइ न होती बापु न होता, करमु न होती काइआ,
हम नही होते तुम नही होते, कवनु कहां ते आइआ,
राम कोइ न किस ही केरा, जैसे तरवरि पंखि बसेरा,
चंदु न होता सूरु न होता, पानी पवनु मिलाइआ,
सासतु न होता बेदु न होता, करमु कहां ते आइआ,
खेचर भूचर तुलसी माला, गुर परसादी पाइआ,
नामा प्रणवै परम ततु है सतिगुर होइ लखाइआ...

अपने इस अभंग में नामदेव जी महाराज ने गुरु की महिमा और एक साधक के जीवन में उसके महत्व को समझाया है. नामदेव जी कहते हैं कि इस सृष्टि की रचना से पहले न ही तो कोई किसी का पिता था और ना ही कोई माता थी. ना ही किसी का कोई शरीर था और जब कोई काया किसी स्वरूप में थी ही नहीं तो कर्म और उसके फल का विषय ही उत्पन्न नहीं होता था. ना ही तुम थे और ना ही हम थे, कौन कहां से आया है और कहां जाएगा, इस बात का भी ज़िक्र नहीं था. इस संसार में जीव को भेजने वाला अकेला वह प्रभु ही है, वही सबका साथी है, उसके अलावा इस संसार में कोई किसी का साथी नहीं है, सब मोह-माया है. यह संसार तो एक वृक्ष की तरह है, जहाँ पक्षी रेन बसेरा करने आते हैं और सूर्योदय होते ही वहां से विदा हो जाते हैं. इंसान के मन में भी जब तक अंधेरा रहता है, वह इस संसार में रहता है और जैसे ही गुरु कृपा से उसके मन में उजाला हो जाता है, वह आत्मिक तौर पर इस संसार से विदा ले लेता है, फिर भले ही उसका भौतिक शरीर इस संसार में रहता हो.

नामदेव जी फिर से सृष्टि की बात पर लौटते हुए बताते हैं कि उस युग में ना ही तो सूरज, ना ही चंद्रमा और ना ही पृथ्वी, आकाश, जल, वायु और अग्नि ये पंच तत्व थे, न ही कोई वेद शास्त्र थे और ना ही किसी तरह का धर्म कर्म होता था. कहते हैं कि उस समय अकेला ईश्वर था. नामदेव जी बताते हैं कि ये सभी ज्ञान इन्हें अपने गुरु की कृपा से मिला था, अपने सद्गुरु के कारण ही इन्हें परम तत्व का ज्ञान हो पाया था.

33. राग - रामकली

बानारसी तपु करै उलटि तीरथ मरै,
अगनि दहै काइआ कलपु कीजै,
असुमेध जगु कीजै सोना गरभ दानु दीजै,
राम नाम सरि तऊ न पूजै,
छोडि छोडि रे पाखंडी मन कपटु न कीजै,
हरि का नामु नित नितही लीजै,
गंगा जउ गोदावरि जाईऐ कुंभि जउ केदार न्हाईए,
गोमती सहस गऊ दानु कीजै,
कोटि जउ तीरथ करै तनु जउ हिवाले गारै,
राम नाम सरि तऊ न पूजै,
असु दान गज दान सिहजा नारी भूमि दान,
ऐसो दानु नित नितहि कीजै,
आतम जउ निरमाइलु कीजै आप बराबरि कंचनु दीजै,
राम नाम सरि तऊ न पूजै,
मनहि न कीजे रोसु जमहि न दीजै दोसु,
निरमल निरबाण पदु चीन्हि लीजै,
जसरथ राइ नंदु राजा मेरा राम चंदु,
प्रणवै नामा ततु रसु अंम्रितु पीजै...

इस अभंग के द्वारा भी नामदेव जी जनमानस को यही बताना चाहते हैं कि प्रभु प्राप्ति के लिए इस संसार में राम नाम सुमिरन से बढ़कर कोई भी कर्म नहीं है. राम नाम की नाव पर सवार होकर ही जीव इस भवसागर के पार उतर सकता है. नामदेव जी कहते हैं कि चाहे कोई आदमी अपने मोक्ष की कामना में बनारस में गंगा के तट पर जाकर उल्टा होकर तपस्या कर ले, या किसी और तीर्थ पर जाकर अपना शरीर त्यागे, कहीं किसी पवित्र स्थान पर जाकर

अपने आपको अग्नी के हवाले करे, अश्वमेघ यज्ञ का आयोजन करे, गुप्त रूप से सोना दान करे तो भी वह राम नाम की बराबरी नहीं कर सकता. इस तरह के पाखंडों से जीव को दूर रह कर सच्चे मन से प्रभु के नाम का स्मरण करना चाहिए, तभी उसके लिए मोक्ष का मार्ग खुल सकता है. भले ही जीव कुंभ स्नान के लिए गंगा और गोदावरी में जाकर गोते लगा ले, गोमती के किनारे जाकर गौदान कर ले, भले ही तपस्या के नाम पर हिमालय की हिम में अपने शरीर को गला डाले, लेकिन अगर उसने प्रभु के नाम का सुमिरन नहीं किया तो उसके ये सभी कर्म व्यर्थ हैं. राम नाम के सुमिरन बिना इन कृत्यों से उसे मोक्ष मिलना असम्भव है. चाहे कोई अश्व दान करे, गज दान करे, आभूषणों के साथ अपनी कन्या का दान करे, या भूमि दान करे और अपने मोक्ष की कामना में इस तरह के दान निरंतर करता रहे तो भी उसका मोक्ष नहीं हो सकता, क्यूंकि उसने प्रभु के नाम का स्मरण न करके वह व्यर्थ के झंझटों में ही पड़ा रहा. चाहे पूजा पाठ और यज्ञ आदि से अपने मन को निर्मल बनाने की कितनी भी कोशिश जीव कर ले और अपने वजन के बराबर सोने का दान भी कर ले तो भी ये सभी कृत्य राम नाम की बराबरी नहीं कर सकते. नामदेव जी कहते हैं कि ये सब करने पर भी इंसान को अगर मोक्ष की प्राप्ति नहीं होती तो उसे क्रोध नहीं करना चाहिए और ना ही पछताना चाहिए, बल्कि अपने मन को निर्मल के करके राम नाम के सुमिरण में लग जाना चाहिये, ऐसा करने से वह अवश्य मोक्ष के द्वार तक पहुँच पायेगा.

नामदेव जी कहते हैं कि दशरथ नंदन श्री राम का नाम ही सब कर्मों का सत है, उसमें सभी कुछ समाया हुआ है, इसलिए जीव को राम नाम के जप की ही आदत डालनी चाहिए.

34. राग - माली गौड़ा

धनि धनि ओ राम बेनु बाजै, मधुर मधुर धुनि अनहत गाजै,
धनि धनि मेघा रोमावली, धनि धनि क्रिसन ओढै कांबली,
धनि धनि तू माता देवकी, जिह ग्रिह रमईआ कवलापति,
धनि धनि बन खंड बिंद्राबना, जह खेलै स्री नाराइना,
बेनु बजावै गोधनु चरै, नामे का सुआमी आनंद करै...

अपने इस अभंग में नामदेव जी ने ईश्वर से सम्बन्ध रखने वाली प्रत्येक वस्तु, प्रत्येक स्थान और प्रत्येक इंसान को धन्य बताया है, क्यूंकि वो सब प्रभु के संपर्क में आकर पवित्र हो गये हैं. नामदेव जी कहते हैं कि परमात्मा की सुमधुर आवाज करने वाली बांसुरी धन्य है, जिसकी मीठी आवाज से समस्त ब्रह्माण्ड के जीव आकर्षित होकर आनंदित हो रहे हैं. यही नहीं उस बांसुरी की गूँज ने तो बादलों तक को रोमांचित कर दिया है, मुरली की मीठी धुन सुनकर वो भी हर्षित होकर नाचने और गरजने लगे हैं. यहाँ श्री कृष्ण को इन्होंने अपना प्रभु मानते हुए कहा है कि कृष्ण की वो कम्बली, वह ऊन जिससे वह कम्बली बुनी गई है और वह भेड़ जिसकी ऊन से कम्बली बनाई गई है, ये सब धन्य हैं, क्यूंकि इन्हें प्रभु का स्पर्श प्राप्त हुआ है. नामदेव जी कहते हैं की कृष्ण की माता देवकी भी धन्य है, जिनकी कोख से प्रभु ने जन्म लिया. वृन्दावन का कण कण धन्य है, जहाँ प्रभु ने बालक्रीड़ा की और जहाँ की मिट्टी ने प्रभु का स्पर्श किया. नामदेव जी कहते हैं की उनके स्वामी भगवान श्री कृष्ण जंगल में बांसुरी बजा कर गाय चराते हुए हमेशा अपने आनंद में रहते हैं और उनका साहचर्य पाकर जीव भी आनंदित हो रहे हैं.

35. राग - माली गौड़ा

मेरो बापु माधउ तू धनु केसौ सांवलिओ बीठुलाइ,
कर धरे चक्र बैकुंठ ते आये गज हसती के प्रान उधारीअले,
दुहसासन की सभा द्रोपती अंबर लेत उबारीअले,
गोतम नारि अहलिआ तारी पावन केतक तारीअले,
ऐसा अधमु अजाति नामदेउ तउ सरनागति आईअले...

अपने इस अभंग के माध्यम से नामदेव जी बताना चाहते हैं कि जब भी प्रभु के भक्त पर कोई विपत्ति आती है और भक्त सच्चे मन से मदद के लिए उन्हें पुकारता है तो प्रभु अपने भक्त की सहायता के लिए किसी न किसी रूप में पहुँच ही जाते हैं. नामदेव जी कहते हैं कि मेरा परमपिता मेरा सांवला विठ्ठल तू धन्य है, जो तू मगरमच्छ के चंगुल में फंसे हाथी की एक पुकार सुनकर उसकी मदद के लिए पहुँच गया और अपने चक्र से मगर का वध करके हाथी को विपदा से मुक्त किया. मेरा परमेश्वर तू धन्य है जो तूने दुशासन की सभा में अपने चीरहरण से व्यथित रुदन करती हुई द्रोपदी की पुकार सुनकर अगले ही क्षण वहां पहुंचा और उसकी साड़ी को विस्तार देकर उसकी लाज बचाई. अपने पति ऋषि गौतम के श्राप से शिला बन चुकी अहिल्या का उद्धार भी राम के अवतार में तुमने ही किया था. इन सबके अलावा और भी ना जाने कितने दीन भक्तों का उद्धार किया तुमने किया है. नामदेव जी कहते हैं कि उन दीन-हीनों की तरह ये भी अपने उद्धार की उम्मीद लेकर अपने प्रभु की शरण में आये हैं.

36. राग - माली गौड़ा

सभै घट रामु बोलै रामा बोलै, राम बिना को बोलै रे,
एकल माटी कुंजर चीटी भाजन हैं बहु नाना रे,
असथावर जंगम कीट पतंगम घटि घटि रामु समाना रे,
एकल चिंता राखु अनंता अउर तजहु सभ आसा रे,
प्रणवै नामा भए निहकामा को ठाकुर को दासा रे...

नामदेव जी के इस अभंग से पता चलता है कि हम सब का रचयिता एक परमेश्वर ही है, उसी से हमारी उत्पत्ति हुई है और वही हमारा भरण-पोषण भी कर रहा है. नामदेव जी कहते हैं कि उस परमपिता को तलाश करने की हमें आवश्यकता नहीं है. वह तो हम सबके अंतर्मन में समाया हुआ है. जिस प्रकार छोटे से छोटा और बड़े से बड़ा बर्तन कुम्हार एक ही तरह की मिटटी से बनाता है, उसी प्रकार चींटी से लेकर हाथी तक, स्थिर अस्थिर प्रत्येक वस्तु का सृजन एक ही परमात्मा द्वारा किया गया है. सब के अन्दर राम का अंश है और वही हमारा पालनहार है. उस परमेश्वर के नाम को हमें हमेशा याद रखना चाहिए, कभी चित्त से नहीं उतारना चाहिए. प्राणी को अपनी समस्त चिंताओं से मुक्त होकर ये चिंता करनी चाहिये कि हम परमात्मा को हमेशा कैसे याद रखें. नामदेव जी अपने उसी पालनहार निराकार के चरणों में नमन करते हुए कहते हैं कि ईश्वर से एकाकार हो जाने के बाद इंसान के मन से स्वामी और दास का भेद हमेशा के लिए लुप्त हो जाता है. इस लिए हे जीव परमात्मा से मिलन के लिए उसका ध्यान करो, कभी उसे अपने चित्त से अलग मत होने दो.

37. राग - मारू

चारि मुकति चारै सिधि मिलि कै दूलह प्रभ की सरनि परिओ,
मुकति भइओ चउहूं जुग जानिओ जसु कीरति माथै छत्रु धरिओ,
राजा राम जपत को को न तरिओ,
गुर उपदेसि साध की संगति भगतु, भगतु ताको नामु परिओ,
संख चक्र माला तिलकु बिराजित देखि प्रतापु जमु डरिओ,
निरभउ भए राम बल गरजित जनम मरन संताप हिरिओ,
अंबरीक कउ दीओ अभै पदु राजु भभीखन अधिक करिओ,
नउ निधि ठाकुरि दई सुदामै ध्रूअ अटलु अजहू न टरियो,
भगत हेति मारिओ हरनाखसु नरसिंघ रूप होइ देह धरिओ,
नामा कहै भगति बसि केसव अजहूं बलि के दुआर खरो...

इस अभंग में नामदेव जी बताते हैं कि अगर जीव अपने आपको पूरी तरह अपने स्वामी, अपने प्रभु को समर्पित कर देता है तो उसका धनी हो जाता है. राम नाम का भजन करने से वह चारों मुक्ति और चारों सीद्धियाँ पाने का अधिकारी हो जाता है, क्यूंकि ये सब परमात्मा की दासी हैं और अगर जीव ने परमात्मा को प्रसन्न कर लिया तो जीव को भी मुक्ति और सीद्धियाँ मिल जाती हैं. संसार में मात्र राम का नाम ही एक ऐसा मार्ग है जिस पर चल कर जीव अपने परमपिता को प्रसन्न करके मुक्ति प्राप्त कर सकता है. मुक्तियाँ और सिद्धियाँ मिलने पर जीव की ख्याति और उसका यश चारों दिशाओं में फ़ैल जाता है. कीर्ती उसके सर पर छत्र बनकर उसे हर तरह की विपतियों से बचाती है, इंसान अपने जीवन में हर तरह की चिंता से मुक्त हो जाता है. नामदेव जी कहते हैं कि राम नाम का जप करने से न जाने कितने लोग इस भवसागर से तर गये हैं, सो हे जीव अगर इस संसार से मुक्ति चाहता है तो निर्भीक होकर राम नाम का सुमिरन कर.

जो जीव अपने गुरु के बताये मार्ग पर चलकर साधु संतों की संगति करता है, लोग उसे भगत कहकर बुलाने लगते हैं. राम नाम का जप करने वाला भगत जब अपने आपको पूरी तरह शंख, चक्र, माला और तिलकधारी परमेश्वर को समर्पित कर देता है तो उसके तेज से यमराज भी डरने लगता है, मौत भी उससे दूर भागती है. कहने का तात्पर्य ये है कि मौत का भी भय उसके मन से निकल जाता है और जीव मुक्त हो जाता है. प्रभु के नाम का सहारा मिलने पर उसमें एक अनोखी शक्ति आ जाती है और जीव हर तरह के भय से मुक्त हो जाता है, उसके कई जन्मों के संताप मिट जाते हैं. प्रभु नाम का स्मरण करके मुक्ति पाने वाले जीवों का उदाहरण देते हुए नामदेव जी कहते हैं कि ईश्वर कृपा से ही राजा अमरीश को अभयदान प्राप्त हुआ था, प्रभु प्रताप से ही विभीषन ने कई वर्षों तक लंका पर राज किया, अपने सखा सुदामा को नौ-निधियां प्रदान करके उनके दारिद्रय को दूर करके उनके सभी कष्टों का निवारण किया, भक्त ध्रुव को आकाश में उचित स्थान देकर हमेशा के लिए अमर कर दिया और भक्त प्रह्लाद की पुकार सुनकर उसे बचाने के लिए दौड़े गए और हिरनाकश्यप का वध करके उसे मुक्ति प्रदान की. नामदेव जी कहते हैं कि भगवान तो अपने भक्त की भक्ति का भूखा है, उसे छप्पन भोग की चाह नहीं है और ना ही किसी और चढ़ावे की. वह प्रसन्न होता है तो अपने भक्त की सच्ची, निर्मल और पवित्र मन से की गई भक्ति से. यही वजह है कि आज भी परमात्मा अपने भक्त राजा बलि की रक्षा के लिए उसके दरवाजे पर खड़ा है.

38. राग - भैरव

रे जिहबा करउ सत खंड, जामि न उचरसि स्री गोबिंद,
रंगी ले जिहबा हरि कै नाइ, सुरंग रंगीले हरि हरि धिआइ,
मिथिआ जिहबा अवरें काम, निरबाण पदु इकु हरि को नामु,
असंख कोटि अन पूजा करी, एक न पूजसि नामै हरी,
प्रणवै नामदेउ इहु करणा, अनंत रूप तेरे नाराइणा...

अपने इस अभंग के माध्यम से नामदेव जी समझाना चाहते हैं कि इंसान को भांति भांति की पूजा पाठ, जप-तप छोड़कर बस ईश्वर का नाम लेना चाहिए. ईश्वर के नाम से ही जीव अपने विकारों और अपनी इन्द्रियों पर पर काबू पा सकता है. नामदेव जी अपनी जिव्हा को काबू में करने के बाद उससे कहते हैं कि हे जिव्हा, तू अब सब अटर पटर बोलना छोड़कर केवल प्रभु के नाम का सिमरन कर, तू सब कुछ भूल कर अपने आपको प्रभु के रंग में रंग ले. नामदेव जी कहते हैं कि अगर जिव्हा ने प्रभु के नाम का उच्चारण नहीं किया तो ये उसके हजारों टुकड़े कर देंगे. प्रभु प्राप्ति के लिए किसी और का नाम लेना व्यर्थ है, सब मिथ्या है. मात्र ये एक राम का नाम ही जीव को इस भवसागर से पार उतार सकता है. नामदेव जी कहते हैं कि जीव भले ही कितनी भी पूजा पाठ कर ले, तीर्थ या दान कर ले, किन्तु अगर उसने प्रभु के नाम का सुमिरन नहीं किया तो उसके द्वारा किया हुआ प्रत्येक कर्मकांड व्यर्थ है. उस परमात्मा के रूप अनंत हैं, लेकिन उसके नाम का सुमिरन करके उसे पाया जा सकता है. नामदेव जी कहते हैं कि उनकी मात्र इतनी सि अभिलाषा है कि ये हमेशा अपने प्रभु के नाम सुमिरन में लीन रहें.

39. राग - भैरव

पर धन पर दारा परहरी, ताकै निकटी बसै नरहरी,
जो न भजंते नाराइणा, तिन का मै न करउ दरसना,
जिन कै भीतरि है अंतरा, जैसे पसु तैसे ओइ नरा,
प्रणवति नामदेउ नाकहि बिना, ना सोहै बतीस लखना...

अपने इस अभंग में नामदेव जी ये बताना चाहते हैं कि हमारी इन्द्रियां कैसे इंसान के वश में रहती है, परमात्मा का सानिध्य और प्रेम किस तरह के जीव को प्राप्त होता है. नामदेव जी कहते हैं कि जो प्राणी पराये धन, पराई ज़मीन और पर स्त्री से दूरी बना कर रहता है, वही जीव परमात्मा के निकट होता है और उसे प्यारा होता है. नामदेव जी कहते हैं कि जो प्राणी ईश्वर को याद नहीं करता प्रभु के भजन से परहेज करता है, उसके ये दर्शन भी नहीं करना चाहते. और जो मनुष्य द्वेष और ईर्ष्या को मन में बैठाये हुए है, वो भी किसी काम के नहीं हैं. उन्हें भले ही इंसान की योनी में जन्म लिया हो, किन्तु उनकी दशा एक पशु के सामान ही है. क्यूंकि राग-द्वेष रखने वाला इंसान न ही तो प्रभु का भजन नहीं कर पाता और जो प्रभु के नाम का सुमिरन नहीं करता , वह इंसान कैसे हो सकता है. नामदेव जी कहते हैं कि जिस तरह से बिना नाक के कोई भी इंसान सुंदर नहीं दिख सकता, फिर चाहे उसमें छतीस गुण ही क्यूँ न हो. उसी तरह इंसान चाहे जितनी भी पूजा-पाठ कर ले, अगर उसने राम का नाम नहीं सुमिरा तो सब बेकार है. यानि कि राम का नाम ही जीव के मोक्ष के लिए सबसे उत्तम साधन है.

40. राग - भैरव

दूधु कटौरे गडवे पानी, कपल गाइ नामै दुहि आनी,
दूधु पीउ गोबिंद राइ, दूधु पीउ मेरो मनु पतीआइ,
नाहीं त घर को बापु रिसाइ...
सोइन कटोरी अमृत भरी, लै नामै हरि आगै धरि,
एकु भगतु मेरे हिरदै बसै, नामे देखि नराइनु हसै,
दूधु पीआइ भगतु घरी गइआ, नामे हरि का दरसनु भइआ...

नामदेव जी के इस अभंग से यह पता चलता है कि भगवान केवल भाव के भूखे हैं, अगर इंसान का भाव अच्छा है तो वे भिलनी के झूठे बेर भी खा लेते हैं. नामदेव जी कहते हैं कि अपनी बालावस्था में अपने पिता के आदेश पर अपनी कपिला गाय का ताज़ा दूध एक लौटे में भरकर ये भगवान को भोग लगाने के लिए मंदिर में गए. भगवान के समक्ष जाकर इन्होंने थोड़ा दूध एक सोने की कटोरी में निकाला और भगवान से विनती करते हुए बोले कि अगर भगवान उनका लाया दूध ग्रहण कर लेंगे तो इन्हें बेहद ख़ुशी होगी और अगर इन्होंने दूध का प्रसाद ग्रहण नहीं किया तो इनके पिता जी बहुत गुस्सा होंगे और इनसे नाराज हो जायेंगे. बालक नामदेव की ऐसी निर्मल और पवित्र भक्ति देख प्रभु हँसते हुए इनसे बोले कि इनके जैसे सरल हृदय वाले भक्त ही उनके मन में बसते हैं. यानि कि अपनी पहली ही भेंट में नामदेव जी ने अपनी सहजता से प्रभु का मन जीत लिया था. विठ्ठल के दुग्ध प्रसाद ग्रहण करने से नामदेव जी बेहद प्रसन्न थे, क्यूंकि प्रभु ने दुग्धपान करके इनकी बात रख ली थी और सबसे बड़ी बात ये थी कि इन्हें पहली ही बार में प्रभु के साक्षात् दर्शन हो गए थे.

41. राग - भैरव

मै बउरी मेरा रामु भतारु, रचि रचि ताकउ करउ सिंगारू,
भले निंदउ भले निंदउ भले निंदउ लोगु, तनु मनु राम पिआरे जोगु,
बादु बिबादु काहू सिउ न कीजै, रसना राम रसाइनु पीजै,
अब जीअ जानि ऐसी बनि आई, मिलऊँ गुपाल नीसानु बजाई,
उसतति निंदा करै नरु कोई, नामे श्रीरंगु भेटल सोई...

जो बात नामदेव जी ने अपने इस अभंग में कही है, ये मीरा बाई के कथन जैसी प्रतीत होती है. इस अभंग में एक नारी प्रभु के प्रति अपनी दीवानगी का वर्णन करते हुए कहती है कि उसने तो अपने परमात्मा को ही अपना पति मान लिया है और वह हर पल अपने उसी पति के ख्यालों में खोई रहती है, उसके अलावा उसे और कुछ भी दिखाई नहीं देता. अपने इस परमात्मा रूपी पति को रिझाने के लिए उसने भक्ति का श्रृंगार लिया है, जो शायद काम कर रहा है. वह कहती है कि प्रभु के प्रति उसकी ऐसी आसक्ति देखकर भले ही उसे कोई भला बुरा कहे, कोई उसकी जी भर कर निंदा करे, उसे किसी भी बात से कोई फर्क नहीं पड़ता. ये सब जानकर उसके मन को लेश मात्र भी दुःख नहीं होता. वह कहती है कि उसकी तो बस यही अभिलाषा है कि यूँ ही राम रस का आनंद लेती रहे और हमेशा अपने प्रभु का यशगान करते हुए परमात्मा के मोह रूपी अमृत में डूबी रहे. वह कहती है कि अब तो उसकी ऐसी हालत हो गई है कि उसे किसी से कोई डर नहीं लगता, अपने प्रीतम प्यारे गोपाल से वह डंके की चोट पर मिलती है. नामदेव जी कहते हैं कि इनकी दशा भी कुछ उस स्त्री जैसी ही है और अपनी भक्ति के दम पर इनका मिलन भी अपने श्रीरंग, अपने परमात्मा से हो गया है.

इस अभंग के द्वारा नामदेव जी जनमानस को बताना चाहते हैं कि प्रभु के प्रेम में डूबे प्राणी को किसी भी तरह के सुख-दुःख, मान-अपमान या निंदा-स्तुति की कोई परवाह नहीं रहती. वह तो बस अपने प्रभु के रंग में रंगा इन सब बातों को उस परमात्मा की मर्जी जानकर स्वीकार करता है. अपने प्रभु का आदेश मानकर वह हर हाल में खुश रहता है.

42. राग - भैरव

कबहू खीरि खांड घीउ न भावै. कबहू घर घर टूक मंगावै,
कबहू कूरनु चने बिनावै, जिउ रामु राखै तिउ रहीऐ रे भाई,
हरि की महिमा किछु कथनु न जाई...
कबहू तुरे तुरंग नचावै, कबहू पाइ पनहीओ न पावै,
कबहू खाट सुपेदी सुवावै, कबहू भूमि पैआरू न पावै,
भनति नामदेउ इकु नामु निसतारै, जिह गुरु मिलै तिह पारि उतारै...

अपने इस अभंग में नामदेव जी ये बता रहे हैं कि ईश्वर की लीला को कोई नहीं समझ सकता, वह चाहे तो पल में राजा को रंक बना सकता है और अगर उसकी इच्छा हो तो बंजर ज़मीन पर भी फसल लहलहा सकती है. नामदेव जी कहते हैं कि कभी कभी तो जीव पर प्रभु कृपा इतनी हो जाती है कि उसे हर दिन व्यंजन खाने को मिलते हैं, यहाँ तक कि पदार्थों की अधिकता के कारण मन उन पकवानों से उकता जाता है और कभी कभी प्रभु जीव को ऐसा दिन भी दिखा देता है जब इन्सान को भीख मांग कर अपना गुजारा करना पड़ता है, कूड़े के ढेर में से अनाज चुनकर खाना पड़ता है. लेकिन इंसान को हमेशा प्रभु की मर्जी का आदर करना चाहिए, उसके निर्णय पर कोई शिकायत नहीं करनी चाहिए. यानि कि प्रभु हमें जिस हाल में भी रखे, हमें हर हाल में खुश रहना चाहिए, तभी परमात्मा हमसे खुश होंगे. परमात्मा की मर्जी से कभी तो इंसान घोड़े पर सवार होकर उसे नचाता घूमता है और कभी कभी उसके सामने ऐसा वक़्त भी आता है जब पांव में पहनने के लिए उसे जूता भी नसीब नहीं होता. उस परमात्मा की कृपा से कभी तो सोने के लिए सफ़ेद रंग का बिछोना युक्त खाट मिल जाती है और कभी कभी ज़मीन पर बिछाने के लिए चटाई भी नसीब नहीं होती.

नामदेव जी कहते हैं कि इन सब परिस्थितियों को प्रभु की रज़ा मानकर आनंद पूर्वक जीवन बिताने का ज्ञान हमें एक सच्चे गुरु से ही मिल सकता है. नामदेव जी कहते हैं कि वह तो अपने गुरु की शिक्षा को मानते हुए एक परमात्मा के नाम का जप हर समय करते हैं, उस एक नाम से ही इनका जीवन आनंदमय हो गया है. प्रभु का सच्चा भक्त हमेशा अपने परमात्मा पर भरोसा करता है, उसे यकीन रहता है कि उसका मालिक उसके साथ कुछ भी बुरा नहीं होने देगा. उसी एक नाम के सहारे ही जीव इस दुनिया के जीवन-मरण के चक्र से छुटकारा पा सकता है, उसे मुक्ति मिल सकती है.

43. राग - भैरव

हंसत खेलत तेरे देहुरे आइआ, भगति करत नामा पकरि उठाइआ,
हीनड़ी जाति मेरी जादिम राइआ, छीपे के जनमि काहे कउ आइआ,
लै कमली चलिओ पलटाइ, देहुरै पाछै बैठा जाइ,
जिउ जिउ नामा हरि गुण उचरै, भगत जनां कउ देहुरा फिरै...

इस अभंग की रचना नामदेव जी ने उस समय की थी, जब औंढा नागनाथ में ये अपने समर्थकों के सामने भजन गा रहे थे, तब वहां के पंडित ने आकर इन्हें मंदिर के पीछे की तरफ जाकर भजन गाने के लिए कहा था, तब नामदेव जी वहां जाकर गाने लगे थे, क्यूंकि उस पुजारी ने इन्हें निम्न जाति का बताकर इनका अपमान किया था इस लिए इनका मन बड़ा व्यथित था. अपने मन की व्यथा को इस अभंग के द्वारा व्यक्त करते हुए नामदेव जी कहते हैं कि ये तो हंसी ख़ुशी मंदिर के द्वार पर अपने प्रभु की स्तुति का गान कर रहे थे, कि पुजारी ने इन्हें एक साधारण सी छीपा जाति का बताते हुए वहां से हटा दिया था. उस पंडित की बात से इनके मन में ये संशय उत्पन्न हुआ कि जब कोई साधारण जाति वाला प्रभु का भजन गाने के लायक नहीं है, उसे ईश्वर की भक्ति का अधिकार ही नहीं है तो प्रभु ने इन्हें ऐसी साधारण छीपा जाति में पैदा ही क्यूँ किया. उस पंडित की बात से आहत ये अपना सामान लेकर मंदिर कर पिछवाड़े आकर बैठ गए थे. वहां जब अपने भक्तों के कहने पर ये भजन गाने लगे तो प्रभु की कृपा से मंदिर का मुंह घूमकर इनकी तरफ हो गया था.

यहाँ नामदेव जी कहना चाहते हैं कि ईश्वर अपने भक्त की जाति-पाती नहीं देखता, वह तो बस उसके मन का भाव देखता है, सो आप भले ही किसी भी जाति या समूह से ताल्लुक रखते हों, अपने परमात्मा की भक्ति करने से आपको कोई नहीं रोक सकता. लेकिन अपने प्रभु के प्रति आपकी भक्ति एकदम शुद्ध और निस्वार्थ होनी चाहिए.

44. राग - भैरव

जैसी भूखे प्रीति अनाज, त्रिखावंत जल सेती काज,
जैसी मूढ़ कुटंब पराइण, ऐसी नामे प्रीति नराइण,
नामे प्रीति नराइण लागी, सहज सुभाइ भइओ बैरागी,
जैसी पर पुरखा रत नारी, लोभी नरु धन का हितकारी,
कामी पुरख कामनी पिआरी, ऐसी नामे प्रीति मुरारी,
साई प्रीति जि आपे लाए, गुर परसादी दुविधा जाए,
कबहु न तूटसी रहिआ समाइ, नामे चितु लाइआ सचि नाइ,
जैसी जैसे प्रीति बारिक अरु माता, ऐसा हरि सेती मनु राता,
प्रणवै नामदेउ लागी प्रीति, गोबिंदु बसै हमारै चीति...

अपने इस अभंग में नामदेव जी प्रभु के प्रति अपने प्रेम को प्रकट करते हुए कहते हैं कि जिस तरह एक भूखे इंसान को अपनी भूख के समय सबसे प्रिय अन्न लगता है, प्यासे जीव को जल प्रिय लगता है और अज्ञानी जीव को अपना परिवार सबसे प्यारा लगता है. लेकिन प्रभु की आसक्ति में बैरागी हो चुके नामदेव जी को अपने प्रभु से प्रेम है, इन्हें हर अवस्था में हर समय अपना परमात्मा प्यारा लगता है. नामदेव जी आगे कहते हैं कि जिस तरह से एक व्यभिचारिणी स्त्री को पर पुरुष से प्रीत होती है, एक लोभी इंसान को धन से और कामी पुरुष के मन में पर स्त्री के लिए प्रीत होती है, उसी तरह इनके मन में अपने प्रभु के लिए प्रीति है. संसार में इनकी सबसे अधिक आसक्ति अपने परमात्मा से है. किसी के भी प्रति हमारे मन में सच्चा प्रेम केवल प्रभु की कृपा से ही पैदा होता है और प्रभु की ये कृपा हम पर एक सच्चे गुरु की कृपा से ही हो सकती है. गुरु की कृपा से ही हमारे मन की दुविधाओं का नाश होता है और हमें परमात्मा का प्यार मिलता है.

अपने स्वामी से अब इनका ऐसा चित्त लग गया है, परमात्मा के साथ ये ऐसे बंधन में बंध गए हैं कि अब इनका ये बंधन टूटना असम्भव है, अब परमात्मा के नाम से कोई इन्हें अलग नहीं कर सकता. नामदेव जी कहते हैं कि जैसे एक मां अपने बच्चे से और बच्चा अपनी मां से निश्छल मोहब्बत करता है, वैसी ही निश्छल मोहब्बत ये अपने स्वामी से करते हैं. अपने स्वामी के मोह में इन्होंने सभी मायावी वस्तुओं से मुंह मोड़ लिया है. अपने स्वामी के रंग में अब ये ऐसे रंग चुके हैं कि अब इन पर कोई और रंग चढ़ने वाला नहीं है.

इस अभंग का सार ये है कि जब तक आपके मन में परमात्मा के प्रति सच्चा प्यार नहीं पनपेगा, आप दुनियादारी के फंदों से मुक्त हो ही नहीं सकते. जब प्रभु का प्रेम आपके हृदय में प्रवेश करने लगता है तो आपके मन के विकार अपने आप मन से बाहर का रास्ता ढूँढने लगते हैं और जब आपका हृदय पूर्ण रूप से परमात्मा का हो जाता है तो सभी विकार स्वतः नष्ट हो जाते हैं.

45. राग - भैरव

घर की नारि तिआगै अंधा, पर नारि सिउ घालै धंधा,
जैसे सिंबलु देखि सूआ बिगसाना, अंत की बार मूआ लपटाना,
पापी का घरु अगने माहि, जलत रहै मिटवै कब नाहि,
हरि की भगति न देखै जाइ, मारगु छोडि अमारगि पाइ,
मूलहु भूला आवै जाइ, अंम्रितु डारि लादि बिखु खाइ,
जिउ बेस्वा के परै अखारा कापरु पहिरि करहि सींगारा,
पूरे ताल निहाले सास, वा के गले जम का है फास,
जा के मसतकि लिखिओ करमा, सो भजि परि है गुर की सरना,
कहत नामदेउ इहु बीचारु, इन बिधि संतहु उतरहु पारि...

इस अभंग के द्वारा नामदेव जी बताना चाहते हैं कि किस तरह एक मनुष्य अपने शारीरिक सुख की खातिर अपने आंतरिक सुख को त्याग कर नर्क का भागी बनता है. नामदेव जी कहते हैं कि वासना के चलते अज्ञानी मनुष्य अंधा होकर अपनी स्त्री का त्याग कर देता है और पर स्त्री से अपना सम्बन्ध बना लेता है. ऐसा करके वह क्षण दो क्षण का शरीरिक सुख तो भोग लेता है, जो उसकी नज़रों में उचित है, लेकिन ईश्वर की नज़रों में उसका ये कृत्य बेहद अनुचित है और वह हमेशा से प्रभु कृपा से वंचित होकर अनजाने में अपने लिए नरक के द्वार खोल लेता है. जिस तरह से एक तोता सिम्बल के पेड़ का रूप देखकर उसकी तरफ आकर्षित होता है, लेकिन उसका फल खाने से ही वह अपनी जान भी गंवा बैठता है. यानि कि जीव को बाहरी आवरण की ख़ूबसूरती देख कर उस पर मोहित नहीं होना चाहिए. मोहित ही होना है तो अपने परमपिता परमात्मा पर होइए, ताकि आपके अगम का मार्ग सुलभ हो सके.

भौतिक सुखों की तरफ आँख बंद करके भागने वाला जीव जाने अनजाने में पाप करके हमेशा उसकी अग्नि में जलता रहता है. वह ईश्वर की भक्ति छोड़कर कुसंगति में पड़ जाता है. परमात्मा के सुमिरन से प्राप्त होने वाले अमृतपान जैसे वास्तविक आनंद को छोड़कर वह झूठा और अनैतिक जीवन जीने लगता है, जिससे जीवन-मरण के चक्र से उसे कभी छुटकारा नहीं मिलता. जिस तरह सोलह श्रृंगार करके नाच रही वैश्या के कोठे पर उसके रूप के दीवाने कामुक लोगों की महफ़िल लगती है और उसके नृत्य को देखकर अपने अगम से अनभिज्ञ ये लोग अश्लील इशारे करते आनंदित होते हैं, लेकिन ये नहीं जानते कि ऐसा करके ये उस सुंदर नर्तकी के रूप में न फंस कर अपने गले में यम का फंदा स्वयं डाल रहे हैं. ईश्वर कभी भी ऐसे लोगों को अपने पास नहीं फटकने देता और इनके मोक्ष के सभी मार्ग बंद हो जाते हैं. लेकिन जिस जीव के भाग्य में परमात्मा का प्रेम लिखा होता है, वह इस तरह के अनैतिक कामों में ना उलझ कर किसी सद्गुरु की शरण में जाता है और अपने सत्कर्मों द्वारा ईश्वर को पाने का यत्न करता है. नामदेव जी अपने भक्तों को समझाते हुए कहते हैं कि अगर उन्हें भवसागर से पार उतरना है तो किसी सच्चे सद्गुरु के मार्ग दर्शन में प्रभु नाम का सुमिरन करना होगा. इस अभंग का सार ये है कि अपने अगम को सुधारने के लिए इंसान को अनैतिक कामों से दूर रहकर सुकर्म करने चाहियें और प्रभु के नाम का सिमरन करना चाहिए.

46. राग - भैरव

संडा मरका जाइ पुकारे, पड़ै नही हम ही पचि हारे,
रामु कहै कर ताल बजावै, चटीआ सभै बिगारे,
राम नामा जपिबो करै, हिरदै हरि जी को सिमरनु धरै,
बसुधा बसि कीनी सभ, राजे बिनती करै पटरानी,
पूतु प्रहिलादु कहिआ नही मानै, तिनि तउ अउरै ठानी,
दुसट सभा मिलि मंतर उपाइआ, करसह अउध घनेरी,
गिरी तर जल जुआला भै राखिओ, राजा रामि माइआ फेरी,
काढी खड़गु कालु भै कोपिओ, मोहि बताउ जु तुहि राखै,
पीत पीतांबर त्रिभवण धणी, थंभ माहि हरि भाखै,
हरनाखसु जिनि नखह बिदारिओ, सुरि नर कीए सनाथा,
कहि नामदेउ हम नरहरि धिआवह, रामु अभै पद दाता...

अपने इस अभंग में नामदेव जी भक्त प्रह्लाद की कथा का वर्णन करते हुए और ईश्वर की महिमा बताते हुए उस परमात्मा की स्तुति करने को कहते हैं. नामदेव जी बताते हैं कि भक्त प्रह्लाद के दो शिक्षक संडा और मकी जाकर उनके पिता ह्निनाकश्यप से शिकायत करते हैं कि उनका बेटा प्रह्लाद बहुत ही जिद्दी और अड़ियल किस्म का बालक है, वे उसकी हरकतों से परेशान हो चुके हैं. वह गुरुकुल में शिक्षा ग्रहण करने की बजाय हर समय राम का नाम जपता रहता है, भजन करता रहता है. बात यहीं पर खत्म नहीं हो गई, शिक्षक कहते हैं कि प्रह्लाद स्वयं तो बिगड़ा हुआ था ही, उसने अपने साथ सभी सहपाठियों को भी राम नाम के सुमिरन में लगा दिया था. ये सुनकर ह्निनाकश्यप बहुत क्रोधित हुए और उन्होंने अपनी रानी से प्रह्लाद को समझाने के लिए कहा.

प्रहलाद की माता और ह्रिनाकश्यप की बड़ी रानी ने प्रहलाद को समझाते हुए कहा कि उसके पिता ने समस्त धरा को अपने कब्जे में किया हुआ है, सब लोग उनकी बात मानते हैं, उन्हें ही भगवान मानकर उनकी पूजा करते हैं, तब प्रह्लाद उनका पुत्र होने के बावजूद उनकी बात क्यूँ नहीं मानता, उन्हें ही ईश्वर मानकर उनकी पूजा क्यूँ नहीं करता, क्यूँ सारा समय राम के नाम का जाप करता रहता है. लेकिन अपने परमात्मा के सच्चे भक्त प्रह्लाद पर इन बातों का कोई असर नहीं हुआ और वह अपने राम नाम के जप में लगे रहे. जब इस बात का पता ह्रिनाकश्यप को चला तो उसने अपने दुष्ट साथियों के साथ प्रह्लाद को मारने की कई दफा कोशिश की, उसे पहाड़ से फिंकवाया, उसे बांध कर समुद्र में डलवाया, उसे अग्नि के हवाले भी किया, लेकिन हर पल राम नाम का सुमिरण करने वाले भक्त को उसके पालन हार परमपिता परमेश्वर ने किसी न किसी रूप में जाकर हर बार अपने भक्त को बचा लिया था. तब अंत में उसके पिता ने स्वयं अपनी खड़ग से उसका अंत करने का निश्चय किया और अपनी तलवार म्यान से बाहर निकालते हुए बोले कि अब वो देखेगा कि उसे अब कौन बचाएगा. इस पर भक्त प्रह्लाद ने अपने प्रभु को याद करते हुए कहा था कि उसे वही त्रिलोकी के नाथ बचायेंगे, जो हर जगह पर उपस्थित हैं, यहाँ तक कि दरबार के उस खम्बे में भी. और जैसे ही ह्रिनाकश्यप ने प्रह्लाद पर तलवार से वार करना चाहा, दरबार के एक खम्भे को तोड़कर नरसिंह अवतार में प्रभु निकले और चौखट के बीच में रख कर ह्रिनाकश्यप को अपने नाखूनों से चीर दिया. इस तरह प्रभु अपने सच्चे भक्त की पुकार सुनकर सही समय पर उसकी मदद के लिए पहुंचे थे.

नामदेव जी कहते हैं कि इस तरह से अपने भक्तों की रक्षा करने वाले परमात्मा का ही ये भी सुमिरन करते हैं और दूसरों से भी ऐसा ही करने के लिए कहते हैं, क्यूंकि इनका मानना है कि मात्र वही परमात्मा सबका उद्धार करने वाला है.

47. राग - भैरव

सुलतानु पूछै सुनु बे नामा, देखउ राम तुम्हारे कामा,
नामा सुलताने बाधिला, देखउ तेरा हरि बीठुला,
बिसमिल गऊ देहु जीवाइ, नातरु गरदनि मारउ ठांइ,
बादिसाह ऐसी किउ होइ, बिसमिल कीआ न जीवै कोइ,
मेरा कीआ कछू न होइ, करि रामु होइ है सोइ,
बादिसाहु चढ़ीओ अहंकारि, गज हसती दीनो चमकारि,
रुदनु करै नामे की माइ, छोडि रामु की न भजहि खुदाइ,
न हउ तैरा पूंगड़ा न तू मेरी माइ, पिंडु पड़ै तउ हरि गुन गाइ,
करै गजिंदु सुंड की चोट, नामा उबरै हरि की ओट,
काजी मुलां करहि सलामु, इनि हिंदू मेरा मलिआ मानु,
बादिसाह बेनती सुनेहु, नामे सर भरि सोना लेहु,
मालु लेउ तउ दोजकि परउ, दीनु छोडि दुनीआ कउ भरउ,
पावहु बेड़ी हाथहु ताल, नामा गावै गुन गोपाल,
गंग जमुन जउ उलटी बहै, तउ नामा हरि करता रहै,
सात घड़ी जब बीती सुणी, अजहु न आइओ त्रिभवण धणी,
पांखतण बाज बजाइला, गरुड़ चढ़े गोबिंद आइला,
अपने भगत परि की प्रतिपाल, गरुड़ चढ़े आए गोपाल,
कहहि त धरणि इकोडी करउ, कहहि त लै करि ऊपरि धरउ,
कहहि त मुई गऊ देउ जीआइ, सभु कोई देखै पतीआइ,
नामा प्रणवै सेल मसेलि, गऊ दुहाई बछरा मेलि,
दूधहि दुहि जब मटुकी भरी, ले बादिसाह के आगे धरी,
बादिसाहु महल महि जाइ, अउघट की घट लागी आइ,
काजी मुलां बिनती फुरमाइ, बखसी हिंदू मैं तेरी गाइ,
नामा कहै सुनहु बादिसाह, इहु किछु पतीआ मुझै दिखाइ,
इस पतीहा का इहै परवानु, साचि सीलि चालहु सुलितानु,
नामदेउ सभ रहिआ समाइ, मिलि हिंदू सभ नामे पहि जाहि,

जउ अब की बार न जीवै गाइ, त नामदेउ का पतीआ जाइ,
नामे की कीरति रही संसारि, भगत जनां ले उधरिआ पारि,
सगल कलेस निंदक भइआ खेदु, नामे नाराइन नाही भेदु...

इस अभंग में नामदेव जी ने बादशाह मुहम्मद बिन तुगलक के दरबार में अपने साथ घटित हुए एक किस्से का वर्णन किया है. ये उस समय की बात है जब नामदेव जी के भक्ति के प्रचार के कारण कुछ ब्राह्मण इनके विरोधी हो गए थे. उन ब्राह्मणों ने नामदेव की शिकायत मुहम्मद बिन तुगलक से कर दी थी और उस नास्तिक मगरूर बादशाह ने नामदेव जी को कैद करके अपने दरबार में बुलवा लिया था. नामदेव जी को बेइज्जत करने के इरादे से वह इनसे कहता है कि अगर इनके राम में इतना ही दम है, इतनी ही शक्ति है और अगर इन्हें अपने परमात्मा पर विश्वास है तो वहां मरी पड़ी गाय को ये जीवित करके दिखलायें और अगर इन्होने ऐसा नहीं किया तो वह इन्हें मौत के घाट उतार देगा. उनकी बात सुनकर नामदेव जी बोले कि भला ये एक मृत गया को जीवित कैसे कर सकते थे, मरा हुआ जीव भी भला कभी जीवित हुआ था. नामदेव जी ने कहा कि उनसे ये नहीं पायेगा, वो अगर इन्हें मारना चाहें तो भले ही मार दें. नामदेव जी के मुंह से इस तरह की बात सुनकर बादशाह को गुस्सा आ गया और उसने एक पागल हाथी नामदेव जी पर हमला करने के लिए छोड़ दिया. ये देख कर उस सभा में उपस्थित नामदेव जी की माता जोर जोर से विलाप करने लगी और नामदेव को समझाते हुए बोली कि ये राम का नाम छोड़कर इस बादशाह को ही अपना स्वामी क्यूँ नहीं मान लेता.

अपनी जननी के मुंह से इस तरह की बात सुनकर नामदेव जी ने कहा कि न ही तो वो इनकी माता हैं और ना ही ये उनके पुत्र. ये भला अपने राम के अलावा किसी और को अपना स्वामी कैसे मान सकते थे. इन्होंने कहा कि अगर ये बादशाह इनके शरीर को कुचल

भी डाले तो भी ये ऐसा नहीं कर सकते. उधर मस्त हाथी चिंघाड़ता हुआ इन पर वार करने के लिए आगे बढ़ने लगा, लेकिन नामदेव जी को राम नाम का सुमिरन करते देख इनके चरणों में प्रणाम कर लौट गया. ये देख बादशाह सोचने लगा कि बड़े बड़े काजी मुल्ला मेरे सामने सर झुकाए खड़े रहते हैं, किन्तु इस हिंदू ने तो उसका सर ही झुका दिया. बादशाह को गुस्से में देख नामदेव जी के साथ आये इनके अनुयायियों ने बादशाह से विनती की कि वे सब नामदेव जी के वजन के बराबर सोना देने को तैयार हैं, बादशाह अपनी हठ छोड़कर नामदेव जी को रिहा कर दे. ये सब सुनकर बादशाह बड़ी दुविधा में पड़ जाता है, वह कहता है कि अगर वो इन लोगों से रिश्वत लेता है तो दोजख में जायेगा और अपना दीन गंवाने के कारण उसे दुनिया में रहने का कोई हक नहीं रहेगा. उधर बादशाह अपनी दुविधा से बाहर नहीं आ पा रहा था और इधर नामदेव जी पाँव में बेड़ियाँ होने के बावजूद अपने हाथों से ताल देते हुए अपने गोपाल का भजन कर रहे थे. इनका कहना था कि एक बार गंगा-यमुना की धारा विपरीत दिशा में बह सकती है, लेकिन नामदेव जी अपने हरि के नाम का सुमिरन करना नहीं छोड़ सकते.

सभा में उपस्थति सभी लोग किसी चमत्कार के इंतजार में थे, सात घड़ी बीतने पर भी जब कुछ नहीं हुआ तो नामदेव के अनुयायियों सहित सभी लोग निराशा के अँधेरे में डूबने ही वाले थे कि तभी जोर से किसी पक्षी के पर फड़फड़ाने का शोर सुनाई दिया और सबने देखा कि अपने गरुड़ पर सवार प्रभु वहां अवतरित हुए. उनके आते ही एक अलौकिक रोशनी ने पूरी सभा को अपने कब्जे में ले लिया था. अपने प्रभु को अपने समक्ष देखकर नामदेव जी भाव विभोर हो उठे थे. भगवान ने उन्हें बेड़ियों से मुक्त करते हुए कहा कि अगर नामदेव जी कहें तो पूरी धरती को वे उल्टा पुल्टा कर दें, या फिर मरी हुई गाय को जिंदा करके अपने भक्त के अपने प्रभु में

विश्वास की लाज रख लें. उनकी बात सुनकर नामदेव जी मन ही मन मुस्कुराये और मन ही मन में मृत गाय को जीवित करने की प्रार्थना की. अगले ही पल वह गाय जीवित होकर खड़ी हो गई और उसका बछड़ा दूध पीने लगा. सभा में उपस्थित सब लोग इसे नामदेव जी द्वारा किया हुआ चमत्कार ही मान रहे थे. प्रभु अपना काम करके वहां से अंतर्ध्यान हो चुके थे. बछड़े की तृप्ति हो जाने के पश्चात् नामदेव जी के अनुयायियों ने उसे बांध दिया और दूध के मटके भर कर बादशाह के सामने रख दिए. ये सब देख बादशाह को अपने आप से बेहद ग्लानी हुई और वह अपने महल में चला गया. अन्दर से वह इतना दुखी था कि महल में जाते ही वह बीमार पड़ गया. उसे अपनी गलती का अहसास हो रहा था. उसने अपने काजी और मुल्लाओं के माध्यम से नामदेव जी से अपने किये की माफ़ी मांगी और अपने आपको बीमारी से मुक्त करने को कहा.

तब नामदेव जी ने बादशाह से कहा था कि उसे माफ़ करने वाला वह कोई नहीं है, हाँ अगर बादशाह नेकी के रास्ते पर चले अल्लाह के बन्दों को परेशां न करे तो इनका परमात्मा उसे माफ़ कर सकता है, क्यूंकि परमात्मा हर जीव में वास करता है. इस तरह से एक मुस्लिम बादशाह को नसीहत देने के बाद नामदेव जी की ख्याति जगत में और फैलने लगी थी.

ये सब देखकर नामदेव जी के निंदकों में और ज्यादा ईर्ष्या उत्पन्न होने लगी थी. लोग अब नामदेव जी को ईश्वर समान मानने लगे थे. यानि की नामदेव जी ईश्वर स्वरुप हो गए थे.

48. राग - भैरव

जउ गुरदेउ त मिलै मुरारि, जउ गुरदेउ त उतरै पारि,
जउ गुरदेउ त बैकुंठ तरै, जउ गुरदेउ त जीवत मरै,
सति सति सति सति सति गुरदेव, झूठु झूठु झूठु झूठु आन सभ सेव,
जउ गुरदेउ त नामु द्रिड़ावै, जउ गुरदेउ न दह दिस धावै,
जउ गुरदेउ पंच ते दूरि, जउ गुरदेउ न मरिबो झूरि,
जउ गुरदेउ त अंम्रित बानी, जउ गुरदेउ त अकथ कहानी,
जउ गुरदेउ त अंम्रित देह, जउ गुरदेउ नामु जपि लेहि,
जउ गुरदेउ भवन त्रै सूझै, जउ गुरदेउ ऊच पद बुझै,
जउ गुरदेउ त सीसु अकासि, जउ गुरदेउ सदा साबासि,
जउ गुरदेउ सदा बैरागी, जउ गुरदेउ पर निंदा तिआगी,
जउ गुरदेउ बुरा भला एक, जउ गुरदेउ लिलाटहि लेख,
जउ गुरदेउ कंधु नही हिरै, जउ गुरदेउ देहुरा फिरै,
जउ गुरदेउ त छापरी छाई, जउ गुरदेउ सिहज निकसाई,
जउ गुरदेउ त अठसठि नाइआ, जउ गुरदेउ तनि चक्र लगाइआ,
जउ गुरदेउ त दुआदस सेवा, जउ गुरदेउ सभै बिखु मेवा,
जउ गुरदेउ त संसा टूटै, जउ गुरदेउ त जम ते छूटै,
जउ गुरदेउ त भउजल तरै, जउ गुरदेउ त जनमि न मरै,
जउ गुरदेउ अठदस बिउहार, जउ गुरदेउ अठारह भार,
बिनु गुरुदेउ अवर नहीं जाई, नामदेउ गुर की सरणाई...

नामदेव जी द्वारा रचित इस अभंग को बाबा पूर्णदास जी जैसे कई संतों ने नामदेव जी की जीवनी का बीज मन्त्र बताया है. इस अभंग में जहाँ एक तरफ नामदेव जी ने गुरु की महिमा का वर्णन किया है, वहीं गुरु की की कृपा से इन्हें क्या हासिल हुआ इसका वर्णन भी किया गया है. नामदेव जी कहते हैं कि इनके गुरु परमात्मा का रूप हैं और उनसे मिलने के बाद ही इनका परमात्मा से मिलने का मार्ग प्रशस्त हुआ था.

एक गुरु ही है जो आपकी जीवित अवस्था में ही आपको भवसागर को पार करने की युक्ति आपको सिखाता है. उनके बताये मार्ग पर चलकर ही जीव मोक्ष प्राप्त कर सकता है और प्रभु के निजधाम पहुँच सकता है. अपने गुरु की सेवा में ही सच्चा सुख छुपा है, गुरु की सेवा ही सच्ची सेवा है, बाकि के कर्मकांड सब झूठ हैं, एक छलावा हैं. क्यूंकि इन कर्मकांडों का सहारा लेकर भवसागर के पार नहीं उतरा जा सकता, जबकि गुरु की सेवा करके मोक्ष मिल सकता है. एक गुरु ही है, जो परमात्मा से हमारी आत्मा को जोड़ता है और परमात्मा से जुड़ते ही हमारा मन ब्रह्माण्ड में भटकने से रुक जाता है और एकाग्र चित्त होकर जीव प्रभु के ध्यान में लग जाता है. गुरु द्वारा बताये नाम का सिमरन करने से जीव अपने पाँचों विकारों - काम, क्रोध, लोभ, मोह और ईर्ष्या पर काबू पा सकता है. जिस जीव पर गुरु की कृपा हो जाती है तो उसके सभी दुःख और चिंताएं दूर हो जाते हैं और जीव का जीवन सुखमय हो जाता है. गुरुदेव की कृपा से ही अनहद शब्द का अमृत जीव को प्राप्त होता है और जीव को प्रभु की सम्पूर्ण लीला का आभास होने लगता है. गुरु कृपा से ही मनुष्य की आत्मा में नाम रूपी सच्चे स्रोत की उत्पत्ति होती है जिसमें डूबकर वह परम आनंद का अनुभव करता है और सभी शारीरिक और मानसिक व्याधियों से मुक्त हो जाता है. गुरु के सानिध्य में भजन करने से जीव को दिव्य दृष्टि प्राप्त होती है, जिससे वह त्रिलोकदर्शी हो जाता है. धरती, आकाश और पाताल में घटित होने वाली घटनाओं के बारे में जानने में वह सक्षम हो जाता है. गुरु की कृपा से ही जीव इस संसार से मुक्त हो पाता है और उसकी आत्मा को अलौकिक आकाश में भ्रमण का सौभाग्य प्राप्त होता है, संसार में उसे यश मिलता है. अपने गुरु ज्ञान के चलते इंसान बैरागी हो जाता है, उसके मन में सांसारिक मोह माया के प्रति वैराग्य उत्पन्न हो जाता है और वह तन्मयता से हरि भजन में लग जाता है. गुरु कृपा से ही इसान को जीव को परनिंदा के पाप से बच पाता है.

गुरु कृपा से जीव के मन से सुख-दुःख, अपना-पराया, भला-बुरा आदि का भाव दूर होकर उसमें प्रभु प्रेम का उदय होता है और जीव हर तरह के अच्छे -बुरे के भाव से मुक्ति पा लेता है. गुरु के आशीर्वाद से इंसान के भाग्य का लिखा बदल जाता है और जीव पर परमात्मा की मेहर बरसने लगती है. गुरु की कृपा होती है तो एक क्षीण हो चुकी दीवार भी परमात्मा नहीं गिरने देता, लेकिन अपने भक्त की लाज रखने के लिए परमात्मा मंदिर के द्वार की दिशा तक बदल देता है. जब गुरु की मेहर होती है तो टूटे छप्पर को भी परमात्मा आकर एक पल में दुरुस्त कर जाता है. गुरु कृपा के चलते ही जीव घर बैठे बैठे ही 68 आतंरिक और सांसारिक तीर्थों का आनंद प्राप्त कर लेता है और जीव अपने गुरु द्वारा बख्शे गए नाम तीर्थ के जरिये मन की मैल को धोने में सफल होता है. सच्चे मन से गुरु की सेवा करने से जीव वह सब पा लेता है जो एक हठ योगी तपस्या करके पाता है. एक मात्र अपने गुरु की सेवा करने से ही जीव को बारह सेवाओं जैसा पुण्य मिलता है. क्यूंकि एक गुरु की सेवा में ही हर किस्म की सेवा समाहित है और गुरु की सेवा से ही मायावी पदार्थों का विष ईश्वर के नाम रूपी अमृत में परिवर्तित हो जाता है. गुरु सेवा के चलते ही जीव के सारे भ्रम और संशय नष्ट हो जाते हैं और जीव इस संसार में आवागमन के बंधन से मुक्त हो जाता है, जीव यम के भय से छूट जाता है. गुरु सेवा और उनकी कृपा से ही जीव इस भवसागर से पार उतर जाता है और जीवन-मरण के झंझट से हमेशा के लिए मुक्त हो जाता है. अगर कोई जीव सच्चे मन से अपने गुरु की सेवा करता है उसकी हर आज्ञा का पालन करता है तो फिर उसे अठारह स्मृतियों में बताये गए किसी भी तरह के पूजा-पाठ या कर्म-कांड की आवश्यकता नहीं पड़ती और ना ही अठारह तरह के फल दान करने और अठारह तरह की लकड़ी को हवन में डालने की ज़रुरत पड़ती. इस सभी का फल मात्र अपने सदगुरु की सेवा से ही जीव को मिल जाता है.

नामदेव जी कहते हैं कि चाहे कुछ भी हो जाये, ये अपने गुरु के चरणों को छोड़कर कहीं नहीं जायेंगे. इनकी पूजा-पाठ, हवन-यज्ञ, दान-तीर्थ आदि सभी इनके अपने गुरु ही हैं. इनकी भक्ति अपने गुरु के प्रति है और इनकी उस निस्वार्थ भक्ति में ही पूरा संसार समाया हुआ है.

49. राग - भैरव

आउ कलंदर केसवा, करि अबदाली भेसवा,
जिनि आकास कुलह सिरि कीनी कउसै सपत पयाला,
चमर पोस का मंदरु तेरा इह बिधि बने गुपाला,
छपन कोटि का पेहनु तेरा सोलह सहस इजारा,
भार अठारह मुदगरु तेरा सहनक सभ संसारा,
देही महजिदि मनु मउलाना सहज निवाज गुजारै,
बीबी कउला सउ काइनु तेरा निरंकार आकारै,
भगति करत मेरे ताल छिनाए किह पहि करउ पुकारा,
नामे का सुआमी अंतरजामी फिरे सगल बेदेसवा...

अपने इस अभंग के माध्यम से नामदेव जी बताना चाहते हैं कि इनका प्रभु सर्व व्यापी है. संसार के कण कण में वह समाया हुआ है. हिंदू, मुस्लिम, ईसाई आदि हम सब जीवों की आत्मा उस परमपिता परमात्मा के अलौकिक प्रकाश से ही रोशन है. एक बाद गाँव में पधारे एक फकीर को देख नामदेव जी कहते हैं,'हे प्रभु आप आज ये कैसे कलंदर वाले वेश में पधारे हैं. आप तो आज एक ऐसे अब्दाली (मुस्लिम फकीर) के भेष में आये हो जिसके सर पर आसमान का ताज शोभायमान है और सात पाताल की जैसे आपने पादुका पहन रखी हैं. हे गोपाल संसार के जीवों का चमड़े से बना शरीर आपके लिए एक मंदिर समान है, जहाँ आप निवास करते हैं. हे स्वामी छप्पन करोड़ बादलों का आपने चोला धारण किया हुआ है और सोलह हज़ार प्रकृति का आपने पायजामा पहना हुआ है. प्रकृति के छोटे छोटे पत्तों से तैयार किये हुए अठारह भार से बना हुआ आपका व्यायाम करने वाला मुगदर है.

दुसरे शब्दों में आपके मुगदर में प्रकृति की सारी वनस्पति समाई हुई है. ये पूरा संसार आपकी भिक्षा मांगने वाला पात्र है और सब जीवों की देह मस्जिद है जहाँ मन रूपी मौलाना ज्ञान रूपी नमाज़ अदा करके खुश होता है. संसार की कमला रूपी माया से आपका निकाह हुआ है, जो निराकार प्रभु को साकार प्रभु में बदलने की क्षमता रखती है. अर्थात निराकार प्रभु का जीव से साक्षात्कार करवाती है. हे मेरे मालिक आपकी मर्जी से ही भक्ति करते हुए मेरे हाथ से किसी ने खड़ताल छीन लिए, अब आप ही बताओ मैं किसके पास जाकर इस बात की शिकायत करूं.' नामदेव जी कहते हैं कि इनका स्वामी एक जगह बंध कर रहने वाला नहीं है, वह तो अन्तर्यामी है. इस ब्रह्माण्ड की हर रचना में वह बसता है. इस अभंग का सार यही है कि परमात्मा किसी एक जाति, धर्म, स्थान या व्यक्ति विशेष का नहीं है, वह पूरी सृष्टि का है. वह अन्तर्यामी है.

50. राग - बसंतु

**साहिब संकटवै सेवकु भजै, चिरंकाल न जीवै दोऊ कुल लजै,
तेरी भगति न छोडउ भावै लोगु हसै, चरन कमल मेरे हीअरे बसैं,
जैसे अपने धनहि प्रानी मरनु मांडे, तैसे संत जनां राम नामु न छाडै,
गंगा गइआ गोदावरी संसार के कामा, नाराइणु सुप्रसंन होइ त
सेवकु नामा...**

इस अभंग के माध्यम से नामदेव जी अपने अनुयायियों को समझाना चाहते हैं कि हमारे जीवन में में आने वाले सुखों और दुखों का प्रभाव हमारी ईश्वर भक्ति पर नहीं पड़ना चाहिए. दुःख आने पर उससे घबराकर और सुख में आनंदित होकर अपने प्रभु को नहीं भूलना चाहिए. सुख और दुःख दोनों को प्रभु की समान भेंट मानकर आदर करना चाहिए. नामदेव जी कहते हैं कि अगर ईश्वर हम पर कभी कष्टों का बोझ डाल देते हैं तो उससे घबराना नहीं चाहिए. अगर संकट के समय हमने अपने परमात्मा से मुंह मोड़ लिया तो हमारे माता-पिता दोनों के कुल को लज्जित होना पड़ेगा और हमारा जीवन मौत से बदतर हो जायेगा. नामदेव जी कहते हैं कि परमात्मा के प्रति इनकी दीवानगी पर ज़माना चाहे कितना भी क्यूँ न हंस ले, ये परमात्मा की भक्ति करना कभी नहीं छोड़ेंगे. क्युंकी जिस तरह से एक संसारी प्राणी अपने धन के लिए मरने मारने के लिए तो तैयार हो जाता है, लेकिन मेहनत से कमाए अपने धन को अपने हाथ से नहीं जाने देता. उसी प्रकार एक संत भी किसी अवस्था में भी राम का सुमिरन करना नहीं त्याग सकता. क्यूंकि इनके लिए तो राम का नाम ही सबसे बड़ा धन है.

गंगा, गया और गोदावरी में जाकर तीर्थ करना दुनियावी रीत है, सांसारिक कर्मकांड हैं, लेकिन ये सब करने से परमात्मा प्रसन्न नहीं होता, परमात्मा उससे प्रसन्न होता है जो बिना एक बार भी चूके हर अवस्था का मुकाबला करते हुए उसका नाम लेता है. अपने ऐसे ही भक्त पर परमात्मा की कृपा होती है.

51. राग - सारंग

लोभ लहरि अति नीझर बाजै, काइआ डूबै केसवा,
संसारु समुंदे तारि गोउबिंदे, तारि लै बाप बीठुला,
अनिल बेड़ा हउ खेवि न साकउ, तेरा पारु न पाइआ बीठुला,
होहु दइआलु सतिगुरु मेलि तू, मोकउ पारि उतारे केसवा,
नामा कहै हउ तरि भी न जानउ, मोकउ बाह देहि बाह देहि
बीठुला...

'गुरु बिन नहीं ज्ञान गुसांई', इसी बात को अपने इस अभंग में नामदेव जी ने समझाया है कि आध्यात्मिक जीवन में एक गुरु का महत्व क्या होता है. नामदेव जी परमात्मा को संबोधित करते हुए कहते हैं कि इस संसार रूपी समुद्र में इनकी आत्मा लोभ की लहरों के बीच गोते खा रही है. इनमें इतना सामर्थ्य नहीं है कि ये इस भयानक समुद्र को पार कर सकें. क्यूंकि भवसागर को पार करने के लिये इन्हें प्रभु को जानना होगा, और कौन से मार्ग पर चलकर प्रभु को जाना जाये ये, ये एक सच्चा सद्गुरु ही बता सकता है. यानि कि इस भवसागर को ये अपने गुरु के मार्ग दर्शन में ही पार कर सकते हैं. नामदेव जी विनती करते हुए कहते हैं कि ईश्वर बहुत दयालु है और वह इन्हें इस भयानक समुद्र से पार लगा दे. ये कहते हैं कि इनकी नाव इस विशाल और विकट भवसागर में गोते खा रही है, ये इस डूबती हुई नाव को खेने में असमर्थ हैं, अगर ईश्वर ने सहारा देकर उसे पार नहीं लगाया तो ये डूब जाएगी. एक बात ये भी कि इन्हें दूसरे छोर पर खड़ा ईश्वर नज़र ही नहीं आ रहा, ऐसे में इनकी समझ में ही नहीं आ रहा है कि ये अपनी नाव को किस ओर लेकर जाएँ.

अब क्यूंकि ईश्वर तक पहुँचने का मार्ग तो इन्हें इनका सद्गुरु ही बतलायेगा, सो ये परमात्मा से कहते हैं कि अगर आप ऐसा नहीं कर सकते तो मेरी भेंट मेरे सद्गुरु से करवा दो ताकि वो मेरी नाव को खे कर इस भवसागर के पार लगाने में मेरी सहायता करे सकें. ये कहते हैं कि हे परमात्मा इन्हें तैरना नहीं आता है सो सद्गुरु के रूप में आकर वही इनकी बांह पकड़कर इन्हें पार करवा दें. नामदेव जी के इस दोहे का सार यही है कि बिना सद्गुरु के परमात्मा को पाना असम्भव है और सद्गुरु भी साक्षात् परमात्मा का ही स्वरूप होता है.

52. राग - सारंग

सहज अवलि धूड़ि मणी गाडी चालती,
पीछै तिनका लै करि हांकती,
जैसे पनकत थरू टिटि हांकती,
सरि धोवन चाली लाडुली,
धोबी धोवै बिरह बिराता,
हरि चरन मेरा मनु राता,
भणति नामदेउ रमि रहिआ,
अपने भगत पर करि दइआ...

इस अभंग के नाध्य्म से नामदेव जी ये समझाना चाहते हैं कि पाप के मैल से दूषित कपड़ों की गठरी लेकर न ही तो परमात्मा से मिला जा सकता है और ना ही जीव इस भवसागर से पार हो सकता है. नामदेव जी कहते हैं कि काम, क्रोध, लोभ, मोह, ईर्ष्या आदि से दूषित कपड़ों से लदी गाड़ी सत्संग के समुद्र में बहुत धीमे धीमे चलती है, पाप के बोझ से उसके पहिये कर्मों के दल दल में फंस जाते हैं, इस गाड़ी को केवल जीव की सद्बुद्धि ही अपने सुकर्मों और भगवद भजन की छड़ी से हांक कर इसे अपनी मंजिल तक पहुंचा सकती है, यानि कि इंसान के अच्छे कर्म और भगवान के प्रति उसकी सच्ची श्रद्धा और विश्वास ही उसे दुनियादारी के झंझटों से मुक्त कर सकता है.

जैसे मैले कपड़े धोने के लिए धोबन नदी के घाट पर ले जाती है, उसी प्रकार धोबी रूपी सद्गुरु हमारे पापों की गठरी को धोने के लिए सत्संग के घाट पर जीव को ले जाता है, वहां पर आत्मा की शुद्धि के पश्चात् ही वह जीव को परमात्मा से मिलवाने के लिए अपने मार्गदर्शन में राम नाम की गाड़ी में उसे सवार करके उसकी मंजिल तक उसे पहुंचाता है.

नामदेव जी कहते हैं कि ईश्वर सब जीवों में समाया हुआ है और हमेशा अपने भक्तों पर दया करता है, उनका कल्याण करता है. बशर्ते भक्त को भी उनके करीब तक पहुँचने का सही मार्ग मिल जाये, जो एक सद्गुरु की कृपा से ही मिल सकता है.

53. राग - सारंग

काएं रे मन बिखिआ बन जाइ, भूलौ रे ठगमूरी खाइ,
जैसे मीनु पानी महि रहै, काल जाल की सुधि नही लहै,
जिहबा सुआदी लीलित लोह, ऐसे कनिक कामनी बाधिओ मोह,
जिउ मधु माखी संचै अपार, मधु लीनो मुखि दीनी छारु,
गऊ बाछ्ह कउ संचै खीरू, गला बांधि दुहि लेइ अहीरू,
माइआ कारनि सरमु अति करै, सो माइआ लै गाडै धरै,
अति संचै समझै नही मूढ़ी, धनु धरती तनु होइ गइओ धूड़ि,
काम क्रोध त्रिसना अति जरै, साध संगति कबहू नही करै,
कहत नामदेउ ता ची आणि, निर्भय होइ भजीऐ भगवान...

अपने इस अभंग में नामदेव जी मनुष्य को सलाह देते हैं कि अगर उन्हें भवसागर से पार उतरना है तो विषय-विकारों से दूर रहना होगा. क्यूंकि विषय-विकार से मलिन आत्मा लेकर प्रभु से मिल पाना असंभव है. नामदेव जी अपने मन के माध्यम से जनमानस को समझाते हुए कहते हैं,'हे मन तू क्यूँ विषय वासनाओं के जंगल में भटक रहा है, ये लोभ-मोह, काम-क्रोध, ईर्ष्या-द्वेष और आकांक्षाएं तुम्हे इस संसार में जीने नहीं देंगी, तुम इनके जाल में फंस कर रह जाओगे. ये वो ठग हैं जो आपसे परमार्थ की पूँजी ठग लेंगे. इन्हें अपना मित्र समझना तुम्हारी सबसे बड़ी भूल और तुम्हारी अज्ञानता है. जैसे जल में रहने वाली मछली इस बात से अनजान रहती है कि शिकारी द्वारा फेंके गए मांस की आड़ में एक काँटा भी है और वह बेचारी मांस के लालच में उस कांटे में फंस जाती है.

अपनी जीभ के स्वाद के चक्कर में वह उस कांटे को भी निगल जाती है और अपनी जान गँवा बैठती है. उसी प्रकार मनुष्य भी इन विकारों के जाल में फंस कर अपना जन्म और अपनी आत्मा को नष्ट कर लेता है.

मधु मक्खी रात दिन मेहनत करके इतना शहद इक्कठा करती है, शायद इस लोभ में कि वह बाद में उसके काम आएगा, या उसके बच्चे उसे खायेंगे, लेकिन एक दिन 'कोई' आकर धुआं उड़ाता है, जिससे मधुमक्खी अपना शहद का छत्ता छोड़ा देती है और वह 'कोई' उसका जमा किया हुआ शहद लेकर चला जाता है और बेचारी मधुमक्खी के हिस्से आता है धुआं और मिट्टी. गाय का दूध भी उसके या उसके बच्चे को नहीं मिलता, बल्कि ग्वाला आकर उसका दूध निकाल कर ले जाता है. इसी तरह इंसान अपने भविष्य के लिए परमार्थ का धन जमा करने की बजाय भौतिक धन जोड़ता रहता है. धन जोड़ने के लिए वह रात दिन मेहनत करता है, लेकिन जब वह मरता है तो वो धन उसके किसी काम नहीं आता, उसका शरीर मिटटी में मिल जाता है और आत्मा मुक्ति के बिना संसार में भटकती रहती है है. अगर उसने परमार्थ किया होता, राम नाम का धन कमाया होता तो शायद उसका अगम का मार्ग सुगम हो जाता और उसकी आत्मा जीवन-मरण के झंझट से मुक्त हो जाती. नामदेव जी कहते हैं कि मूर्ख मनुष्य काम-क्रोध और तृष्णा के चक्कर में तो भागता रहता है, विषय विकारों की अग्नि में जलने के लिए तो इसके पास वक़्त ही वक़्त है, लेकिन सद्पुरुषों की संगति के लिए इसके पास जरा भी समय नहीं है. हे मूर्ख मानव, तू ये सब छोड़कर प्रभु की शरण में जा और निर्भीक होकर अपने मालिक का सिमरन कर.

54. राग - सारंग

बदहु की न होड माधउ मो सिउ,
ठाकुर ते जनु जन ते ठाकुरु खेलु परिओ है तो सिउ,
आपन देउ देहुरा आपन आप लगावै पूजा,
जल ते तरंग तरंग ते है जलु कहन सुनन कउ दूजा,
आपहि गावै आपहि नाचै आपि बजावै तूरा,
कहत नामदेउ तूं मेरो ठाकुरु जनु ऊरा तू पूरा...

अपने इस अभंग में नामदेव जी समझाना चाहते हैं कि ईश्वर और उसके भक्त का बड़ा ही गूढ़ सम्बन्ध है. दोनों ही एक दूसरे के बिना अधूरे हैं. अपनी इसी बात को साबित करने के लिए ये अपने प्रभु को संबोधित करते हुए कहते हैं कि ईश्वर चाहे तो इनसे शर्त लगा ले, ये साबित कर देंगे कि भक्त और भगवान एक ही सिक्के के दो पहलू हैं, ये दोनों एक दूसरे के पूरक हैं, भक्त है तो भगवान है और भगवान है तो भक्त है. इन दोनों में से एक की अनुपस्थिति दुसरे को स्वतः ही लुप्त कर देती है. ईश्वर ही मंदिर हैं, वही मंदिर के देवता हैं और वही मंदिर के पुजारी भी. यानि की परमात्मा ही सब कुछ है, लेकिन इस बात को बताने वाला उसका बनाया हुआ भक्त ही है. वही अपने परमात्मा की सही व्याख्या कर सकता है. जिस प्रकार जल और हवा के प्रभाव से बनने वाली उसकी लहरें देखने में तो अलग अलग नज़र आती हैं, लेकिन हैं दोनों एक ही, दोनों ही जल हैं. उसी प्रकार भक्त और भगवान देखने में तो अलग अलग दिखाई देते हैं लेकिन हैं एक ही.

नामदेव जी कहते हैं कि वह ईश्वर ही गाने वाला है, वही नाचने वाला भी और वही तुरही बजाने वाला भी. ये सब परमात्मा का ही खेल है, जिसमें परमात्मा स्वामी हैं और भक्त सेवक. इस खेल में ईश्वर और इनके ये भक्त अलग नहीं हैं. दोनों एक ही समान हैं, दोनों में मात्र एक ही फर्क है कि प्रभु अपने आप में पूर्ण हैं और भक्त अभी अधूरा है, उसे परमात्मा ही पूर्ण कर सकता है, एक योग्य सद्गुरु का मार्गदर्शन देकर.

55. राग - सारंग

दास अर्निन मेरो निज रूप,
दरसन निमख ताप त्रई मोचन परसत मुकति करत ग्रिह कूप,
मेरो बांधी भगतु छडावै बांधै भगतु न छूटै मोहि,
एक समै मोकउ गहि बांधै तउ फुनि मो पै जबाबु न होइ,
मैं गुन बंध सगल की जीवनि मेरी जीवनि मेरे दास,
नामदेव जा के जीअ ऐसी तैसो ता के प्रेम प्रगास...

इस अभंग के माध्यम से नामदेव जी यह बताना चाहते हैं कि वैसे तो परमात्मा कुछ भी करने में समर्थ है, लेकिन वह है अपने भक्त के वश में. यह बात एक बार नामदेव जी को अपने साक्षात्कार के दौरान स्वयं प्रभु ने कही थी. भगवान ने नामदेव जी से कहा था कि जो उनका अनन्य भक्त है, वह उनका ही रूप है. इसलिए उनके ऐसे भक्त के दर्शन मात्र से ही प्राणी के शारीरिक, आध्यात्मिक और मानसिक तीनों तरह के संताप मिट जाते हैं और अगर उनके स्पर्श का सौभग्य प्राप्त हो गया तो प्राणी दुनियादारी के कुँए से निकल कर मोक्ष के रास्ते पर चलता दिखाई देता है. भगवन कहते हैं,'मेरे सच्चे भक्त में इतनी शक्ति होती है कि मेरे बांधे बंधन को वह खोल सकता है, लेकिन अगर उसने अपने मोह में मुझे बांध लिया तो मैं उसे नहीं खोल सकता. मैं उसके बंधन से अपने आपको नहीं छुड़ा सकता. मैं उसके उसके शुभ गुणों में बंधकर उसके वश में हो जाता हूँ. ये सत्य है कि मैं अपने भक्तों सहित सभी प्राणियों के जीवन का आधार हूँ. लेकिन ये भी सच है कि मेरा जीवन आधार मेरे सच्चे भक्त हैं, उनके बिना मेरा कोई अस्तित्व नहीं है.'

इस बात पर नामदेव जी कहते हैं कि परमात्मा की ये बात जिस जीव के मन में जितनी गहरी बैठ जाती है, वैसा ही प्रकाश उसके मन में होता है, उतना ही वह परमात्मा के करीब चला जाता है.

56. राग - मलार

सेवीले गोपाल राइ अकुल निरंजन,
भगति दानु दीजै जाचहि संत जन,
जांचै घरि दिग दिसै सराइचा,
बैकुंठ भवन चित्रसाला सपत लोक सामानि पूरीअले,
जां कै घरि लछिमी कुआरी,
चंदु सूरजू दीवड़े,
कउतकु कालु बपुड़ा कोतवालु सुकरा सिरी,
सु ऐसा राजा स्री नरहरी,
जां कै घरि कुलालु ब्रहमा चतुर मुखु डांवड़ा,
जिनि बिस्व संसारु राचीले,
जा कै घरि ईसरु,
बावला जगत गुरु तत सारखा गिआनु भाखीले,
पापु पुंनु जां कै डांगीआ हुआरै चित्र गुपतु लेखीआ,
धरमराइ परूली प्रतिहारु,
सो ऐसा राजा स्री गोपालु,
जां कै घरी गण गंधरब रिखी,
बपुड़े ढाढीआ गावतं आछै,
सरब सासत्र बहु रूपीआ अनगरुआ आखाड़ा,
मंडलीक बोल बोलहि काछे,
चउर ढूल जांचै है पवनु,
चेरी सकति जीतिले भवणु,
अंड टूक जांचै भसमती,
सो ऐसा राजा त्रिभवण पती,
जां कै घरी कूरमा पालु,
सहस्त्र फनी बासकु सेज वालुआ,
अठारह भार बनासपती मालणी,

छिनवै करोडी मेघ माला पाणी हारिआ,
नख प्रसेव जां कै सुरसरी,
सपत समुंद जां कै घड़थली,
एते जीअ जां कै वरतणी,
सो ऐसा राजा त्रिभुवन धणी,
जां कै घरी निकट वरती अरजनु,
ध्रू प्रह्लादु अंबरीकु,
नारदु नेजै सिथ बुध गण गंधरब बानवै हेला,
एते जीअ जां कै हहि घरी,
सरब बिआपक अंतर हरी,
प्रणवै नामदेउ तां ची आणी,
सगल भगत जां कै निसाणी...

अपने इस अभंग में नामदेव जी बताते हैं कि इस सृष्टि के पालक की क्या आभा है, उसकी क्या शान है. कैसे देवी- देवता और प्रकृति प्रभु की सेवा में हाथ बांधे खड़े रहते हैं. नामदेव जी कहते हैं कि सृष्टि के इस रक्षक के बारे में कोई नहीं जानता कि ये कहां से आया है और ये किस कुल का है. लेकिन कुल रहित और माया रहित ये परमात्मा सुमिरन के लायक है. इसके सुमिरन के बिना सृष्टि के किसी भी जीव का उद्धार होना मुश्किल है. संत महात्मा इस परमपिता की भक्ति का ही दान मांगते हैं.

समस्त ब्रह्माण्ड का ये एक ऐसा राजा है जिसके घर के चारों तरफ दसों दिशाओं का शामियाना फैला हुआ है, समस्त बैकुंठ जिसका दीवानखाना है और सातों लोकों में इसका स्वरुप व्यापक रूप से फैला हुआ है. ये ऐसा वन्दनीय सम्राट है जिसके महल में लक्ष्मी हमेशा निवास करती है. जिसके महल में चाँद और सूरज दीपक बनकर उजाला फैलाते हैं. सब लोगों में भय उत्पन्न करने वाला काल भी मासूम कोतवाल बनकर इनके महल की शोभा बढ़ा रहा है. परमपूज्य इस राजा के महल में सृष्टि के रचयिता ब्रह्मा आसीन हैं, दुनिया में मौत को ही यथार्थ बताकर जीवों

को ज्ञान देने वाला शिव शंकर भी इनके महल में उपस्थित है. इस परमात्मा के मुख्य दरवाजे पर पाप और पुण्य पहरेदार बनकर पहरा दे रहे हैं और जीव के कर्मों का हिसाब-किताब रखने वाले चित्रगुप्त इनके लेखाकार हैं. जिसके नाम से ही जीव कांप उठता है वह धर्मराज इनके दरबार का दरबान है, सेवक है. ऐसा हमारा मालिक सबका रखवाला है, आराधना के योग्य है. ऐसे मेरे राजा के दरबार में स्वर्गलोक में देवताओं के सेवक गंधर्व इनका यशगान करते हैं. नामदेव जी कहते हैं कि वेद शास्त्रों के अलग अलग झुण्ड हैं, अलग अलग अखाड़े हैं जहाँ ऋषि मुनि सब अपनी अपनी भाषा बोलते हैं. यानि कि परमात्मा के नाम को छोड़कर किसी में एकात्मकता नहीं है, हर कोई अपने अपने हिसाब से कर्मकांड में लगा हुआ है. ये गोपाल ऐसे राज्य के स्वामी हैं जहाँ पवन देवता इनके दरबार में चंवर ढुलाता है. समूचे संसार पर विजय हासिल करने वाली आदिशक्ति माया इनकी दासी बनकर इनकी सेवा कर रही है. ब्रह्माण्ड का एक टुकड़ा इनकी रसोई का एक चूल्हा है, ऐसा तीन लोक का मालिक इनका राजा है, एक ऐसा राजा जिसके यहाँ विष्णु रूपी कछुआ पलंग है और हजारों फण वाला शेषनाग जिसकी शैया.

जगत की समस्त वनस्पति इनके बाग की मालन है और छियान्वे करोड़ बादलों का समूह इनके यहाँ पानी भरने वाले कहार. गंगा जिसके नाखूनों का रक्त है और सात समन्दर जिनके पानी के घट हैं और सृष्टि के बाकि के जीव जिसके घर के बर्तन आदि वस्तुएँ हैं. सो तीनों लोकों का स्वामी हमारा राजा सर्वशक्तिमान है. ये एक ऐसा सम्राट है जिसके घर में अर्जुन, भक्त ध्रुव, भक्त प्रह्लाद, राजा अम्बरीश, नारदमुनि, नेजा, सिद्ध, बुद्ध, एवं गण-गंधर्व जिसके स्वजन हैं. इनके घर में अनेक जीव रहते हैं, जिनमें सब में मेरे परमात्मा का वास है. नामदेव जी कहते हैं कि सब जीवों को उस परमात्मा का सुमिरण करना चाहिए, जिसके सारे भक्त उसकी कीर्ती बढ़ाने वाले हैं.

57. राग - मलार

मोकउ तूं न बिसारि तू न बिसारि, तू न बिसारि रामईआ,
आलावंती इहु भ्रमु जो है मुझ उपरि सभ कोपिला,
सूदु सूदु करि मारि उठाइओ कहा करउ बाप बीठुला,
मूए हूए जउ मुकति देहुगे मुकति न जानै कोइला,
ए पंडीआ मो कउ ढेढ कहत तेरी पैज पिछं उडी होइला,
तू जु दइआलू क्रिपालु कहीअतु हैं अतिभुज भइओ अपारला,
फेरी दीआ देहुरा नामे कउ पंडीअन कउ पिछवारला...

नामदेव जी ने इस अभंग की रचना भी उसी समय की थी, जब मंदिर के पुजारियों ने इन्हें निम्न जाति का बताकर भजन करने से मना कर दिया था और इन्हें बेईज्जत करके वहां से भगा दिया था. ऐसे में दुखी मन से नामदेव जी ने अपने प्रभु को याद करते हुए कहा था,'हे मेरे पालनहार, दुनिया मेरे साथ कैसा भी व्यवहार करे, लेकिन प्रभु आप मुझे अपने से दूर मत करना आप मुझे मत भुला देना. यहाँ इस मंदिर के पुजारियों को ये भ्रम है कि मुझे देव पूजन का कोई अधिकार नहीं है, क्यूंकि मैं ब्राह्मण नहीं हूँ निम्न जाति का हूँ. इस बात को लेकर मंदिर के सभी लोग मुझसे नाराज हैं. मुझे शूद्र कहकर ये लोग मार मार कर मंदिर से भगा देते हैं. हे मेरे परमेश्वर अब आप ही बताओ कि मैं क्या करूं और कहां जाकर अपना दुखड़ा रोऊँ. जीते जी मेरी ऐसी अवस्था करके अगर मारने के बाद मुझे मुक्ति दी भी तो उसका क्या लाभ, मेरी उस मुक्ति का किसे पता चलेगा. ये पंडित लोग मुझे ढेढ कह कर मेरा अपमान करते हैं, इसमें आपका ही अपमान है, क्यूंकि मैं तो अपने आपको पूर्ण रूप से आपको ही समर्पित कर चूका हूँ.'

नामदेव जी की व्यथा सुनकर प्रभु ने एक पल भी नहीं लगाया और मंदिर का मुंह घुमाकर इनकी दिशा में कर दिया और मंदिर का पिछला भाग पेड़ों की तरफ. इस अभंग का सार ये है कि परमात्मा की नज़रों में कोई छोटा बड़ा नहीं है, सब बराबर हैं और अपने भक्त की पुकार सुनकर प्रभु तुरंत उसकी व्यथा दूर करते हैं.

58. राग - कानड़ा

ऐसो राम राइ अंतरजामी, जैसे दरपन माहि बदन परवानी,
बसै घटा घट लीप न छीपै, बंधन मुकता जासु न दीसै,
पानी माहि देखु मुखु जैसा, नामे को सुआमी बीठलु ऐसा...

इस अभंग के माध्यम से नामदेव जी ये समझाना चाहते हैं कि किसी भी जीव को दूसरे का बुरा ना ही तो कभी करना चाहिए और ना ही इस बात को कभी मन में लाना चाहिए. क्यूंकि अपने मन की बात कोइ अन्य जीव जाने या न जाने लेकिन परमात्मा सब जानता है और दूसरे का बुरा सोचने मात्र से परमात्मा नाराज़ हो सकता है. इस अभंग में नामदेव जी कहते हैं कि जिस प्रकार दर्पण में हमारा अक्स हमें साफ दिखाई देता है, उसी तरह परमात्मा को भी हर एक प्राणी के मन की बात साफ साफ पता चलती है. घट घट में बसने वाला परमात्मा मोह माया से तो मुक्त है ही, साथ ही वह जीवन मरण के बंधन से भी मुक्त है. नामदेव जी कहते हैं कि जिस प्रकार पानी में अपना मुख दिखाई देता है, उसी प्रकार इनका परमात्मा इन्हें साफ साफ दिखाई देता है. इस अभंग का सार ये है कि परमपिता परमात्मा सर्वव्यापी और हर जीव की आत्मा में बसने वाला है. उसे हमारे हर कर्म और कृत्य की जानकारी रहती है, लिहाजा हमें बुरे कामों से बचना चाहिए.

59. राग - प्रभाती

मन की बिरथा मनु ही जानै कै बूझल आगै कहीऐ,
अंतरजामी रामु रवांई मै डरु कैसे चहीऐ,
बेधीअले गोपाल गोसाई,
मेरा प्रभु रविआ सरबे ठाई,
मानै हाटु मानै पाटु मानै है पासारी,
मानै बासै नाना भेदी भरमतु है संसारी,
गुर कै सबदि एहु मनु राता दुबिधा सहजि समाणी,
सभो हुकमु हुकमु है आपे निरभउ समतु बीचारी,
जो जन जानि भजहि पुरखोतमु ता ची अबिगतु बाणी,
नामा कहै जगजीवनु पाइआ हिरदै अलख बिडाणी...

अपने इस अभंग में नामदेव जी प्रभु की सर्व व्यापकता के बारे में बताते हैं. नामदेव जी कहते हैं कि इनके मन की व्यथा ये ही जान सकते हैं या वो सर्वव्यापी प्रभु, क्यूंकि वो तो अन्तर्यामी है और सबके मन की व्यथा जानता है. अब इनका मन भी पूरी तरह से उस अन्तर्यामी में लिप्त हो गया है, इसलिए अब इनके मन से डर निकल गया है, हर तरफ से अब निर्भय हो गए हैं. सर्वव्यापक इनके गोपाल ने इन्हें अपनी शरण में ले लिया है और इनका हर कष्ट दूर हो गया है. पहले इनका मन बड़ा चंचल था, कभी बाज़ार में भटकने चला जाता था तो कभी किसी शहर की गलियों में रमता फिरता था. लेकिन जब से इनके मन में ईश्वर का वास हुआ है, इनके मन ने भटकना छोड़ दिया है. अब इनका मन अपने सद्गुरु के रंग में रंग गया है, गुरु की वाणी सुनने के बाद इनके मन की चंचलता खत्म हो गई है और इनके मन की सारी दुविधाएं भी मिट गई हैं. अब इनके मन पर मात्र इनके गुरु का ही हुक्म चलता है, जो स्वयं परमात्मा की कृपा से निर्भीक हैं और उनकी दया से ही ये भी निडर हो पाए हैं.

अब अपने गुरु की कृपा से इन्हें इतना ज्ञान हो गया है कि इन्हें अब सृष्टि में घटने वाली सभी घटनाओं के पीछे प्रभु की कृपा दिखाई देने लगी है. नामदेव जी कहते हैं कि अपने गुरु की कृपा से इनकी आत्मा का परमात्मा से मिलन हो गया है और अब परमात्मा को खोजने के लिए इन्हें बाहर भटकने की आवश्यकता नहीं है, परमात्मा अब इनके हृदय में वास करने लगा है.

60. राग - प्रभाती

आदि जुगादि जुगादि जुगो जुगु ता का अंतु न जानिआ,
सरब निरंतरी रामु रहिआ रवि ऐसा रूपु बखानिआ,
गोबिंदु गाजै सबदु बाजै, आनद रूपी मेरो रामईआ,
बावन बीखू बानै बीखे बासु ते सुख लागिला,
सरबे आदि परमलादि कासट चंदनु भैइला,
तुम्ह चे पारसु हम चे लोहा संगे कंचनु भैइला,
तू दइआलु रतन लालु नामा साचि समाइला...

अपने इस अभंग में नामदेव जी कहते हैं कि परमात्मा का अस्तित्व इस सृष्टि में युगों युगों से है, अनंत काल से है. परमात्मा के बारे में ज्ञानी, ध्यानी, महात्मा या देवात्मा कोई नहीं बता सकता. सूरज के प्रकाश की तरह परमात्मा भी का अस्तित्व भी समस्त ब्रह्माण्ड में फैला हुआ है. प्रभु नाम का अनहद शब्द इस संसार के हर जीव की आत्मा में आनंद स्वरुप समाया हुआ है. जिस प्रकार जंगल में मौजूद चन्दन के पेड़ की खुश्बू का आनंद जंगल का प्रत्येक जीव उठाता है, उसकी सुगंध के दायरे में आकर हर जीव और वृक्ष आदि सब सुगंध युक्त हो जाते हैं, उसी तरह परमात्मा के करीब आते ही जीव का जीवन भी सुगन्धित हो उठता है, उसका भी उद्धार हो जाता है. नामदेव जी कहते हैं कि इनके प्रभु पारस हैं जिनके स्पर्श मात्र से लोहे जैसी काम-क्रोध और मोह-माया जैसे जंग से दूषित इनकी आत्मा शुद्ध होकर कुंदन बन गई है.

नामदेव जी कहते हैं ईश्वर दया का सागर है, एक अमूल्य रत्न है. ऐसे सत्यस्वरूप परमात्मा की आराधना में नामदेव जी हमेशा लीन रहते हैं.

61. राग - प्रभाती

अकुल पुरख इकु चलितु उपाइआ,
घटि घटि अंतरि ब्रह्मु लुकाइआ,
जीअ की जोति न जानै कोई,
तै मै कीआ सु मालूमु होई,
जिउ प्रगासिआ माटी कुंभेऊ,
आप ही करता बीठुलु देउ,
जीअ का बंधन करमु बिआपै,
जो किछु कीआ सु आपै आपै,
प्रणवति नामदेउ इहु जीउ चितवै सु लहै,
अमरु होइ सद आकुल रहै...

अपने इस अभंग में नामदेव जी जीव को उनके कर्मों के बारे में सचेत करते हैं. इनका मानना है कि इंसान कर्म करते समय उसके फल के बारे में नहीं सोचता, लेकिन परमपिता उसके हर अच्छे बुरे कर्म को देखता है और उसका उचित फल भी जीव को देता है. नामदेव जी कहते हैं कि उस परमपिता ने एक अनोखी लीला रची हुई है, इस सृष्टि में जीव जंतुओं का सृजन करके उनके हृदय में वह स्वयं जाकर बैठ गया है. यानि की अलग अलग नज़र आने वाले सभी जीव उस परमात्मा का ही रूप हैं. जीव को ये तो पता रहता है कि वह क्या कर रहा है, लेकिन वह इस बारे में अनभिज्ञ है कि जो वह कर रहा है, उसे करवाने वाला कौन है ? उसकी आत्मा में प्रकाश डालने वाला कौन है ? अपनी ही आत्मा को वह ठीक से जान नहीं पाता. जिस तरह से एक कुम्हार अपनी मिट्टी से अलग अलग तरह के लाखों बर्तनों का सृजन करता है, उसी तरह ईश्वर भी अपनी माया से अलग अलग रंग रूप और स्वभाव के असंख्य जीवों का सृजन करता है. देखने में तो ईश्वर का बनाया जीव स्वतंत्र नज़र आता है, लेकिन ईश्वर ने सभी को कर्म और फल की डोर से बांध रखा है.

अज्ञानी जीव को ईश्वर की ये डोर नज़र नहीं आती, इसी लिए वो बिना कुछ सोचे समझे कर्म किये जाता है, उसे यही लगता है कि वह जो भी कर रहा है अपनी मर्जी से कर रहा है, उसके कर्म के पीछे परमात्मा की मर्जी से वह बेखबर रहता है. नामदेव जी कहते हैं कि ये उस जीव को प्रणाम करते हैं, जिसने परमात्मा को ध्यान में रखकर कर्म किये. उस जीव ने मोक्ष चाहा था जो उसे मिला और वह जीव मर कर भी परमात्मा में समाकर अमर हो गया. इस अभंग का सार ये है कि हमें अपने कर्म करते समय इस बात का अहसास होना चाहिए कि ईश्वर सब देख रहा है.

"श्री नामदेव जी चालीसा"

चौपाई -

हाथ जोड़ विनती करूँ, सुनो गोणाई के लाल
तन मन के विकार हरो प्रभु, दूर करो जंजाल
अज्ञानी आया शरण तिहारी, मन में है अंधकार
दीनहीन पर दया करो स्वामी, करो भव सागर पार

जय नामा तुम संत हमारे, दीन दुखी के कष्ट निवारे
संत शिरोमणि नामा प्यारे, भक्तों के सब काज संवारे
दामा शेठ के सुत तुम प्यारे, गोणाई की आँख के तारे
पंढरपुर के थे तुम वासी, भीमा नदी थी तुमरी दासी
बचपन संतों बीच बिताये, धर्म ग्रंथ तुम्हरे मन ध्याये
विठ्ठल के तुम भक्त थे ऐसे, बजरंगी थे राम के जैसे
नामदेव की निश्छल भक्ति, विठ्ठल जी ने दीनी शक्ति
तुम्हरे हाथों भोजन पाया, भक्ति देख विठ्ठल भरमाया
सम्मुख अपने विठ्ठल पाए, संत शिरोमणि तब कहलाये
जिनके हृदय विठ्ठल बिराजे, अनहद घंटा मन में बाजे
नामदेव विठ्ठल गुण गाये, हरि चरणन में सब सुख पाए
काम क्रोध लोभ सब हरहीं, मन मंदिर में नामा धरहीं
विसोबा खेचर गुरु मिले ऐसे, अंधकार में दीपक जैसे
निराकार का ज्ञान कराये, विषय विकार सब मन के मिटाए
ईश्वर तुम्हरे अंतर्मन में, पशु पक्षी और हर कण कण में
नामा पर विठ्ठल का साया, पागल हाथी बस में आया
नामा के रामा गाय जियाए, मुग़ल बादशाह शीश नवाए
नामदेव विठ्ठल को माने, ऊंच नीच कुछ भी नहीं जाने
जनाबाई का जीवन संवारा, शिष्या बनाई दिया सहारा
शरण तिहारी जो भी आया, सुख शांति का सब धन पाया
कर्मकांड नामा छुड़वाए, भाई-चारे का पाठ पढ़ाये

भक्ति भाव जन जन में जगाया, जात-पात का भेद मिटाया
रेत समंदर नहीं कहीं छाया, नाहीं दीखे जल की माया
नामा ने जब ध्यान लगाया, सूखी बावड़ी जल ऊधलाया
चहुँ दिसा ईश्वर की माया, ईश्वर है हम सब में समाया
नामा तू ईश्वर का प्यारा, तुझ सा संत नहीं संसारा
अभंग का इनके पाठ करे जो, प्रभु के दर्शन पाए जन वो,
हर अभंग में विठ्ठल भक्ति, ये भक्ति नामा की शक्ति
भट्टीवाल कुआं खुदवाये, जल मीठा तालाब बनाये
केशो खत्री का कोढ़ उतारे, बोहरा दास शिष्य बने प्यारे
कितने ही चमत्कार दिखाए, बुद्धिहीन सब शरण में आये
अंत समय जब निकट था आया, प्रभु चरणों में शीश झुकाया
विठ्ठल सम्मुख जाकर बोले, हृदय के अपने सब पट खोले
विठ्ठल ने थे जो काज बताये, नामा ने सब कर के दिखाए
हरि विठ्ठल मुझे अनुमति दीजे, नामा को अपनी शरण में लीजे
विठ्ठल ने जब आज्ञा दीन्हीं, नामदेव तब समाधी लीन्हीं
छोड़े सब सुख दुःख व्याधि, नामदेव फिर लई समाधि
ब्रह्माण्ड भी गूंजा उस पल, विठ्ठल विठ्ठल जय हरि विठ्ठल
नामदेव जी की महिमा जो गाए, जन्म मरण से मुक्ति पाए
हेमंत है प्रभु दास तुम्हारा, तुमरा नाम जपे दिन सारा

नामदेव जी के नाम से, बन जाते सब काज
आगम सफल हो जात है, प्रभु बचाते लाज
चालीसा ये श्री नामा का, जो गाए सुबह शाम
ब्रह्मा विष्णु सब लहें, बोलो जय श्री राम
बोलो जय श्री राम, बोलो जय श्री राम

आरती श्री नामदेव जी

ओम् जय श्री नामदेवा, बाबा जय श्री नामदेवा
भक्तों के बाबा प्यारे, सबके काज़ संवारे,
करें विट्ठल सेवा, ओम् जय श्री नामदेवा...

ब्रह्मज्ञानि तुम बाबा, योगी महा दानी,
बाबा योगी महा दानी,
विट्ठल के प्रिय सेवक, भक्तों की नैया के खेवक,
तुम हो फल दानी, ओम् जय श्री नामदेवा...

छीपा कर्म धराय, तुम हो कर्मयोगी,
बाबा तुम हो कर्मयोगी,
दुःख मुक्ताय स्वामी, कष्ट मिटाय स्वामी,
तुमसा नहीं जोगी, ओम् जय श्री नामदेवा...

कष्ट भंजन तुम स्वामी, सबके दुःख हर्ता,
बाबा सबके दुःख हर्ता,
दीन हीन के स्वामी, तुम हो अन्तर्यामी,
सबके सुख कर्ता, ओम् जय श्री नामदेवा...

वंश वर्धनाय बाबा, घर खुशहाल करो,
बाबा घर खुशहाल करो,
घर आँगन सब चहके, बगिया हमारी महके,
सबकी गोद भरो, ओम् जय श्री नामदेवा...

मन निर्मल करो स्वामी, विषय विकार हरो,
बाबा विषय विकार हरो,
भक्ति में अपनी लगाओ, श्रद्धा-प्रेम बढ़ाओ,
कृपा हम पे करो, ओम् जय श्री नामदेवा...

संत शिरोमणि स्वामी, कृपा हम पे करो,
बाबा पीड़ा सबकी हरो,
हेमंत करे तेरी आरती, हम सब करें तेरी आरती,
सबकी झोली भरो, ओम् जय श्री नामदेवा...

ओम् जय श्री नामदेवा, बाबा जय श्री नामदेवा
भक्तों के बाबा प्यारे, सबके काज़ संवारे, करें विट्ठल सेवा
ओम् जय श्री नामदेवा...